विक्रम संवत् 2081 ▪ भाद्रपद / ऑश्विन (क्वॉर) मास(07) ▪ 01 सितंबर 2024 ▪ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, मॉर्निंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

चरैवेति

हर देशवासी का संकल्प

विकसित भारत@2047

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी तिरंगा यात्रा में शामिल हुए।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की पुण्य तिथि पर श्रद्धाँजलि अर्पित की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की पुण्य तिथि पर श्रद्धाँजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने केरल के वायनाड में अस्पताल में मरीजों से हालचाल जाना।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बच्चों के साथ रक्षा बंधन का त्यौहार मनाया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का युद्धग्रस्त यूक्रेन के कीव पहुंचने पर स्वागत किया गया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लखपति दीदी सम्मेलन को सम्बोधित किया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय • संजय गोविन्द खोचे 04

- सदस्यता अभियान से विकसित भारत@2047

कवर स्टोरी • 05

- हर देशवासी का संकल्प : विकसित भारत@2047

- **सदस्यता अभियान :** 16
  - » भाजपा का सदस्यता अभियान देश का सामर्थ्य बढ़ाएगा ...
- **डबल इंजन का म.प्र. :** 20
  - » शांति का टापू हमारा प्रदेश सबसे अग्रणी राज्य बनें...
- **संगठन पर्व से राष्ट्र निर्माण :** 23
  - » विकसित भारत की संकल्प सिद्धि का अभियान - विष्णुदत्त शर्मा
- **सदस्यता अभियान :** 26
  - » कभी नहीं जीतने वाली विधानसभाओं में सदस्यता अभियान...
  - » 1.5 करोड़ नए सदस्य बनाने का संकल्प लेकर मैदान... 27
- **संयुक्त बैठक :** 28
  - » संगठन पर्व को लेकर मोर्चों एवं प्रकोष्ठों की संयुक्त बैठक...
- **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 29
  - » कदम मिलाकर चलना होगा
- **विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस :** 30
  - » विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस संवेदनाओं को मजबूत...
- **मन की बात :** 31
  - » अंतरिक्ष क्षेत्र में रिफॉर्म्स से युवाओं को फायदा
- **आलेख :** 36
  - » पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होल्कर
- **शिक्षक दिवस :** 38
  - » संपूर्ण शिक्षक बिरादरी के सम्मान का दिन है शिक्षक दिवस
- **पुण्यतिथि :** 40
  - » देश सेवा में डॉ. विश्वेश्वरैया
- **विचार प्रवाह : पं. दीनदयाल उपाध्याय** 41
  - » राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. शिव चतुर्दशी व्रत 2. कुशग्रहणी,स्ना.दा. श्रा. अमावस 3. स्ना. दा. अमावस, तान्हा पोला 4. चन्द्रदर्शन 5. बाबू दोज 6. हरितालिका तीज व्रत 7. विनायकी चतुर्थी व्रत, भ. गणेशोत्सव प्रारम्भ 8. ऋषि पंचमी 9. मोरयाई छठ 10. मुक्ताभरण, संतान सप्तमी 11. राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी 14. डोल (जलझूलनी) ब्यारस 15. वामन द्वादशी, प्रदोष व्रत 17. अनंत चतुर्दशी, व्रत पूर्णिमा, पार्थिक भ. गणेश विर्सजन 18. स्ना. दा. पूर्णिमा, पितृपक्ष प्रा. 21. गणेश चतुर्थी व्रत 24. महालक्ष्मी व्रत 25. जिऊतिया व्रत 28. इंदिरा एकादशी व्रत 30. प्रदोष व्रत, शिवचतुर्दशी व्रत

• मुख्य जयंती-दिवस

1. गुरू ग्रंथ साहिब प्रकाश दिवस, रानी अहिल्याबाई होल्कर पु. ति. 3. गोटमार मेला पांढुर्ना 5. डॉ. राधाकृष्णन ज., शिक्षक दिवस 8. विश्व साक्षरता दिवस 13. स्वामी ब्रह्मानंद लोधी निर्वाण दि. 15. इं. मोक्षगुडंम विश्वश्वैरिया जयंती 17. सद्गुरू धनीदेव परमधामवास दि. 18. गुरू अमरदास पुण्यतिथि 21. संत गणेश प्रसाद वर्णी जयंती 25. पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती 27. विश्व पर्यटन दिवस 28. लता मंगेशकर जयंती 29. विश्व हृदय दिवस

वर्ष-56, अंक : 07, भोपाल, सितंबर 2024

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

एक राष्ट्र लोगों का एक समूह होता है जो एक लक्ष्य, एक आदर्श, एक मिशन के साथ जीते हैं और एक विशेष भूभाग को अपनी मातृभूमि के रूप में देखते है। यदि आदर्श या मातृभूमि दोनों में से किसी का भी लोप हो तो एक राष्ट्र संभव नहीं हो सकता।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक
एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

•

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

•

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

29 करोड़ सदस्यता का लक्ष्य हासिल करने के लिए भाजपा संगठन को हर एक मतदाता, केंद्र सरकार की योजनाओं के हर एक हितग्राही, प्रदेश सरकार की जनहित योजनाओं के प्रत्येक हितग्राही, समान विचारधारा के प्रत्येक मतदाता, जो मतदाता हमारे साथ नहीं है उनके साथ संपर्क करके उनके प्रश्नों का तर्क पूर्ण तरीके से समुचित समाधान करके उन्हें विकसित भारत@2047 को पूरा करने की यात्रा का सहभागी बनाना पड़ेगा।

सदस्यता अभियान से विकसित भारत@2047

भारतीय जनता पार्टी का सदस्यता अभियान भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सदस्यता के नवीनीकरण के साथ प्रारंभ हो गया है। भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने प्रधानमंत्री जी को नवीन सदस्यता प्रदान की तथा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सदस्यता का नवीनीकरण किया। भाजपा की 2014-15 के सदस्यता आंकड़ों के अनुसार लगभग 11 करोड़ सदस्य बने थे। फिर 2019 में भाजपा की सदस्यता 19 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई अर्थात 5 वर्षों की उपलब्धियों के उत्साह के फलस्वरूप सदस्यता में 73 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। भाजपा में अब 2024 की सदस्यता प्रारंभ हो गई है। केंद्रीय नेतृत्व नें 10 करोड़ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है। अर्थात 29 करोड़ से अधिक सदस्यता या सदस्यों का दल भाजपा बनने जा रही है यह आश्चर्य जनक है पर सत्य है।

29 करोड़ सदस्यता का लक्ष्य हासिल करने के लिए भाजपा संगठन को हर एक मतदाता, केंद्र सरकार की योजनाओं के हर एक हितग्राही, प्रदेश सरकार की जनहित योजनाओं के प्रत्येक हितग्राही, समान विचारधारा के प्रत्येक मतदाता, जो मतदाता हमारे साथ नहीं है उनके साथ संपर्क करके उनके प्रश्नों का तर्क पूर्ण तरीके से समुचित समाधान करके उन्हें विकसित भारत@2047 को पूरा करने की यात्रा का सहभागी बनाना पड़ेगा। जो परिवार संकट के समय भाजपा या जनसंघ का झंडा उठाकर अकेले ही अपनी आवाज बुलंद करने के लिए संघर्ष करने निकल पड़ते थे, शासन के अत्याचारों के आगे हथियार नहीं डालते थे, प्रताड़ित भी होते थे, जेल भी भेज दिये जाते थे, उनकी वर्तमान पीढ़ी से संपर्क कर सदस्यता तो देनी ही है साथ ही साथ उनके परिजनों, मित्र जनों को भी साथ लेना है। जो कभी हमारे साथ चलते थे पर किसी कारणवश समय नहीं दे पाते हैं उनकी सदस्यता का नवीनीकरण करना है। इस तरह कोई भी कहीं भी छूट न जावे, सदस्यता अभियान को सदस्यता आंदोलन में परिवर्तित करना है। भाजपा संगठन परिवार का विस्तार करना है। ऊर्जावान साथियों को परिवार में लाना है। पुराने अनुभवी, तपस्वी सारथियों के अनुभवों का लाभ लेना है। कोई भी प्रयास छोड़ना नहीं है। सदस्यता अभियान के लिए किये जाने वाले सारे प्रयास देश के भविष्य को दिशा प्रदान करेंगे। सदस्यता अभियान की सफलता मोदी जी के प्रयासों को मजबूती प्रदान करेंगे। संगठन की मजबूती देश की रक्षा के लिए जरूरी ही नहीं अत्यावश्यक है। आतंकवाद, भ्रष्टाचार, परिवारवाद, जातिवाद, तुष्टीकरण व कमजोर सरकार दीमक की तरह देश को खोखला कर देती है, इससे देश को बचाना है। मजबूत संगठन से ही निर्णायक सरकार संभव है। लोकतंत्र की, संविधान की रक्षा के लिए- लोकतांत्रिक राजनैतिक दल का आधार बहुत मजबूत होना आवश्यक है। लोकतांत्रिक राजनैतिक दल ही जनता का वास्तविक प्रतिनिधित्व कर सकता है।

जनता भाजपा के साथ चलने को एकदम तैयार बैठी है। जनता को यह पूर्ण विश्वास है कि भारत का भविष्य भाजपा के हाथों में ही सुरक्षित है। और भावी पीढ़ियों को विकसित भारत, मजबूत भारत, आत्मनिर्भर भारत, सुरक्षित भारत, विश्व की अपेक्षा का केंद्र भारत, भाजपा के साथ चलने से ही बन सकता है।

राष्ट्र प्रेम व राष्ट्र भक्ति के साथ-साथ वसुधैव कुटुंबकम का पालन भाजपा ही कर सकती है। भारत को आगे ले जाने का काम भाजपा ही कर सकती है। भारत को दसों दिशाओं में सुरक्षा भाजपा ही प्रदान कर सकती है। भारत माता के वैभव की रक्षा भाजपा ही कर सकती है। भारत के स्वतंत्र विचार भाजपा के साथ ही संभव है।

विश्व बिरादरी की आंखों में आंखें डालकर बातचीत भाजपा ही कर सकती है। भारत को विश्वगुरु का दर्जा भाजपा ही दिला सकती है। भारत को सोने की चिड़िया भाजपा ही बना सकती है। विदेशों में बसे भारतीयों को भारतीय होने के गौरव का एहसास भाजपा ही करा सकती है। जब विदेशों में बसे भारतीयों को भारतीय होने के गौरव का एहसास भाजपा करा सकती है तो भारत में रह रहे भारतीयों को भारतीय होने का अंतर पिछले 10 वर्षों में समझ में आ चुका है और भारतीयों को उन्नत भविष्य का भरोसा कायम है। महिलाओं की रक्षा, सुरक्षा व भारत के महत्वपूर्ण निर्णयों में महिलाओं की हिस्सेदारी की सुरक्षा भाजपा के शासनकाल में ही संभव हुआ है। लोकसभा, विधानसभा में महिलाओं के हिस्सेदारी सुनिश्चित भाजपा ने ही की है। जनमानस को मालूम है भाजपा का एक साधारण कार्यकर्ता भी भाजपा के साथ चलकर विधायक, सांसद, प्रदेश का मंत्री, मुख्यमंत्री, भाजपा संगठन का महत्वपूर्ण पदाधिकारी,भाजपा अध्यक्ष से लेकर भाजपा सरकार में प्रधानमंत्री पद तक भी पहुंच सकता है। देश के निर्णयों में शामिल हो सकता है।

देश के भविष्य निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वाहन कर सकता है। क्योंकि भाजपा एक लोकतांत्रिक पार्टी है। यहां किसी के लिए, व्यक्ति विशेष के लिए कोई पद आरक्षित नहीं है, कितना फर्क है, भाजपा व अन्य राजनीतिक संगठनों में, जो भी व्यक्ति राष्ट्र प्रेम, मेरा राष्ट्र भारत प्रथम के सिद्धांत पर चलता होगा या चलना चाहता होगा, वह भाजपा के साथ चलने को सदैव तैयार रहेगा। चाहे सदस्य बने या ना बने। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाजपा का ही समर्थन करेगा।

भाजपा संगठन को मजबूत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा। जितना संगठन मजबूत होगा विकसित भारत की नींव उतनी ही मजबूत होगी। इस सदस्यता अभियान के उत्सव में बढ़-चढ़कर भाग लेना है। क्योंकि सदस्यता अभियान की सफलता विराट भारत के लिए जरूरी है। सदस्यता अभियान की सफलता में भावी पीढ़ियों की सफलता, सुरक्षा व समृद्धि छुपी हुई है। यह सदस्यता अभियान नहीं सदस्यता आंदोलन है, यह सदस्यता उत्सव है। इस उत्सव में अपनी-अपनी भागीदारी, अपना-अपना योगदान विचार पुंज को विकसित, प्रफुल्लित व प्रकाशमय बनायेगा। सभी नए सदस्यों का संगठन परिवार में स्वागत धारा को अविरल गति से आगे ले जावेगा। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

हर देशवासी का संकल्प
विकसित भारत@2047

15 अगस्त वो शुभ घड़ी है, जब हम देश के लिए मर-मिटने वाले, देश की आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले, आजीवन संघर्ष करने वाले, फांसी के तख्ते पर चढ़ करके भारत माँ की जय के नारे लगाने वाले अनगिनत आजादी के दीवानों को नमन करने का यह पर्व है। उनका पुण्य स्मरण करने का पर्व है। आजादी के दीवानों ने आज हमें आजादी के इस पर्व में स्वतंत्रता की सांस लेने का सौभाग्य दिया है। यह देश उनका ऋणी है। ऐसे हर महापुरूष के प्रति हम अपना श्रद्धाभाव व्यक्त करते हैं।

जो महानुभाव राष्ट्र रक्षा के लिए और राष्ट्र निर्माण के लिए पूरी लगन से, पूरी प्रतिबद्धता के साथ देश की रक्षा भी कर रहे हैं, देश को नई ऊंचाई पर ले जाने का प्रयास भी कर रहे हैं। चाहे वो हमारा किसान हो, हमारा जवान हो, हमारे

अगर 40 करोड़ गुलामी की बेड़ियों को तोड़ सकते हैं, अगर 40 करोड़ आजादी के सपने को पूर्ण कर सकते हैं, आजादी ले करके रह सकते हैं तो 140 करोड़ देश के मेरे नागरिक, 140 करोड़ मेरे परिवारजन अगर संकल्प ले करके चल पड़ते हैं...

...एक दिशा निर्धारित करके चल पड़ते हैं, कदम से कदम मिलाकर, कंधे से कंधा मिलाकर अगर चल पड़ते हैं, तो चुनौतियां कितनी भी क्यों न हों, अभाव की मात्रा कितनी ही तीव्र क्यों न हो, संसाधनों के लिए जूझने की नौबत हो तो भी, हर चुनौती को पार करते हुए हम समृद्ध भारत बना सकते हैं। हम 2047 विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

नौजवानों का हौसला हो, हमारी माता-बहनों का योगदान हो, दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो अब हम लोगों के बीच भी स्वतंत्रता के प्रति उसकी निष्ठा, लोकतंत्र के प्रति उसकी श्रद्धा यह पूरे विश्व के लिए एक प्रेरक घटना है।

इस वर्ष और पिछले कुछ वर्षों से प्राकृतिक आपदा के कारण हम सबकी चिंता बढ़ती चली जा रही है। प्राकृतिक आपदा में अनेक लोगों ने अपने परिवारजन खोये हैं, सम्पत्ति खोई है, राष्ट्र ने भी बारम्बार नुकसान भोगा है। यह देश इस संकट की घड़ी में उन सबके साथ खड़ा है।

हम जरा आजादी के पहले के वो दिन याद करें, सैकड़ों साल की गुलामी में हर कालखंड संघर्ष का रहा। युवा हो, बुजुर्ग हो, किसान हो, महिला हो, आदिवासी हो, वे गुलामी के खिलाफ जंग लड़ते रहे, अविरत जंग लड़ते रहे। इतिहास गवाह है कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम जिसको हम याद करते हैं, उसके पूर्व भी हमारे देश के कई आदिवासी क्षेत्र थे, जहां आजादी की जंग लड़ी जाती थी।

गुलामी का इतना लम्बा कालखंड, जुल्मी शासक, अपरंपार यातनाएं, सामान्य से सामान्य मानवीयों का विश्वास तोड़ने की हर तरकीबें, उसके बावजूद भी, उस समय की जनसंख्या के हिसाब से करीब 40 करोड़ देशवासी, आजादी के पूर्व 40 करोड़ देशवासियों ने वो जज्बा दिखाया, वो सामर्थ्य दिखाया, एक सपना ले करके चले, एक संकल्प ले करके चलते रहे, जूझते रहे, एक ही स्वर था **'वंदे मातरम्',** एक ही सपना था भारत की आजादी का। 40 करोड़ देशवासियों ने, और हमें गर्व है की हमारी रगों में उन्हीं का खून है। वो हमारे पूर्वज थे, सिर्फ 40 करोड़। 40 करोड़ लोगों ने दुनिया की महा सत्ता को उखाड़ करके फेंक दिया था, गुलामी की जंजीरों को तोड़ दिया था। अगर हमारे पूर्वज, जिनका खून हमारी रगों में है, आज हम तो 140 करोड़ हैं। अगर 40 करोड़ गुलामी की बेड़ियों को तोड़ सकते हैं, अगर 40 करोड़ आजादी के सपने को पूर्ण कर सकते हैं, आजादी ले करके रह सकते हैं तो 140 करोड़ देश के मेरे नागरिक, 140 करोड़ मेरे परिवारजन अगर संकल्प ले करके चल पड़ते हैं, एक दिशा निर्धारित करके चल पड़ते हैं, कदम से कदम मिलाकर, कंधे से कंधा मिलाकर अगर चल पड़ते हैं, तो चुनौतियां कितनी भी क्यों न हों, अभाव की मात्रा कितनी ही तीव्र क्यों न हो, संसाधनों के लिए जूझने की नौबत हो तो भी, हर चुनौती को पार करते हुए हम समृद्ध भारत बना सकते हैं। हम 2047 विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। अगर 40 करोड़ देशवासी अपने पुरुषार्थ से, अपने समर्पण से, अपने त्याग से, अपने बलिदान से आजादी दे सकते हैं, आजाद भारत बना सकते हैं तो 140 करोड़ देशवासी उसी भाव से समृद्ध भारत भी बना सकते हैं।

एक समय था जब लोग देश के लिए मरने के लिए प्रतिबद्ध थे और आजादी मिली। आज ये समय है देश के लिए जीने की प्रतिबद्धता का। अगर देश के लिए मरने की प्रतिबद्धता आजादी दिला सकती है तो देश के लिए जीने की प्रतिबद्धता समृद्ध भारत भी बना सकती है।

विकसित भारत 2047, ये सिर्फ भाषण के शब्द नहीं हैं, इसके पीछे कठोर परिश्रम चल रहा है। देश के कोटि-कोटि जनों के सुझाव लिए जा रहे हैं और हमने देशवासियों से सुझाव मांगे। मुझे प्रसन्नता है कि मेरे देश के करोड़ों नागरिकों ने विकसित भारत 2047 के लिए अनगिनत सुझाव दिए हैं। हर देशवासी का सपना उसमें प्रतिबिंबित हो रहा है। हर देशवासी का संकल्प उसमें झलकता है। युवा हो, बुजुर्ग हो, गांव के लोग हों, किसान हों, दलित हों, आदिवासी हों, पहाड़ों में रहे वाले लोग हों, जंगल में रहने वाले लोग हों, शहरों में रहने वाले लोग हों, हर किसी ने 2047 में जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, तब तक विकसित भारत के लिए अनमोल सुझाव दिए हैं।

और मैं जब इन सुझावों को देखता था, मेरा मन प्रसन्न हो रहा था, उन्होंने क्या लिखा, कुछ लोगों ने दुनिया का स्किल कैपिटल बनाने का सुझाव हमारे सामने रखा। 2047 विकसित भारत के लिए कुछ लोगों ने भारत को मैन्युफैक्चरिंग का ग्लोबल हब बनाने का सुझाव दिया। कुछ लोगों ने भारत की हमारी यूनिवर्सिटीज ग्लोबल बने इसके लिए सुझाव दिया। कुछ लोगों ने ये भी कहा कि क्या आजादी के इतने सालों के बाद हमारा मीडिया ग्लोबल नहीं होना चाहिए। कुछ लोगों ने ये भी कहा कि हमारा स्किल्ड युवा विश्व की पहली पसंद बनना चाहिए। कुछ लोगों ने सुझाव दिया भारत को जल्द से जल्द जीवन के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना चाहिए।

कई लोगों ने सुझाव दिया कि हमारे किसान जो मोटा अनाज पैदा करते हैं, जिसको हम श्रीअन्न कहते हैं, उस सुपर फूड को दुनिया के हर डाइनिंग टेबल पर पहुंचाना है। हमें विश्व के पोषण को भी बल देना है और भारत के छोटे किसानों को भी मजबूती देनी है। कई लोगों ने सुझाव दिया कि देश में स्थानीय स्वराज की संस्थाओं से लेकर के अनेक इकाईयां हैं, उन सबमें गवर्नेंस के रिफॉर्मस की बहुत जरुरत है। कई लोगों ने लिखा कि न्याय के अंदर जो विलंब हो रहा है, उसके प्रति चिंता जाहिर की और ये भी कहा कि हमारे देश में न्याय व्यवस्था में रिफॉर्मस की बहुत बड़ी जरुरत है। कई लोगों ने लिखा कि कई ग्रीन फील्ड सिटिज बनाने की अब समय की मांग है। किसी ने बढ़ती हुई प्राकृतिक आपदाओं के बीच शासन-प्रशासन में कैपेसिटी बिल्डिंग के लिए एक अभियान चलाने का सुझाव दिया।

बहुत सारे लोगों ने ये सपना भी देखा है कि अंतरिक्ष में भारत का स्पेस स्टेशन जल्द से जल्द बनना चाहिए। किसी ने कहा भारत की जो पारंपरिक ट्रेडिशनल मेडिसिन है, हमारी औषधि है, दुनिया जब आज हॉलिस्टिक हेल्थकेयर की तरफ जा रही है, तब हमें भारत की पारंपरिक औषधियाँ और वेलनेस हब के रूप में भारत को विकसित करना चाहिए। कोई कहता है कि अब देर नहीं होनी चाहिए, भारत अब जल्द से जल्द दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बनना चाहिए।

मैं इसलिए पढ़ रहा था कि ये मेरे देशवासियों ने ये सुझाव दिए हैं। मेरे देश के सामान्य नागरिकों ने ये सुझाव हमें दिए हैं। मैं समझता हूं कि जब देशवासियों की इतनी विशाल सोच हो, देशवासियों के इतने बड़े सपने हो, देशवासियों की इन बातों में जब संकल्प झलकते हों, तब हमारे भीतर एक नया संकल्प दृढ़ बन जाता है। हमारे मन में आत्मविश्वास नई ऊंचाई पर पहुंच जाता है, देशवासियों का ये भरोसा सिर्फ कोई intellectual debate नहीं है, ये भरोसा अनुभव से निकला हुआ है। ये विश्वास लंबे कालखंड के परिश्रम की पैदावार है और इसलिए देश का सामान्य मानवीय याद करता है जब लाल किले से कहा जाता है कि हिन्दुस्तान के 18 हजार गांवों में समय सीमा में बिजली पहुंचाएंगे और वो काम हो जाता है, तब भरोसा मजबूत हो जाता है। जब ये तय होता है कि आजादी के इतने सालों के बाद भी ढाई करोड़ परिवार ऐसे हैं, जहां बिजली नहीं है, वो अंधेरे में जिंदगी गुजारते हैं, ढाई करोड़ घरों में बिजली पहुंच जाती है। तब सामान्य मानवीय का भरोसा बढ़ जाता है। जब स्वच्छ भारत की बात कही जाए तभी देश के अग्रिम घरों के पंक्ति में बैठे हुए लोग हों, गांव के लोग हों, गरीब बस्ती में रहने वाले लोग हों, छोटे-छोटे बच्चे हों, हर परिवार के अंदर स्वच्छता का वातावरण बन जाए, स्वच्छता की चर्चा हो, स्वच्छता के संबंध में एक दूसरे को रोकने, टोकने का निरंतर प्रयास चलता रहे, मैं समझता हूं कि ये भारत के अंदर आई हुई नई चेतना का प्रतिबिंब है।

जब देश के सामने लालकिले से कहा जाए कि आज हमारे परिवारों में तीन करोड़ परिवार ऐसे हैं जिनके घर में नल से जल मिलता है। आवश्यक है हमारे इन परिवारों को पीने का शुद्ध पानी पहुंचे । जल जीवन मिशन के तहत इतने कम समय में नए 12 करोड़ परिवारों को जल जीवन मिशन के तहत नल से जल पहुंच रहा है। आज 15 करोड़ परिवार इसके लाभार्थी बन चुके हैं। हमारे कौन लोग वंचित थे इन व्यवस्थाओं से? कौन पीछे रह गए थे? समाज के अग्रिम पंक्ति के लोग इसके लिए अभाव में नहीं जीते थे। मेरे दलित, मेरे पीड़ित, मेरे शोषित, मेरे आदिवासी भाई-बहन, मेरे गरीब भाई-बहन, मेरे झुग्गी-झोपड़ी में जिंदगी गुजारने वाले लोग, वही तो इन चीजों के अभाव में जी रहे थे। हमने अनेक ऐसे प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो प्रयास किया और उसका परिणाम हमारे इन सारे समाज के बंधुओं को मिला है।

हमने वोकल फॉर लोकल का मंत्र दिया। आज मुझे खुशी है कि वोकल फॉर लोकल ने अर्थतंत्र के लिए एक नया मंत्र बन गया है। हर डिस्ट्रिक्ट अपनी पैदावर के लिए गर्व करने लगा है। One district One Product का माहौल बना है। अब One District One Product को One District का One Product export कैसे हो उस दिशा में हर जिले सोचने लगे हैं। Renewable energy का संकल्प लिया था। जी-20 समूह के देशों ने जितना किया है उससे ज्यादा भारत ने किया है। और भारत ने ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए, global warming की चिंताओं से मुक्ति पाने के लिए हमने काम किया है।

देश गर्व करता है आज जब fintech की सफलताओं को लेकर पूरा विश्व भारत से कुछ सीखना समझना चाहता है। तब हमारा गर्व और बढ़ जाता है।

हम कैसे भूल सकते हैं कोरोना के वो संकट काल। विश्व में सबसे तेज गति से करोड़ों लोगों को vaccination का काम हमारे इसी देश में हुआ। जब देश की सेना Surgical Strike करती है, जब देश की सेना Air Strike करती है तो उस देश के नौजवानों का सीना ऊंचा हो जाता है, तन जाता है, गर्व से भर जाता है। और यही बातें हैं जो आज 140 करोड़ देशवासियों का मन गर्व से भरा हुआ है, आत्मविश्वास से भरा हुआ है।

इन सारी बातों के लिए एक सुविचारित प्रयास हुआ है। रिफार्म की परंपरा को सामर्थ्य दिया गया है। नक्तर तरीकों को लेकर के और जब राजनीतिक नेतृत्व की संकल्प शक्ति हो, दृढ़ विश्वास हो, जब सरकारी मशीनरी उसको लागू करने के लिए समर्पण भाव से जुट जाती है और जब देश के हर नागरिक उस सपने को पूरा करने के लिए जनभागीदारी करने के लिए, जनआंदोलन बनाने के लिए आगे आता है। तब हमें निश्चित परिणाम मिलता ही रहता है।

हम ये न भूलें कि इस देश ने उन परिस्थितियों से दशकों तक भी आजादी के बाद समय बिताया है। जब होती है, चलती है, अरे यार ये तो चलेगा, अरे हमें क्या मेहनत करने की जरूरत है, अरे मामला है अगली पीढ़ी देखेगी, हमको मौका मिला है यार मौज कर लो। आगे वाला आगे का जाने हमें क्या करना है, हम अपना समय निकाल दें। अरे नया करने जाओगे कोई बवाल उठ जाए। पता नहीं क्यों देश में एक Status quo का माहौल बन गया था। जो है उसी से गुजारा कर लो यही का माहौल बन गया था। और लोग तो कहते अरे भई छोड़ो अब कुछ होने वाला नहीं है। चलो ऐसा ही मन बन गया था।

हमें इस मानसिकता को तोड़ना था, हमें विश्वास से भरना था और हमने उस दिशा में प्रयास किया। कई लोग तो कहते थे अरे भई अगली पीढ़ी के लिए काम हम अभी से क्यों करें, हम तो आज का देखें। लेकिन देश का सामान्य नागरिक ये नहीं चाहता था, वो बदलाव के इंतजार में था, वो बदलाव चाहता था, उसकी ललक थी। लेकिन उसके सपने को किसी ने तवज्जों नहीं दी, उसकी आशा, आकांक्षाओं, अपेक्षाओं को तवज्जो नहीं दी गई। और उसके कारण वो मुसीबतों को झेलते हुए गुजारा करता रहा। वो reforms का इंतजार करता रहा। हमें जिम्मेदारी दी गई और हमने बड़े reforms जमीन पर उतारे।

गरीब हो, मिडिल क्लास हो, हमारे वंचित लोग हों, हमारी बढ़ती जाती शहरी आबादी हो, हमारे नौजवानों के सपने हो, संकल्प हो, आकांक्षाएं हो, उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए reforms का मार्ग हमने चुना। और मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूं, reforms के प्रति हमारी जो प्रतिबद्धता है वो pink paper के editorial के लिए सीमित नहीं है। हमारे reforms की ये प्रतिबद्धता है वो चार दिन की वाहावाही के लिए नहीं है। हमारी reforms की प्रक्रिया किसी मजबूरी में नहीं है, देश को मजबूती देने के इरादे से है। और इसलिए मैं आज कह सकता हूं reforms का हमारा मार्ग एक प्रकार से growth की blueprint बनी हुई है। ये हमारा reform ये growth, ये बदलाव ये सिर्फ debate club के लिए intellectual society के लिए expert लोगों के लिए सिर्फ चर्चा का विषय नहीं है।

हमने राजनीतिक मजबूरी के कारण नहीं किया है। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वो राजनीति का भाग और गुणा करके नहीं सोचते हैं, हमारा एक ही संकल्प होता है- Nation First, Nation First, राष्ट्रहित सुप्रीम। ये मेरा भारत महान बने इसी संकल्प को लेकर के हम कदम उठाते हैं।

जब reforms की बात आती है, एक लंबा परिवेश है, अगर मैं उसकी चर्चा में चला जाऊंगा तो शायद घंटों निकल जाएंगे। लेकिन मैं एक छोटा सा उदाहरण देना चाहता हूं। बैंकिंग क्षेत्र में जो reform हुआ। आप सोचिए- बैंकिंग क्षेत्र का क्या हाल था, ना विकास होता था, ना विस्तार होता था, ना विश्वास बढ़ता था। इतना ही नहीं जिस प्रकार के कारनामें चले उसके कारण हमारे बैंक संकटों से गुजर रहे थे। हमने बैंकिंग सेक्टर को मजबूत बनाने के लिए अनेकविद रिफॉर्म्स किए। और आज उसके कारण हमारे बैंक विश्व में जो गिने चुने मजबूत बैंक हैं उसमें भारत के बैंकों ने अपना स्थान बनाया है। और जब बैंक मजबूत होती है ना तब formal economy की ताकत भी बढ़ती है। जब बैंक व्यवस्था बन जाती है, जब सामान्य गरीब खासकर के मध्यम वर्गीय परिवार की जो requirement होती हैं, उसको पूरा करने की सबसे बड़ी ताकत बैंकिंग सेक्टर में होती है। अगर उसको होम लोन चाहिए,

उसको व्हीकल का लोन चाहिए, मेरे किसान को ट्रैक्टर के लिए लोन चाहिए, मेरे नौजवानों को स्टार्ट अप्स के लिए लोन चाहिए, मेरे नौजवानों को कभी पढ़ने के लिए, education के लिए लोन चाहिए, किसी को विदेश जाने के लिए लोन चाहिए। ये सारी बातें उससे संभव होती है।

मुझे तो खुशी है कि मेरे पशुपालक भी, मेरे मछली पालन करने वाले भाई-बहन भी आज बैंकों से लाभ ले रहे हैं। मुझे खुशी है मेरे रेहड़ी-पटरी वाले लाखों भाई-बहन आज बैंक के साथ जुड़कर के अपनी नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर रहे हैं और विकास की दिशा में वो भागीदार बन रहे हैं। हमारे MSMEs, हमारे लघु उद्योग के लिए तो बैंक सबसे बड़ी सहायक होती है। उसको रोजमर्रा पैसों की जरूरत होती है, अपने नित्य मर्जी प्रगति के लिए और वो काम हमारी मजबूत बैंकों के कारण आज संभव हुआ है।

दुर्भाग्य से हमारे देश में आजादी तो मिली, लेकिन लोगों को एक प्रकार से माई-बाप culture से गुजरना पड़ा। सरकार के पास मांगते रहो, सरकार के आगे हाथ फैलाते रहो, किसी की सिफारिश के लिए रास्ते खोजते रहो, वो ही culture develop हुआ था। आज हमने गवर्नेंस के उस model को बदला है। आज सरकार खुद लाभार्थी के पास जाती है, आज सरकार खुद उसके घर गैस का चूल्हा पहुंचाती है, आज सरकार खुद उसके घर पानी पहुंचाती है, आज सरकार खुद उसके घर बिजली पहुंचाती है, आज सरकार खुद उसको आर्थिक मदद दे करके विकास के नये आयामों को तय करने के लिए प्रेरित करती है, प्रोत्साहित करती है, आज सरकार खुद नौजवान के skill development के लिए अनेक कदम उठा रही है।

बड़े reforms के लिए हमारी सरकार बहुत ही प्रतिबद्ध है और हम इसी के द्वारा देश में प्रगति की राह को चुनना चाहते हैं।

देश में नई व्यवस्थाएं बन रही हैं। देश को आगे ले जाने के लिए अनेक वित्त नीतियों को, अनेक वित्त पॉलिसीस को निरंतर बनाया जाए और नए सिस्टम पर देश का भरोसा भी बढ़ता रहता है, निरंतर बढ़ता रहता है। आज जो 20-25 साल का नौजवान है, जो 10 साल पहले जब 12-15 साल की उम्र का नौजवान था, उसने अपनी आंखों के सामने यह बदलाव देखा है। 10 साल के भीतर-भीतर उसके सपनों को आकार मिला है, धार मिली है और उसके आत्मविश्वास में एक नई चेतना जगी है और वही देश के एक नये सामर्थ्य के रूप में उभर रहा है। आज विश्वभर में भारत की साख बढ़ी है, भारत के प्रति देखने का नजरिया बदला है।

आज विश्व में युवाओं के लिए संभावनाओं के द्वार खुले हैं। रोजगार के अनगिनत नये अवसर, आजादी के इतने सालों के बाद भी नहीं आए थे, वो आज उनके दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। संभावनाएं बढ़ती गई हैं। नये मौके बन रहे हैं। मेरे देश के युवाओं को अब धीरे-धीरे चलने का इरादा नहीं है। मेरे देश का नौजवान incremental प्रगति में विश्वास नहीं करता। मेरा देश का नौजवान छलांग मारने के मूड में है। वो छलांग मार करके नई सिद्धियों को प्राप्त करने के मूड में है। मैं कहना चाहूंगा भारत के लिए Golden Era है। वैश्विक परिस्थितियों की तुलना में भी देखें यह Golden Era है, यह हमारा स्वर्णिम कालखंड है।

यह अवसर हमें जाने नहीं देना, यह मौका हमें जाने नहीं देना चाहिए और इसी मौके को पकड़ करके अपने सपने और संकल्पों को ले करके चल पड़ेंगे तो हम देश की स्वर्णिम भारत की जो अपेक्षा और हमें विकसित भारत का 2047 का लक्ष्य हम पूरा करके रहेंगे। हम सदियों की बेड़ियों को तोड़ करके निकले हैं।

आज Tourism का क्षेत्र हो, MSMEs का क्षेत्र हो, Education हो, Health sector हो, Transport sector हो, खेती और किसानी का सेक्टर हो, हर सेक्टर में एक नया आधुनिक सिस्टम बन रहा है। हम विश्व की best practices को भी आगे रखते हुए हम हमारे देश की परिस्थितियों के अनुसार आगे बढ़ना चाहते हैं। हर सेक्टर में आधुनिकता की जरूरत है, नयेपन की जरूरत है। टेक्नोलॉजी को जोड़ने की जरूरत है। और हर सेक्टर में हमारी नई नीतियों के कारण इन सारे क्षेत्रों में एक नया support मिल रहा है, नयी ताकत मिल रही है। हमारे सारे अवरोध हटे, हमारी मंदी से दूर हो, हम पूरे सामर्थ्य के साथ चल पड़े, खिल उठे, सपनों को पा करके रहे, सिद्धि को हम अपने निकट देखें, हम आत्मसात करें उस दिशा में हमने चलना हैं। अब आप देखिए, कितना बड़ा बदलाव आ रहा है।

मैं एकदम जमीनी स्तर की बात कर रहा हूं, women self help group, आज दस साल में हमारी 10 करोड़ बहनें women self help group में जुड़ी हैं, 10 करोड़ नई बहनें। हमें गर्व हो रहा है कि हमारे सामान्य परिवार की गांव की 10 करोड़ महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं और जब महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं तब परिवार की निर्णय प्रक्रिया की हिस्सेदार बनती हैं, एक बहुत बड़े सामाजिक परिवर्तन की गारंटी ले करके आती हैं।

मुझे गर्व है इस बात पर, लेकिन साथ-साथ मुझे गर्व इस बात का भी है कि हमारे C.E.O.आज दुनिया भर के अंदर अपनी धाक जमा रहे हैं। भारत के हमारे C.E.O. विश्व भर में अपनी धाक जमा रहे हैं। हमारे लिए खुशी की बात है कि एक तरफ मेरे C.E.O. दुनिया भर में नाम कमा रहे हैं, भारत का नाम बना रहे हैं तो दूसरी तरफ women self help groups से एक करोड़ मेरी सामान्य परिवार की माताएं-बहनें लखपति दीदी बनती हैं, मेरे लिए ये भी उतनी ही गर्व की बात है। अब हमने self help group को 10 लाख रुपये से 20 लाख रुपये देने का निर्णय किया है। अब तक 9 लाख करोड़ रुपये बैंकों के माध्यम से हमारे इन women self help groups को मिले हैं और जिसकी मदद से वो अपने अनेकविद् कामों को बढ़ा रहे हैं।

मेरे नौजवान इस तरफ ध्यान दें, स्पेस सेक्टर एक फ्यूचर है, हमारे साथ जुड़ा हुआ, एक महत्वपूर्ण पहलू हैं, हम उस पर भी बल दे रहे हैं। हमने स्पेस सेक्टर में बहुत reform किए हैं। जिन बंधनों में स्पेस सेक्टर को बांध कर रखा था, उसे हमने खोल दिया है। आज सैंकड़ों Startups स्पेस के सेक्टर में आ रहे हैं। Vibrant बनता जाता हमारा स्पेस सेक्टर भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने का एक महत्वपूर्ण अंग है। और हम इसको दूर की सोच के साथ मजबूती दे रहे हैं। आज प्राइवेट सेटेलाइट्स, प्राइवेट रॉकेट लान्च हो रहे हैं, ये गर्व की बात है। आज मैं कह सकता हूं जब नीति सही होती है, नीयत सही होती है और पूर्ण समर्पण से राष्ट्र का कल्याण यही मंत्र होता है तो निश्चित परिणाम हम प्राप्त करके रहते हैं।

आज देश में नए अवसर बनें, तब मैं कह सकता हूं दो चीजें और हों, जिसने विकास को एक गति दी है, विकास को एक नई छलांग दी है और ये है- पहला है आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण। हमने इंफ्रास्ट्रक्चर को आधुनिक बनाने की दिशा में बहुत बड़े कदम उठाए हैं। और दूसरी तरफ सामान्य मानवी के जीवन में जो बाधाएं हैं, Ease of living का हमारा जो सपना है, उस पर भी हमने उतना ही बल दिया है।

पिछले एक दशक में अभूतपूर्व इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास हुआ है। रेल हो, रोड हो, एयरपोर्ट हो, पोर्ट हो, broadband connectivity हो, गांव-गांव नए स्कूल बनाने की बात हो, जंगलों में स्कूल बनाने की बात हो, दूर-सुदूर इलाकों में अस्पताल बनाने की बात हो, आरोग्य मंदिर बनाने की बात हो, मेडिकल कॉलेजों का काम हो, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का निर्माण चलता हो, 60 हजार से ज्यादा अमृत सरोवर बने हों, दो लाख पंचायतों तक Optical fiber network पहुंचा हो, नहरों का एक बहुत बड़ा जाल बिछाया जा रहा हो, चार करोड़ पक्के घर बनना, गरीबों को एक नया आश्रय मिलना, तीन करोड़ नए घर बनाने के संकल्प के साथ आगे

बढ़ने की हमारी कोशिश हो। हमारा पूर्वी भारत-नॉर्थ ईस्ट उसका इलाका आज इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए जाना जाने लगा है और हमने ये जो कायाकल्प किया है, उसका सबसे बड़ा लाभ समाज के उन वर्गों तक हम पहुंचे हैं, जब ग्रामीण सड़कें वहां बनी हैं, जिनकी तरफ कोई देखता नहीं था, जिन इलाकों को नहीं देखता था, जिन गांवों को नहीं देखता था। दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, पिछड़े हों, आदिवासी हों, जंगल में रहने वाले हों, दूर-सदूर पहाड़ों में रहने वाले हों, सीमावर्ती स्थान पर रहने वाले हों, हमने उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की है।

हमारे मछुआरे भाई-बहनों की आवश्यकताओं को पूरा करना, हमारे पशुपालकों के जीवन को बदलना, एक प्रकार से सर्वांगीण विकास का प्रयास हमारी नीतियों में रहा, हमारी नियत में रहा है, हमारे Reforms में रहा है, हमारे कार्यक्रमों में रहा है, हमारी कार्यशैली में रहा है। हमारे मछुवारों भाई बहनों की आवश्यकताओं को पूरा करना, हमारे पशुपालकों के जीवन को बदलना, एक प्रकार से सर्वांगीण विकास का प्रयास, हमारी नीतियों में रहा, हमारी नियत में रहा है, हमारे रिफॉर्म में रहा है, हमारे कार्यक्रमों में रहा है, हमारी कार्यशैली में रहा है। और उन सबसे, सबसे बड़ा लाभ मेरे युवाओं को मिलता है। उनको नए-नए अवसर मिलते हैं, नए-नए क्षेत्र में कदम रखने का उसके लिए संभावनाएं बन जाती है और वही तो सबसे ज्यादा रोजगार दे रहा है और सबसे ज्यादा रोजगार प्राप्त करने का अवसर इन्हीं समय में उनको मिला है।

हमारा जो मध्यम वर्गीय परिवार है, मध्यम वर्गीय परिवार को Quality of Life, वो स्वाभाविक उसकी अपेक्षा रहती है। वो देश के लिए बहुत देता है, तो देश का भी दायित्व है कि उसकी जो Quality of Life में उसकी जो अपेक्षाएं हैं, सरकार की कठिनाईयों से मुक्ति की उसकी जो अपेक्षाएं हैं उसको पूर्ण करने के लिए हम निरंतर प्रयास करते हैं और मैंने तो सपना देखा है कि 2047 जब विकसित भारत का सपना होगा, तो उसकी एक इकाई ये भी होगी कि सामान्य मानवीय के जीवन में सरकार की दखलें कम हों। जहां सरकार की जरुरत हो वहां आभाव न हो और जहां सरकार की देर के कारण प्रभाव भी न हो, इस प्रकार की व्यवस्था पर हम प्रतिबंधित हैं।

हम छोटी-छोटी जरुरतों पर भी ध्यान देते हैं। हम छोटी-छोटी आवश्यकताओं पर ध्यान देते हैं और उसको लेकर के हम चलते हैं। चाहे हमारे गरीब के घर का चूल्हा जलता रहे, गरीब की मां कभी आंसू पी करके सोना न पड़े और इसके लिए मुफ्त इलाज की योजना हमारी चल रही है। बिजली, पानी, गैस, अब सैच्यूरेशन के मोड पर हैं और जब हम सैच्यूरेशन की बात करते हैं तो शत-प्रतिशत होता है। जब सैच्यूरेशन होता है, तो उसको जातिवाद का रंग नहीं लगता है। जब सैच्यूरेशन होता है, तो उसमें वामपंथिकता का रंग नहीं लगता है। जब सैच्यूरेशन का मंत्र होता है, तब सच्चे अर्थ में सबका साथ, सबका विकास का मंत्र साकार होता है।

लोगों के जीवन में सरकार की दखल कम हो, उस दिशा में हमने, हजारों compliances के लिए सरकार सामान्य मानवीय पर बोझ डालती थी, हमने देशवासियों के लिए डेढ़ हजार से ज्यादा कानूनों को खत्म कर दिया ताकि कानूनों के जंजाल के अंदर देशवासियों को फंसना न पड़े। हमने छोटी-छोटी गलतियों के कारण ऐसे कानून बने थे, उनको जेल में अंदर ढकेल दिया जाए। हमने उन छोटे-छोटे कारणों से जेल जाने की जो परंपराएं थीं, उन सारे कानूनों को नष्ट कर दिया और उसको कानूनों को जेल भेजने के प्रावधान को व्यवस्था से बाहर कर दिया है। आज हमने जो आजादी के विरासत के गर्व की जो हम बात करते हैं, सदियों से हमारे पास जो क्रिमिनल लॉ थे, आज हमने उसको नए क्रिमिनल लॉ जिसको हमने न्याय संहिता के रूप में और जिसके मूल में दंड नहीं तो नागरिक को न्याय इस भाव को हमने प्रबल बनाया है।

Ease of Living बनाने में देशव्यापी मिशन में हम काम कर रहे हैं। हर लेवल पर मैं सरकार के प्रति इन चीजों का आह्वान करता हूं। मैं जन-प्रतिनिधि वो किसी भी दल के क्यों न हो, किसी भी राज्य के क्यों न हो सबसे आग्रह करता हूं कि हमने एक मिशन मोड में Ease of Living के लिए कदम उठाने चाहिए। मैं हमारे युवाओं को, Ease of Living को, सबको मैं कहना चाहता हूं, आप अपने स्थान पर जहां पर आपको छोटी-छोटी दिक्कतें होती हैं आप उसको Professionals को लेकर के सरकार को चिट्ठी लिखते रहिए। सरकार को बताइए कि बिना कारण की कठिनाई आए, उसको दूर करने से कोई नुकसान नहीं है, मैं पक्का मानता हूं आज सरकारें संवेदनशील हैं। हर सरकार, स्थानीय स्वराज की सरकार होगी या राज्य सरकार होगी या केंद्र सरकार होगी, उसको तवज्जों देगी।

Governance में Reforms, ये हमें विकसित भारत @2047 के सपने के लिए हमने उसको जोर लगाकर के आगे बढ़ाना होगा ताकि सामान्य मानवीय के जीवन में अवसर ही अवसर पैदा हों, रुकावटें खत्म ही खत्म होती चली जाएं। नागरिकों को Dignity of Citizen, नागरिकों के जीवन में सम्मान मिलें, डिलिवरी के संबंध में

कभी किसी को ये कहने की नौबत न आए कि ये तो मेरा हक था कि मुझे मिला नहीं, उसको खोजना न पड़े, सरकार के Governance में Delivery System को और मजबूती चाहिए।

आप देखिए देश में जब हम रिफॉर्म की बात करते हैं। आज देश में करीब-करीब तीन लाख संस्थाएं काम कर रही हैं। चाहे पंचायत हो, नगर पंचायत हो, नगर पालिका हो, महानगर पालिका हो, UT हो, State हो, District हो, केंद्र हो, छोटी-मोटी तीन लाख करीब-करीब इकाइयां हैं। अगर ये हमारे तीन लाख इकाईयों को मैं आज आह्वान करता हूं कि अगर आप साल में अपने स्तर पर जिन चीजों की जरूरत है सामान्य मानवीय के लिए, दो रिफार्म करें, ज्यादा नहीं कह रहा हूं मेरे साथियों। एक पंचायत हो, एक राज्य सरकार हो, कोई विभाग हो, सिर्फ एक साल में दो रिफार्म और उसको जमीन पर उतारें। आप देखिए हम देखते ही देखते एक साल में करीब-करीब 25-30 लाख रिफार्म कर सकते हैं। जब 25-30 लाख रिफार्म हो जाएं तब सामान्य मानवीय का विश्वास कितना बढ़ जाएगा। उसकी शक्ति राष्ट्र को नई ऊंचाई पर ले जाने में कितनी काम आएगी और इसलिए हम अपने स्तर पर होती है, चलती से मुक्ति पाकर के बदलावों के लिए आगे आएं, हिम्मत के साथ आगे आएं और सामान्य मानवीय की जरूरत तो छोटी-छोटी जरूरत होती है, पंचायत लेवल पर भी वो मुसीबतें झेल रहा है। उन मुसीबतों से मुक्ति दिलाएं तो मुझे पक्का विश्वास है कि हम सपनों को पार कर सकते हैं।

आज देश आकांक्षाओं से भरा हुआ है। हमारे देश का नौजवान नई सिद्धियों को चूमना चाहता है। नए-नए शिखरों पर वो कदम रखना चाहता है। और इसलिए हमारी कोशिश है हर सेक्टर में कार्य को हम गति दें, तेज गति दें और उसके द्वारा पहले हम हर सेक्टर में नए अवसर पैदा करें। दूसरा ये बदलती हुई व्यवस्थाओं के लिए ये जो supportive infrastructure चाहिए। उन infrastructure पर हम बदलाव के मजबूती देने की दिशा में काम करें। और तीसरी बात है नागरिकों की मूलभूत सुविधाओं के विषय में हम प्राथमिकता दें, उसको बल दें। इन तीनों ने भारत में एक Aspirational Society का निर्माण किया है और उसके परिणाम स्वरूप आज समाज खुद एक विश्वास से भरा हुआ है। हमारे देशवासियों की आकांक्षाएं उनके aspirations, हमारे नौजवानों की ऊर्जा, हमारे देश के सामर्थ्य के साथ जोड़कर के, हम आगे बढ़ने के, एक ललक लेकर के चल रहे हैं।

मुझे विश्वास है रोजगार और स्वरोजगार नए रिकॉर्ड के अवसर पर हमने काम किया है। प्रति व्यक्ति आज आय दोगुनी करने में हम सफल हुए हैं। Global growth में भारत का योगदान बड़ा है। भारत का एक्सपोर्ट लगातार बढ़ रहा है। विदेशी मुद्रा भंडार लगातार बढ़ा हुआ है, पहले से दोगुना पहुंचा है। ग्लोबल संस्थानों का भारत के प्रति भरोसा बढ़ा है। मुझे विश्वास है भारत की दिशा सही है, भारत की गति तेज है और भारत के सपनों में सामर्थ्य है। लेकिन इन सबके साथ संवेदनशीलता का हमारा मार्ग हमारे लिए ऊर्जा में एक नई चेतना भरता है। ममभाव हमारे कार्य की शैली है। समभाव भी चाहिए और ममभाव भी चाहिए, उसको लेकर के हम चल रहे हैं।

मैं जब कोरोनाकाल को याद करता हूं। कोरोना की वैश्विक महामारी के बीच सबसे तेजी से इकोनॉमी को बेहतर बनाने वाला कोई देश है तो वो देश भारत है। तब लगता है कि हमारी दिशा सही है। जब जात पात मत पंथ से ऊपर उठकर हर घर तिरंगा फहराया जाता है, तब लगता है कि देश की दिशा सही है। आज पूरा देश तिरंगा है, हर घर तिरंगा है, न कोई जात है, न कोई पात है, न कोई ऊंच है, न कोई नीच है, सभी भारतीय हैं। यही तो हमारी दिशा की ताकत है। जब हम 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालते हैं तब हमारा विश्वास पक्का हो जाता है कि हमने गति को बराबर maintain किया है और सपनों को साकार करना अब दूर नहीं है।

जब 100 से अधिक आकांक्षी जिले अपने-अपने राज्य के अच्छे जिलों की स्पर्धा कर रहे हैं, बराबरी करने लगे हैं तो हमें लगता है कि हमारी दिशा और गति दोनों सामर्थ्यवान हैं। जब हमारे उन आदिवासी साथियों को वो मदद मिलती है, पीएम जन-मन के द्वारा उनको जो योजनाएं पहुंची थी, आबादी बहुत छोटी है। लेकिन बहुत से दूर-सुदूर इलाकों में छुट-पुट, छुट-पुट, परिवार रहते हैं, हमने उनको खोजकर निकाला हैं, उनके लिए चिंता की है। तब लगता है कि संवेदनशीलता से जब काम करते हैं तब संतोष कितना मिलता है। Working women के लिए paid maternity leave 12 हफ्ते से बढ़ाकर के 26 हफ्ते कर देते हैं। तब सिर्फ नारी सम्मान ही करते हैं इतना नहीं है, नारी के प्रति संवेदनशील भाव से निर्णय करते इतना ही नहीं। लेकिन उसकी गोद में जो बच्चा पला है ना उसको एक उत्तम नागरिक बनाने के लिए मां की जो जरूरत है उसमें सरकार रूकावट न बने इस संवेदनशील भावना से उस निर्णय को हम करते हैं।

जब मेरे दिव्यांग भाई-बहन भारतीय sign language की बात हो, या तो सुगम्य भारत का अभियान हो, उसको लगता है कि अब मेरी भी dignity है, मेरे प्रति देश के नागरिक सम्मान के भाव से देखता है। और पैरालंपिक में तो हमारे खिलाड़ी नई-नई ताकत दिखाने लगे हैं। तब लगता है कि ये जो मेरा मम्-भाव है, हम सबका मम्-भाव है उसकी ताकत नजर आती है। हमारे transgender समाज के प्रति हम जिस संवेदना के साथ निर्णय बना रहे हैं, हम नए-नए कानून बना रहे हैं, उनको सम्मान का जीवन देने के लिए हम प्रयास कर रहे हैं। तब बदलाव की हमारी दिशा सही दिखती है। सेवा-भाव से किए गए इन कामों का जो त्रिविद मार्गों से हम चले हुए हैं, इन कामों का एक सीधा-सीधा लाभ आज उसके परिणाम के रूप में हमें नजर आ रहा है।

60 साल बाद लगातार तीसरी बार आपने हमें देश सेवा का मौका दिया है। मेरे 140 करोड़ देशवासी, आपने जो आशीर्वाद दिए हैं, उसके आशीर्वाद में मेरे लिए एक ही संदेश है जन-जन की सेवा, हर परिवार की सेवा, हर क्षेत्र की सेवा और सेवा भाव से समाज की शक्ति को साथ लेकर के विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचना। 2047 विकसित भारत के सपने को लेकर के चलना उसी एक संदेश को लेकर मैं आज लालकिले की प्राचीर से हमें आशीर्वाद देने के लिए मैं कोटि-कोटि देशवासियों का सर झुकाकर के आभार व्यक्त करता हूं, मैं उनके प्रति नतमस्तक होता हूं। और मैं उनको विश्वास दिलाता हूं कि हमें नई ऊंचाइयों को, नए जोश के साथ आगे बढ़ना है। हमें सिर्फ जो हो गया है वो संतोष मानकर के बैठने वाले हम लोग नहीं हैं, वो हमारे संस्कार में नहीं है। हम कुछ और करने के लिए, कुछ और आगे बढ़ने के लिए और कुछ और नई ऊंचाइयों को पार करने के लिए हम आगे बढ़ना चाहते हैं। विकास को, समृद्धि को सपनों को साकार करने को, संकल्पों के लिए जीवन खपाने को हम अपना स्वभाव बनाना चाहते हैं, देशवासियों का स्वभाव बनाना चाहते हैं।

आज नई शिक्षा नीति में कई राज्यों ने अच्छे initiatives लिए हैं और उसके कारण आज एक 21वीं सदी के अनुरूप हमारी शिक्षा व्यवस्था को जो हम बल देना चाहते हैं। और विकसित भारत के सपने के लिए जिस प्रकार से मानव समूह तैयार करना चाहते हैं, नई शिक्षा नीति की बहुत बड़ी भूमिका है। मैं नहीं चाहता हूं कि मेरे देश के नौजवानों को अब विदेशों में पढ़ने के लिए मजबूर होना पड़े। मध्यमवर्गीय परिवार का लाखों-करोड़ों रूपया बच्चों को विदेश पढ़ने के लिए भेजने में खर्च हो जाए। हम यहां ऐसी शिक्षा व्यवस्था को विकसित करना चाहते हैं कि मेरे देश के नौजवानों को विदेश जाना न पड़े। मेरे मध्यमवर्गीय परिवारों को लाखों-करोड़ों रुपया खर्च न करना पड़ें, इतना ही नहीं, ऐसे संस्थानों का निर्माण हो ताकि विदेशों से भारत के अंदर

उनका मुंह मोड़े।

अभी-अभी हमने-बिहार का हमारा गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। नालंदा यूनिवर्सिटी का पुनर्निर्माण किया है। फिर से एक बार नालंदा यूनिवर्सिटी ने काम करना शुरू कर दिया है, लेकिन हमें शिक्षा के क्षेत्र में फिर से एक बार सदियों पुराने उस नालंदा स्पिरिट को जगाना होगा, उस नालंदा स्पिरिट को जीना होगा, उस नालंदा स्पिरिट को ले करके बड़े विश्वास के साथ विश्व की ज्ञान की परंपराओं को नई चेतना देने का काम हमें करना होगा। मुझे पक्का विश्वास है कि नई शिक्षा नीति ने मातृभाषा पर बल दिया है। मैं राज्य सरकारों से कहूंगा, मैं देश की सभी संस्थानों से कहूंगा कि भाषा के कारण हमारे देश के टैलेंट को रूकावट नहीं आनी चाहिए। भाषा अवरूद्ध नहीं होनी चाहिए। मातृभाषा का सामर्थ्य हमारे देश के छोटे-छोटे, गरीब से गरीब मां के बेटे को भी सपने पूरा करने का ताकत देती है और इसलिए हमने हमारी मातृभाषा में पढ़ाई, जीवन में मातृभाषा का स्थान, परिवार में मातृभाषा का स्थान उसकी ओर हमें बल देना होगा।

जिस प्रकार से आज विश्व में बदलाव नजर आ रहा है और तब जा करके skill का महत्व बहुत बढ़ गया है। और हम skill को और एक नई ताकत देना चाहते हैं। हम Industry 4.0 को ध्यान में रख करके हम skill development चाहते हैं। हम जीवन के हर क्षेत्र में, हम Agriculture Sector में भी capacity building करने के लिए skill development चाहते हैं। हम तो हमारा सफाई का क्षेत्र हो उसमें भी एक नई skill development की ओर बल देना चाहते हैं। और हम Skill India Programme को बहुत व्यापक रूप से इस बार ले करके आए हैं। बजट में भी इसका बहुत बड़ा, इस बजट में internship पर भी हमने बल दिया है, ताकि हमारे नौजवानों को एक experience मिले, उनकी capacity building हो, और बाजार में उनकी ताकत दिखाई दें, उस प्रकार से मैं Skilled युवाओं को तैयार करना चाहता हूं। और दोस्तों, आज विश्व की परिस्थितियों को देखते हुए मैं साफ-साफ देख रहा हूं कि भारत का Skilled manpower जो है, हमारे Skillful जो नौजवान हैं, वो ग्लोबल जॉब मार्केट में अपनी धमक बनाएं, हम उस सपने को ले करके आगे चल रहे हैं।

विश्व जिस तेजी से बदल रहा है, जीवन के हर क्षेत्र में Science और Technology का महात्मय बढ़ता चला जा रहा है। हमें Science पर बहुत बल देने की आवश्यकता है। और मैंने देखा चंद्रयान की सफलता के बाद हमारे स्कूल, कॉलेज के अंदर Science और Technology के प्रति एक नई रूचि का वातावरण बना है, नई दिलचस्पी बढ़ी है। तब हमारे शिक्षा संस्थानों ने, यह जो मनोभाव बना है उसको नरचर करने के लिए आगे आना होगा। भारत सरकार ने भी रिसर्च के लिए support बढ़ा दिया है। हमने ज्यादा से ज्यादा चेयर्स स्थापित किये हैं। हमने National Research Foundation बना करके हमने उसको एक कानूनी परिवेश में ला करके स्थायी रूप से एक व्यवस्था विकसित की है, ताकि research को ले करके निरंतर बल मिले और यह research foundation उस काम को करें। बड़े गर्व की बात है कि बजट में हमने एक लाख करोड़ रुपया research और innovation के लिए हमने देने का निर्णय किया है, ताकि हमारे देश के नौजवान के पास जो ideas हैं, उस ideas को हम जमीन पर उतार पाएं।

आज भी हमारे देश में Medical Education के लिए हमारे बच्चे बाहर जा रहे हैं। वो ज्यादातर मध्यम वर्ग परिवार के हैं। उनके लाखों-करोड़ों रुपये खर्च हो जाते हैं और तब जा करके हमने पिछले 10 साल में Medical सीटों को करीब-करीब एक लाख कर दिया है। करीब-करीब 25 हजार युवा हर साल विदेश में Medical Education के लिए जाते हैं। और ऐसे-ऐसे देश में जाना पड़ रहा है, कभी-कभी तो मैं सुनता हूं तो हैरान हो जाता हूं और इसलिए हमने तय किया है कि अगले 5 साल में, Medical line में 75 हजार नई सीटें बनाई जाएंगी।

विकसित भारत 2047, वो स्वस्थ भारत भी होना चाहिए। और जब स्वस्थ भारत हो तो आज जो बच्चे हैं, उनके पोषण पर आज से ही ध्यान देने की जरूरत है। और इसलिए हमने विकसित भारत की जो पहली पीढ़ी है, उनकी तरफ विशेष ध्यान दे करके हमने पोषण का एक अभियान चलाया है। हमने राष्ट्रीय पोषण मिशन शुरू किया है, पोषण को हमने प्राथमिकता दी है।

हमारी कृषि व्यवस्था को transform करना बहुत जरूरी है, समय की मांग है। हम सदियों से जिस परम्परा में दबे हुए हैं, जकड़े हुए हैं, उससे मुक्ति पानी होगी और हमारे किसानों को उसके लिए हम मदद भी दे रहे हैं। हम उसको transform करने की दिशा में लगातार काम करते आए हैं। आज आसान ऋण दे रहे हैं किसानों को, टेक्नोलॉजी की मदद दे रहे हैं। किसान जो पैदावार करता है उसको Value Addition के लिए हम काम कर रहे हैं। उसके लिए मार्केटिंग के लिए पूरा प्रबंध करते हैं ताकि उसको End to End हर जगह पर पर Hand Holding की व्यवस्था हो, उस दिशा में हम काम कर रहे हैं।

आज जब धरती माता के प्रति सारा विश्व चिंतित है, जिस प्रकार से उर्वरक के कारण हमारी धरती माता की सेहत दिनों-दिन बिगड़ती जा रही है, हमारी धरती माता की उत्पादकता क्षमता खत्म होती चली जा रही है, कम होती चली जा रही है, और उस समय मैं मेरे देश के लाखों किसानों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने प्राकृतिक खेती का रास्ता चुना है और हमारी धरती माता की भी सेवा करने का उन्होंने बीड़ा उठाया है। और इस बार बजट में भी हमने प्राकृतिक खेती को बल देने के लिए बहुत बड़ी योजनाओं के साथ बहुत बड़ा बजट में प्रावधान किया है।

आज दुनिया की स्थिती मैं देखता हूं, पूरा विश्व Holistic Health Care की तरफ मुड़ रहा है और तब उनको Organic Food जो उनकी प्रथम पसंद बनी है, आज विश्व के लिए Organic Food का अगर कोई Food Basket बन सकता है तो मेरे देश का किसान बना सकता है, मेरा देश बन सकता है। और इसलिए हम आने वाले दिनों में उस सपने को ले करके आगे चलना चाहते हैं ताकि Organic Food की जो विश्व की मांग है और Organic Food का Basket हमारा देश कैसे बने।

किसानों का जीवन आसान बने, गांव में Top Class Internet Connectivity मिले, किसानों को स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें, किसान के बच्चों को पढ़ने के लिए स्मार्ट स्कूल available हो, किसान के बच्चों को रोजगार उपलब्ध हो। छोटे-छोटे खेती के टुकड़ों पर पूरा परिवार आज जीना बड़ा मुश्किल हो रहा है, तब उनके नौजवानों के लिए वो स्किल मिले ताकि उनको नए रोजगार मिलें, नए आय के साधन बनें, इसका एक Comprehensive प्रयास हम कर रहे हैं।

बीते वर्षों में Women led development Model पर हमने काम किया है। Innovation हो, Employment हो, Entrepreneurship हो, हर सेक्टर में महिलाओं के कदम बढ़ते जा रहे हैं। महिलाएं सिर्फ भागीदारी बढ़ा रही हैं ऐसा नहीं है, महिलाएं नेतृत्व दे रही हैं। आज अनेक क्षेत्रों में, आज हमारे रक्षा क्षेत्र में देखिए हमारा एयरफोर्स हो, हमारी आर्मी हो, हमारी नेवी हो, हमारा स्पेस सेक्टर हो, आज हमारी महिलाओं का हम दमखम देख रहे हैं, देश के लिए। लेकिन दूसरी तरफ कुछ चिंता की बातें भी आती हैं और मैं आज लाल किले से फिर से एक बार अपनी पीड़ा व्यक्त करना चाहता हूँ। एक समाज के नाते, हमे गंभीरता से सोचना होगा कि हमारी माताओं-बहनों बेटियों के प्रति जो अत्याचार हो रहे हैं, उसके प्रति देश का आक्रोश है। जन

सामान्य का आक्रोश है। इस आक्रोश को मैं महसूस कर रहा हूं। इसको देश को, समाज को, हमारी राज्य सरकारों को गंभीरता से लेना होगा। महिलाओं के विरुद्ध अपराधों की जल्द से जल्द जांच हो। राक्षसी कृत्य करने वालों को जल्द से जल्द कड़ी सजा हो, वो समाज में विश्वास पैदा करने के लिए जरुरी है।

मैं ये भी बताना चाहूँगा कि जब बलात्कार की, महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं घटती हैं तो उसकी बहुत चर्चा होती है, बहुत प्रचार होता है, मीडिया में छाया रहता है। लेकिन जब ऐसे राक्षसी मनोवृत्ति व्यक्ति को सजा होती है, तो वो खबरों में कहीं नजर नहीं आती है, एक कोने में कहीं पड़ा रहता है। अब समय की मांग है कि जिनको सजा होती है उसकी व्यापक चर्चा हो ताकि ऐसा पाप करने वालों को भी डर पैदा हो कि ये पाप करने की हालत ये होती है कि फांसी पर लटकना पड़ता है और मुझे लगता है कि ये डर पैदा करना बहुत जरुरी है।

हमारे देश में ऐसी एक आदत बन गई थी स्वभाव से। हम देश को कम आंकना, देश के प्रति गौरव के भाव का अभाव होना, ये पता नहीं क्यों हमारे जेहन में घुस गया था। और हम तो कभी कभी तो लेट आए तो कहते थे Indian Sign, शर्म के साथ हम बोल देते थे। देश को इन चीजों से हमने बाहर लाने में सफलता पाई है। किसी जमाने में कहा जाता था अरे खिलौने भी बाहर से आते थे, वो दिन देखे हमने। आज मैं गर्व से कह सकता हूं कि मेरे देश के खिलौने इस दुनिया के बाजार में अपनी धमक लेकर के पहुंच रहे हैं। खिलौने हमारे एक्सपोर्ट होने शुरू हुए हैं। कोई एक जमाना था, हम मोबाइल फोन इम्पोर्ट करते थे, आज मोबाइल फोन के Manufacturing का Ecosystem बना है, एक बहुत बड़ा हब बना है और आज हम मोबाइल फोन दुनिया में एक्सपोर्ट करने लगे हैं। ये भारत की ताकत है।

भविष्य के साथ Semiconductor जुड़ा हुआ है। आधुनिक टेक्नोलोजी जुड़ी हुई है, AI जुड़ा हुआ है। हमने Semiconductor मिशन पर काम शुरू किया है हर उपकरण में Made in India Chip क्यूँ न हो, क्यों ये सपना मेरे देश का नौजवान न देखे, टेलेंट यहां है। सारे इस प्रकार के रिसर्च के काम हिन्दुस्तान में होते हैं तो अब प्रोडक्शन हिन्दुस्तान में होगा। Semiconductor का काम भी हिन्दुस्तान में होगा और हम End to End Solution दुनिया को देने की ताकत रखते हैं।

एक जमाना हमने देखा है, 2जी के लिए हम कैसा संघर्ष करते थे। आज हर उपकरण में हम देख रहे हैं, हम तेजी से आगे बढ़े और 5जी जिस तेजी से पूरे देश में Roll Out हुआ। हिन्दुस्तान के करीब करीब सभी क्षेत्रों में 5जी पहुंच गया। वो विश्व में तेज गति से 5जी पहुंचाने में आगे रहे हैं और साथियों मैंने कहा हम रुकने वाले नहीं हैं, 5जी पर रुक जाना अब हमें मंजूर नहीं है। हम 6जी पर अभी से मिशन मोड में काम कर रहे हैं और विश्व में हम उसमें भी अपनी धमक जमाएंगे। ये मैं विश्वास से कहता हूं।

Defence Sector, हमारी आदत हो गई थी Defence Budget कितना ही क्यों न हो, लेकिन कभी कोई सोचता नहीं था कि Defence Budget बढ़ा तो जाता कहां है? Defence Budget विदेशों से खरीदी में चला जाता था। अब हम चाहते हैं हम आत्मनिर्भर बनें और मैं हमारी Defence Forces का हृदय से धन्यवाद करता हूं, उन्होंने हजारों ऐसी चीजें List कर दीं हैं, उन्होंने तय किया है कि हम विदेश से नहीं लाएंगे। राष्ट्र के लिए जीना क्या कहते हैं, ये हमारे सेना के जवानों ने दिखाया है। अब इसके कारण Defence Sector में हम आत्मनिर्भर होते चले जा रहे हैं। आज Defence Manufacturing में, भारत की पहचान बनीं है और मैं आज खुशी से कह सकता हूं कि जो देश कभी Defence की हर छोटी मोटी चीज बाहर से लाता था, आज धीरे-धीरे दुनिया के कई देशों में हम जो Defence के Equipment Manufacturing कर रहे हैं, वो हम Export करने लगे हैं। दुनिया में Defence Hub Manufacturing के रूप में हम धीरे-धीरे उभर रहे हैं। हम manufacturing क्षेत्र को बढ़ावा देना चाहते हैं क्योंकि रोजगार के लिए सर्वाधिक आवश्यक है। आज PLI Scheme को बहुत बड़ी सफलता मिली है। FDI Reforms उसने भी हमें बहुत बड़ी ताकत दी है। MSME's को बहुत बड़ा बल मिला है। नई व्यवस्था विकसित हुई है और उसके कारण हमारा manufacturing sector हम दुनिया का एक manufacture hub बनें। जिस देश के पास इतनी नौजवान शक्ति हो, जिस देश के अंदर ये सामर्थ्य हो, हम manufacturing की दुनिया में भी Industry 4.0 में हम बहुत बड़ी ताकत के साथ आगे जाना चाहते हैं। और इसके लिए आवश्यक skill development उस पर भी हमने बल दिया है। और skill development में भी हमने नए model तय किए हैं। हमने जनभागीदारी को जोड़ा है ताकि तुरंत requirement के अनुसार skill development हम कर सकें। और मुझे विश्वास है मैं लाल किले की प्राचीर से कह रहा हूं वो दिन दूर नहीं होगा जब भारत Industrial manufacturing का हब होगा, दुनिया उसकी तरफ देखती होगी।

आज विश्व की बहुत बड़ी कंपनियां भारत में निवेश करना चाहती हैं। ये चुनाव के बाद मैंने देखा है, मेरे तीसरे कार्यकाल में जितने लोग मुझसे मिलने के लिए मांग कर रहे हैं वो ज्यादातर निवेशक लोग हैं। विश्व भर के निवेशक हैं, वो आना चाहते हैं, भारत में निवेश करना चाहते हैं। ये एक बहुत बड़ी golden opportunity है। मैं राज्य सरकारों से आग्रह करता हूं कि आप निवेशकों को आकर्षित करने के लिए स्पष्ट नीति निर्धारित कीजिए। Good Governance का आश्वासन दीजिए, Law & Order situation के लिए उनको भरोसा दीजिए। हर राज्य एक तंदुरुस्त स्पर्धा में आगे आएं। राज्य-राज्य के बीच निवेशकों को खींचने के लिए स्पर्धा होनी चाहिए निवेशकों के लिए, ताकि उनके राज्य में निवेशक आएंगे उनके राज्य के नौजवानों को स्थानीय रूप से अवसर मिलेगा, रोजगार का अवसर मिलेगा।

नीतियों में परिवर्तन लाना चाहिए तो global requirement के अनुसार नीतियों को राज्यों को परिवर्तित करना चाहिए। लैंड की आवश्यकता है तो राज्यों को लैंड बैंक बनानी चाहिए। Good Governance single point पर काम करने के लिए राज्य जितने proactive होंगे, जितने ज्यादा प्रयास करेंगे, जो निवेशक आ रहे हैं वो कभी भी वापस नहीं जाएंगे। सिर्फ भारत सरकार से काम ये होता नहीं है। राज्य सरकारों की बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। क्योंकि जो भी प्रोजेक्ट लगने वाला है उस राज्य में लगने वाला है। उसको हर राज्य के साथ रोजमर्रा का काम पड़ता है। और इसलिए मैं राज्यों से आग्रह करूंगा कि जब विश्व पूरी तरह भारत की तरफ आकर्षित हो रहा है। पूरा विश्व भारत में निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध हो रहा है तब ये हमारा दायित्व बनता है कि हमारी पुरानी आदतें छोड़कर के स्पष्ट नीति के साथ हम आगे आएं। देखिए आपको परिणाम अपने राज्य में दिखाई देगा और आपका राज्य भी चमक उठेगा, ये मैं आपको विश्वास देता हूं।

भारत अपनी best quality के लिए पहचानी जाए ये बहुत जरूरी है। अब विश्व के लिए हमें डिजाइन का क्षेत्र design in India इस पर हमें बल देना है। हमें कोशिश करनी है कि Indian Standard International Standard बनने चाहिए। Indian Standard International Standard बनेंगे तब हमारी हर चीज पर सरलता से मुहर लग जाएगी। और ये हमारी production के quality पर निर्भर करेगा। हमारी सेवा की quality पर निर्भर करेगा। हमारे approach की quality पर निर्भर करेगा। और इसलिए हमें quality पर बल देकर के आगे बढ़ना है। हमारे पास

टेलेंट है। Design के क्षेत्र में हम दुनिया को बहुत कुछ नया दे सकते हैं। Design in India इस आह्वान को लेकर के हमें आगे चलना है। Design in India and Design for the world इस सपने को लेकर के चलना है।

मैं देख रहा हूं gaming की दुनिया का बहुत बड़ा मार्केट खड़ा हुआ है। लेकिन आज भी gaming की दुनिया पर प्रभाव, खासकर के उन खेलों को बनाने वाले लोग, product करने वाले लोग विदेश से कमाई होती है। भारत के पास बहुत बड़ी विरासत है। हम gaming की दुनिया में बहुत नई talent को लेकर के आ सकते हैं। विश्व के हर बच्चे को हमारे देश की बनी हुई talent की ओर आकर्षित कर सकते हैं। मैं चाहता हूं कि भारत के बच्चे, भारत के नौजवान, भारत के professionals भारत के AI के professionals, वे gaming की दुनिया को लीड करें। खेलने में नहीं, गेमिंग की दुनिया में हमारे प्रोडक्ट पूरे विश्व में पहुंचने चाहिए। और पूरी दुनिया में हमारे animators काम कर सकते हैं। Animation की दुनिया में हम अपनी धाक जमा सकते हैं, हम उसी दिशा में काम करें।

आज विश्व के अंदर global warming, climate change हर क्षेत्र में चिंता और चर्चा का विषय रहता है। भारत ने उस दिशा में काफी कदम उठाए हैं। हम विश्व को आश्वस्त करते रहे हैं और शब्दों से नहीं अपने कार्यों से, प्राप्त परिणामों से हमने विश्व को आश्वस्त भी किया है और विश्व को आश्चर्य चकित भी किया है। हम ही हैं, जिन्होंने single use plastic पर प्रतिबंध लगाया है। हमने renewable energy पर विस्तार किया है, हमने renewable energy को एक नई ताकत दी है। आने वाले कुछ वर्षों में हम net zero future की ओर आगे बढ़ रहे हैं। मुझे याद है Paris Accord में जिन देशों ने अपने लक्ष्य निर्धारित किए थे, आज मैं लाल किले की प्राचीर से मेरे देशवासियों की ताकत दुनिया को बताना चाहता हूं। G-20 देश के समूह जो नहीं कर पाए वो मेरे देश के नागरिकों ने करके दिखाया है, मेरे देशवासियों ने करके दिखाया है, हिन्दुस्तान ने करके दिखाया है। Paris Accord के अंदर जो टारगेट हमने तय किए थे, उन टारगेट को समय से पहले पूरा करने वाला G-20 देशों के समूह में अगर कोई है तो एकमात्र मेरा हिंदुस्तान है, एकमात्र मेरा भारत है। और इसलिए गर्व होता है साथियों renewable energy के टारगेट हमने पूरे किए। हम 2030 तक renewable energy को 500 गीगावॉट तक ले जाने के लिए मकसद से काम कर रहे हैं, आप कल्पना कर सकते हैं

कि कितना बड़ा लक्ष्य है। दुनिया के लोग सिर्फ 500 गीगावॉट शब्द सुनते हैं ना तो मेरी तरफ ऐसे-ऐसे देखते हैं। लेकिन आज मैं विश्वास से कह रहा हूं देशवासियों को कि इस लक्ष्य को भी हम पूरा करके रहेंगे। और ये मानवजाति की भी सेवा करेगा, हमारे भविष्य की भी सेवा करेगा, हमारे बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी बनेगा। हमने 2030 तक हमारी रेलवे को net zero emission का लक्ष्य लेकर के हम चल रहे हैं।

पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना उसको एक नई ताकत देने वाली है और ये बदलाव का फल मेरे देश के सामान्य परिवार को मिला है, विशेषकर के मेरे मध्यमवर्ग को मिलेगा, जब उसका बिजली का बिल मुफ्त हो जाएगा। Electrical vehicle, उसकी मांग बढ़ती जा रही है। जब पीएम सूर्यघर योजना से, कोई बिजली उत्पादन करता है सूर्य से तो उसका व्हीकल का प्रवास का खर्चा भी वो कम कर सकता है।

हम Green Hydrogen Mission लेकर के एक global hub बनना चाहते हैं। बहुत तेजी से नीतियां बनाई गई हैं, बहुत तेजी से उसका implementation का काम हो रहा है और भारत green hydrogen एक new energy की दिशा में हम जाना चाहते हैं। और ये सारे जो प्रयास चल रहे हैं climate की चिंता तो है ही है, global warming की चिंता है। लेकिन इसके अंदर green jobs की बहुत बड़ी संभावना है। और इसलिए आने वाले कालखंड में green jobs का महत्व बढ़ता है तो उसको सबसे पहले कैप्चर करने के लिए, मेरे देश के नौजवानों को अवसर देने के लिए और green jobs के लिए एक बहुत बड़े क्षेत्र को बढ़ावा दे रहे हैं।

आज हमारे साथ इस तिरंगे झंडे के नीचे वो नौजवान बैठे हैं, जिन्होंने ओलंपिक की दुनिया में भारत का परचम लहराया है। मैं मेरे देश के सभी एथलीट्स को, मैं देश के सभी खिलाड़ियों को 140 करोड़ देशवासियों की तरफ से बधाई देता हूं। और हम नए सपने, नए संकल्प अत्यधिक पुरूषार्थ के साथ नए लक्ष्यों को हासिल करने के लिए आगे बढ़ेंगे, ऐसा मैं विश्वास के साथ उनको शुभकामनाएं भी देता हूं। आने वाले कुछ दिनों में भारत का एक बहुत बड़ा दस्ता पैरालंपिक के लिए, पेरिस जाने के लिए रवाना होगा। मैं, मेरे सभी पैरालंपिक खिलाड़ियों को भी हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

भारत ने G-20 को ऑर्गेनाइज किया, हिन्दुस्तान के अनेक शहरों में ऑर्गेनाइज किया। 200 से ज्यादा event किए, पूरे विश्व में G-20 का इतना बड़ा व्यापक कार्यक्रम कभी नहीं हुआ, इस बार हुआ। इसने एक बात सिद्ध कर दी है कि भारत में बड़े से बड़े काम कार्यक्रम को organize करने की ताकत है। भारत को, किसी की भी hospitality का सामर्थ्य सबसे ज्यादा है। अगर यह सिद्ध हो चुका है, तो साथियों हिंदुस्तान का सपना है कि 2036 में जो Olympic होगा, वो मेरे हिंदुस्तान की धरती पर हो, इसके लिए हम तैयारी कर रहे हैं, उसके लिए

हम आगे बढ़ रहे हैं।

समाज के आखिरी तबके के जो लोग हैं, यह हमारा सामाजिक दायित्व है, अगर कोई पीछे रह जाते हैं, तो यह हमारे आगे बढ़ने की गति कम कर देता है और इसलिए हम आगे बढ़ना चाहते हैं तो भी सफलता तब मिलती है पीछे वाले को भी साथ-साथ आगे ले आए। और इसलिए हम सबका दायित्व बनता है कि हमारे समाज में आज भी जो क्षेत्र पीछे रह गए हैं, जो समाज पीछे रह गए हैं, जो लोग पीछे रह गए हों, हमारे छोटे-छोटे किसान हो, हमारे जंगलों में रहने वाले मेरे आदिवासी भाई-बहन हों, हमारी माताएं-बहनें हों, हमारे मजदूर हों, हमारे श्रमिक साथी हों, हमारे कामगार लोग हों, इन सबको हमें बराबरी में लाने के लिए, हमारे बराबर लाने के लिए भरपूर प्रयास करना है। लेकिन अब गति पकड़ गई है अब लम्बे दिन तक हमें वो करना नहीं पड़ेगा, बहुत जल्द वो हमारे पास पहुंच जाएंगे, हमारी बराबरी में आ जाएंगे, हमारी ताकत बहुत बढ़ जाएगी। और बड़ी संवेदना के साथ हमें इस काम को करना है। और इसके लिए एक बहुत बड़ा अवसर आ रहा है।

मैं मानता हूं संवेदनशीलता की दृष्टि से इससे बड़ा अवसर और क्या हो सकता है। हमें पता है 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के पहले भी अंग्रेजों की नाक में दम करने वाला हमारे देश का एक आदिवासी युवक था। 20-22 साल की उम्र में उसने अंग्रेजों के नाको में दम ला दिया था, जिसको आज भगवान बिरसा मुंडा के रूप में लोग पूजा करते हैं। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती आ रही है। यह हम सबके लिए प्रेरणा का कारण बनें। समाज के प्रति छोटा सा छोटा व्यक्ति भी देश के लिए कैसे जज्बात रखता है उससे बड़ी प्रेरणा भगवान बिरसा मुंडा से कौन अधिक हो सकता है। आइये, हम भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती जब मनाएं, संवेदनशीलता का हमारा व्याप बढ़े, समाज के प्रति हमारा मनोभाव बढ़े, हम समाज के हर व्यक्ति को गरीबों को, दलितों को, पिछड़ों को, आदिवासियों को, हरेक को हम अपने साथ ले करके चले, इस संकल्प को ले करके चलना है।

हम संकल्प के साथ बढ़ तो रहे हैं, बहुत आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन यह भी सच है कि कुछ लोग होते हैं जो प्रगति देख नहीं सकते हैं, कुछ लोग होते हैं जो भारत का भला सोच नहीं सकते हैं जब तक खुद का भला न हो, तब तक उनको किसी का भला अच्छा नहीं लगता है। ऐसे विकृत मानसिकता से भरे हुए लोगों की कमी नहीं होती है। देश को ऐसे लोगों से बचना होगा। वे निराशा की गर्त में डूबे हुए लोग हैं। ऐसे मुट्ठी भर निराशा की गर्त में डूबे हुए लोग जब उनके गोद में विकृति पलती है, तब वो विनाश का कारण बन जाती है, सर्वनाश का कारण बन जाती है, anarchy का मार्ग ले लेती है और तब देश को इतनी बड़ी हानि हो जाती है, जिसकी भरपाई करने में हमें नये सिरे से मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए ऐसे जो छुट-पुट निराशावादी तत्व होते हैं, वो सिर्फ निराश हैं इतना ही नहीं है, उनकी गोद में विकृति पल रही है। यह विकृति विनाश के सर्वनाश के सपनें देख रही है, ताने-बाने जोड़ने के प्रयास में लगी है। देश को इसे समझना होगा। लेकिन मैं देशवासियों को कहना चाहता हूं कि हम हमारी नेक नियत से, हमारी ईमानदारी से, राष्ट्र के प्रति समर्पण से, हम सारी परिस्थितियों के बावजूद भी विपरीत मार्ग पर जाने वालों के लिए भी उनके भी दिल जीत करके, हम देश को आगे बढ़ाने के संकल्प में कभी भी पीछे नहीं हटेंगे, यह मैं विश्वास देना चाहता हूं।

चुनौतियां हैं, अनगिनत चुनौतियां हैं, चुनौतियां भीतर भी हैं, चुनौतियां बाहर भी हैं और जैसे-जैसे हम ताकतवर बनेंगे, जैसे-जैसे हमारा तवज्जो बढ़ेगा तो चुनौतियां भी बढ़ने वाली हैं। बाहर की चुनौतियां और बढ़ने वाली हैं और मुझे उसका भलीभांति अंदाज है। लेकिन मैं ऐसी शक्तियों को कहना चाहता हूं भारत का विकास किसी के लिए संकट ले करके नहीं आता है। हम विश्व में समृद्ध थे तब भी, हमने कभी दुनिया को युद्ध में नहीं झोंका है। हम बुद्ध का देश हैं, युद्ध हमारी राह नहीं है। और इसलिए विश्व चिंतित न हो, भारत के आगे बढ़ने से मैं विश्व समुदाय को विश्वास दिलाता हूं कि आप भारत के संस्कारों को समझिए, भारत के हजारों साल के इतिहास को समझिए, आप हमें संकट मत मानिए, आप उन तरकीबों से न जुड़िए, जिसके कारण पूरी मानव जाति का कल्याण करने का सामर्थ्य जिस भूमि में है, उस भूमि को ज्यादा मेहनत करनी पड़े। लेकिन फिर भी मैं देशवासियों को कहना चाहता हूं, चुनौतियां कितनी ही क्यों न हों, चुनौती को चुनौती देना, ये हिन्दुस्तान की फितरत में है। न हम डिगेंगे, न हम थकेंगे, न हम रुकेंगे, न हम झुकेंगे। हम संकल्पों की पूर्ति के लिए 140 करोड़ देशवासियों का भाग्य बदलने के लिए, भाग्य सुनिश्चित करने के लिए, राष्ट्र के सपनों को साकार करने के लिए हम कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे। हर बदनीयत वालों को हम हमारी नेकनीयत से जीतेंगे, ये मैं विश्वास देता हूं।

समाज की मनोरचना में भी बदलाव कभी-कभी बहुत बड़ी चुनौती का कारण बन जाता है। हमारा हर देशवासी भ्रष्टाचार की दीमक से परेशान रहा है। हर स्तर के भ्रष्टाचार ने सामान्य मानवी का व्यवस्थाओं के प्रति विश्वास तोड़ दिया है। उसको अपनी योग्यता, क्षमता के प्रति अन्याय का जो गुस्सा होता है, वो राष्ट्र की प्रगति में नुकसान करता है। और इसलिए मैंने व्यापक रूप से भ्रष्टाचार के खिलाफ एक जंग छेड़ी है। मैं जानता हूं, इसकी कीमत मुझे चुकानी पड़ती है, मेरी प्रतिष्ठा को चुकानी पड़ती है, लेकिन राष्ट्र से बड़ी मेरी प्रतिष्ठा नहीं हो सकती है, राष्ट्र के सपनों से बड़ा मेरा सपना नहीं हो सकता है। और इसलिए ईमानदारी के साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ मेरी लड़ाई जारी रहेगी, तीव्र गति से जारी रहेगी और भ्रष्टाचारियों पर कार्रवाई जरूर होगी। मैं भ्रष्टाचारियों के लिए भय का वातावरण पैदा करना चाहता हूं ताकि देश के सामान्य नागरिक को लूटने की जो परम्परा रही है, उस परम्परा को मुझे रोकना है। लेकिन सबसे बड़ी नई चुनौती आई है, भ्रष्टाचारियों से निपटना तो है ही, लेकिन समाज जीवन में उच्च स्तर पर एक जो परिवर्तन आया है वो सबसे बड़ी चुनौती भी है और एक समाज के लिए सबसे बड़ी चिंता भी है। क्या कोई कल्पना कर सकता है कि मेरे ही देश में, इतना महान संविधान हमारे पास होने के बावजूद भी कुछ ऐसे लोग निकल रहे हैं जो भ्रष्टाचार का महिमामंडन कर रहे हैं। खुलेआम भ्रष्टाचार का जय-जयकार कर रहे हैं। समाज में इस प्रकार के बीज बोने का जो प्रयास हो रहा है, भ्रष्टाचार का जो महिमामंडन हो रहा है, भ्रष्टाचारियों की स्वीकार्यता बढ़ाने का जो निरंतर प्रयास चल रहा है, वो स्वस्थ समाज के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गया है, बहुत बड़ी चिंता का विषय बन गया है, भ्रष्टाचारियों के प्रति, समाज में दूरी बनाये रखने से ही किसी भी भ्रष्टाचारी को उस रास्ते पर जाने से डर लगेगा। अगर उसका महिमामंडन होगा, तो जो आज भ्रष्टाचार नहीं करता है, उसको भी लगता है कि ये तो समाज में प्रतिष्ठा का रंग बन जाता है, उस रास्ते पर जाने में बुरा नहीं है।

बांग्लादेश में जो कुछ भी हुआ है, उसको लेकर पड़ोसी देश के नाते चिंता होना, मैं इसको समझ सकता हूं। मैं आशा करता हूं कि वहां पर हालात जल्द ही सामान्य होंगे। खासकर के 140 करोड़ देशवासियों की चिंता कि वहां हिंदू, वहां के अल्पसंख्यक, उस समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित हो। भारत हमेशा चाहता है कि हमारे पड़ोसी देश सुख और शांति के मार्ग पर चलें। शांति के प्रति हमारा Commitment है, हमारे संस्कार हैं। हम आने वाले दिनों में बांग्लादेश की विकास यात्रा में हमेशा हमारा शुभ चिंतन ही रहेगा क्योंकि हम मानव जाति की भलाई सोचने वाले लोग हैं।

हमारे संविधान को 75 वर्ष हो रहे हैं। भारत के संविधान की 75 वर्ष यात्रा, देश के एक बनाना, देश को श्रेष्ठ बनाने में बहुत बड़ी भूमिका रही है। भारत के लोकतंत्र को मजबूती देने में हमारे देश के संविधान की बहुत बड़ी भूमिका रही है। हमारे देश के दलित, पीड़ित,

शोषित, वंचित को सुरक्षा देने का बहुत बड़ा काम हमारे संविधान ने किया है। अब जब संविधान के 75 वर्ष हम मनाने जा रहे हैं तब हम देशवासियों ने संविधान में निर्दिष्ट कर्तव्य के भाव पर बल देना बहुत जरुरी है और जब मैं कर्तव्य की बात करता हूं तब मैं सिर्फ नागरिकों पर बोझ बनाना नहीं चाहता। कर्तव्य केंद्र सरकार के भी हैं, कर्तव्य केंद्र सरकार के हर मुलाजिम के भी हैं, कर्तव्य राज्य सरकारों के भी हैं, राज्य सरकार के मुलाजिम के हैं। कर्तव्य हर स्थानीय स्वराज संस्था के हैं चाहें पंचायत हो, नगर पालिका हों, महानगर पालिका हों, तहसील हो, जिला हो, हर किसी के कर्तव्य हैं। लेकिन साथ साथ 140 करोड़ देशवासियों के कर्तव्य हैं। अगर हम सब मिलकर के अपने कर्तव्यों का निर्वाह करेंगे तो हम अपने आप औरों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए निमित्त बनेंगे और जब कर्तव्य का पालन होता है, तब अधिकारों की रक्षा निहित होती है, उसके लिए कोई अलग से प्रयास करने की जरुरत नहीं पड़ जाती है। मैं चाहता हूं कि हमारे इस भाव को लेकर के हम चलेंगे। हमारा लोकतंत्र भी मजबूत होगा। हमारा सामर्थ्य और बढ़ेगा और हम एक नई शक्ति के साथ आगे बढ़ेंगे।

हमारे देश में Supreme Court में बार बार Uniform Civil Code को लेकर के चर्चा की है। अनेक बार आदेश दिए हैं क्योंकि देश का एक बहुत बड़ा वर्ग मानता है और इसमें सच्चाई भी है कि जिस Civil Code को हम लेकर के जी रहे हैं वो Civil Code सचमुच में तो एक प्रकार का Communal Civil Code है, भेदभाव करने वाला Civil Code है। ऐसे Civil Code से जब संविधान के 75 वर्ष मना रहे हैं और संविधान की भावना भी जो हमें कहती है करने के लिए, देश की Supreme Court भी हमें कहती है करने के लिए और तब जो संविधान निर्माताओं का सपना था, उस सपने को पूरा करना हम सब का दायित्व है और मैं मानता हूं कि इस गंभीर विषय पर देश में चर्चा हो, व्यापक चर्चा हो। हर कोई अपने विचारों को लेकर के आए और कानूनों को जो कानून धर्म के आधार पर देश को बांटते हैं, जो ऊंच-नीच का कारण बन जाते हैं, ऐसे कानूनों का आधुनिक समाज में कोई स्थान नहीं सकता है और इसलिए मैं तो कहूंगा, अब समय की मांग है, अब देश में एक Secular Civil Code हो, हमने Communal Civil Code में 75 साल बिताएं हैं। अब हमें Secular Civil Code की तरफ जाना होगा, और तब जाकर के देश में धर्म के आधार पर जो भेदभाव हो रहें है, सामान्य नागरिकों को दूरी महसूस होती है, उसमें हमें मुक्ति मिलेगी।

जब मैं देश में एक चिंता के बारे में हमेशा कहता हूं परिवारवाद, जातिवाद भारत के लोकतंत्र को बहुत नुकसान कर रहा है। देश को, राजनीति को हमें परिवारवाद और जातिवाद से मुक्ति दिलानी होगी। आज हमने, मैं देख रहा हूं मेरे सामने जो नौजवान हैं उसमें लिखा हुआ है My Bharat जिस संगठन का नाम है उसकी चर्चा लिखी है। बहुत बढ़िया तरीके से लिखा हुआ है। My Bharat के अनेक मिशन हैं। एक मिशन ये भी है कि हम जल्द से जल्द देश में राजनीतिक जीवन में जनप्रतिनिधि के रूप में एक लाख ऐसे नौजवानों को आगे लाना चाहते हैं शुरूआत में, एक लाख ऐसे नौजवानों को आगे लाना चाहते हैं जिनके परिवार में किसी का भी कोई राजनीतिक background न हो। जिसके माता-पिता, भाई-बहन, चाचा, मामा-मामी कभी भी राजनीति में नहीं रहे। किसी भी पीढ़ी में नहीं रहे ऐसे होनहार नौजवानों को fresh blood एक लाख चाहे वो पंचायत में आए, चाहे नगर पालिका में आए, चाहे जिला परिषदों में आए, चाहे विधानसभा में आए, लोकसभा में आए। एक लाख नए नौजवान कोई भी प्रकार का पूर्व का राजनीतिक इतिहास उनके परिवार का न हो ऐसे fresh लोग राजनीति में आए ताकि जातिवाद से मुक्ति मिले, परिवारवाद से मुक्ति मिले, लोकतंत्र को समृद्धि मिले और जरूरी नहीं है कि एक दल में जाए, उनको जो पसंद हो उस दल में जाए। उस दल में जाकर के वो जनप्रतिनिधि बन कर के आगे आए।

देश तय करके चले कि आने वाले दिनों में एक लाख ऐसे नौजवान जिनका परिवार राजनीति से दूर-दूर का संबध नहीं है ऐसे fresh blood आएंगे, तो सोच भी नई आएगी, सामर्थ्य भी नया आएगा। लोकतंत्र समृद्ध होगा और इसलिए हमें इस दिशा में आगे होना है और मैं चाहूंगा कि देश में बार-बार चुनाव, इस देश की प्रगति में रूकावट बन रहे हैं, गतिरोध पैदा कर रहे हैं। आज कोई भी योजना को चुनाव के साथ जोड़ देना आसान हो गया है। क्योंकि हर तीन महीने छह महीने कहीं न कहीं चुनाव चल रहा है। कोई भी योजना जाहिर करोगे आप तो मीडिया में देखेंगे चुनाव आया तो फलाना हो गया, चुनाव आया तो फलाना हो गया। हर काम को चुनाव के रंग से रंग दिया गया है। और इसलिए देश में व्यापक चर्चा हुई है। सभी राजनीति दलों ने अपने विचार रखे हैं। एक committee ने बहुत बढ़िया अपना रिपोर्ट तैयार किया है। One Nation One Election के लिए देश को आगे आना होगा। मैं लाल किले से तिरंगे की साक्षी में देश के राजनीतिक दलों से आग्रह करता हूं, देश के संविधान को समझने वाले लोगों से आग्रह करता हूं कि भारत की प्रगति के लिए भारत के संसाधनों का सर्वाधिक उपयोग जनसामान्य के लिए हो उसके लिए One Nation One Election के सपने को साकार करने के लिए हमें आगे आना चाहिए।

भारत का स्वर्णिम कालखंड है 2047 विकसित भारत ये हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। बाधाएं, रूकावटें, चुनौतियां, उसको परास्त करके एक दृढ़संकल्प के साथ ये देश चलने के लिए प्रतिबद्ध है। और साथियों, मैं साफ देख रहा हूं, मेरे विचारों में कोई झिझक नहीं है। मेरे सपनों के सामने कोई पर्दा नहीं है। मैं साफ-साफ देख सकता हूं कि ये देश 140 करोड़ देशवासियों के परिश्रम से हमारे पूर्वजों का खून हमारी रगों में है। अगर वो 40 करोड़ लोग आजादी के सपनों को पूर्ण कर सकते हैं तो 140 करोड़ देशवासी समृद्ध भारत के सपने को साकार कर सकते हैं। 140 करोड़ देशवासी विकसित भारत के सपने को साकार कर सकते हैं। और मैंने पहले भी कहा था कि मेरे तीसरे term में देश तीसरी Economy तो बनेगा ही, लेकिन मैं तीन गुना काम करूंगा, तीन गुना तेज गति से काम करूंगा, तीन गुना व्यापकता से काम करूंगा, ताकि देश के लिए जो सपने हैं वो बहुत निकट में पूरे हो, मेरा हर पल देश के लिए है, मेरा हर क्षण देश के लिए है, मेरा कण-कण सिर्फ और सिर्फ मां भारती के लिए है और इसलिए 24X7 और 2047 इस प्रतिबद्धता के साथ आइये मैं देशवासियों को आह्वान करता हूं, हमारे पूर्वजों ने जो सपने देखे थे, उन सपनों को हम संकल्प बनाएं, अपने सपनों को जोड़े, अपने पुरूषार्थ को जोड़े और 21वीं सदी जो भारत की सदी है, उस सदी में स्वर्णिम भारत बना करके रहें, उसी सदी में हम विकसित भारत बना करके रहें और उन सपनों को पूरा करते हुए आगे बढ़े और स्वतंत्र भारत 75 साल की यात्रा के बाद एक नये मुकाम पर बढ़ रहा है, तब हम कोई कोर-कसर न छोड़े। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, आपने जो मुझे दायित्व दिया है मैं कोई कोर-कसर नहीं छोडूंगा, मैं मेहनत में कभी पीछे नहीं रहूंगा, मैं साहस में कभी कतराता नहीं हूं, मैं चुनौतियों से कभी टकराते डरता नहीं हूं, क्यों? क्योंकि मैं आपके लिए जीता हूं, मैं आपके भविष्य के लिए जीता हूं, मैं भारत माता के उज्ज्वल भविष्य के लिए जी रहा हूं और उन सपनों को पूरा करने के लिए आज राष्ट्रध्वज की छाया में, तिरंगे की छाया में दृढ़ संकल्प के साथ हम आगे बढ़े, इसी के साथ मेरे साथ बोलिए-

भारत माता की जय।... भारत माता की जय।...
भारत माता की जय।...
वन्दे मातरम्।... वन्दे मातरम्।... वन्दे मातरम्।...
वन्दे मातरम्।...
जय हिन्द।... जय हिन्द।... जय हिन्द।... ▪

भाजपा का सदस्यता अभियान
देश का सामर्थ्य बढ़ाएगा

- **भाजपा राष्ट्रीय सदस्यता अभियान एक औपचारिकता भर न होकर हमारे परिवार का विस्तार है।**
- **हमने दीवारों पर इस विश्वास के साथ कमल पेंट किया कि एक दिन यह निशान दिलों पर भी पेंट होगा।**
- **पार्टी की स्थापना के बाद से ही भारी कठिनाइयों का सामना करते हुए हमारे कार्यकर्ताओं ने इसे एक महान मुकाम पर पहुंचाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर काम किया है।**
- **हम सिर्फ चुनावी मशीन नहीं हैं। हम वो खाद-पानी हैं जो देशवासियों के सपनों को सींचा करते हैं।**

भारतीय जनसंघ से लेकर के अब तक, हमने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने का भरसक प्रयास किया है। जब तक जिस संगठन के माध्यम से, या जिस राजनीतिक दल के माध्यम से, देश की जनता सत्ता सुपुर्द करती है।

वो इकाई, वो संगठन, वो दल अगर लोकतांत्रिक मूल्यों को नहीं जीता है। आंतरिक लोकतंत्र निरंतर उसमें पनपता नहीं है, तो वैसी स्थिति बनती है, जो आज देश के कई दलों की हम देख रहे हैं।

सदस्यता अभियान का एक और दौर प्रारंभ हो रहा है। भारतीय जनसंघ से लेकर के अब तक, हमने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने का भरसक प्रयास किया है। जब तक जिस संगठन के माध्यम से, या जिस राजनीतिक दल के माध्यम से, देश की जनता सत्ता सुपुर्द करती है। वो इकाई, वो संगठन, वो दल अगर लोकतांत्रिक मूल्यों को नहीं जीता है। आंतरिक लोकतंत्र निरंतर उसमें पनपता नहीं है, तो वैसी स्थिति बनती है, जो आज देश के कई दलों की हम देख रहे हैं। और जैसा अमित भाई ने कहा हिंदुस्तान में एकमात्र यही दल है, जो अपनी पार्टी के संविधान के अनुसार अक्षरक्षः लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को, उसका पालन करते हुए अपने कार्य का विस्तार कर रहा है। और जन सामान्य की आशा-आकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए अपने-आपको निरंतर योग्य बनाता रहता है।

यह दल ऐसे ही यहां तक नहीं पहुंचा है। अनेकों पीढ़ियां खप गई हैं। वर्तमान पीढ़ी के अनेक कार्यकर्ता हैं, जिनके नाम भी नहीं जानते होंगे। ऐसे लोगों ने अपना जीवन खपाया, तब जाकर के ये दल, लोगों के दिलों में जगह बना पाया है। मैं जब राजनीति में नहीं था। उस जनसंघ के जमाने में बड़े उत्साह के साथ अपने कार्यकर्ता दीवारों पर दीपक, उस समय जनसंघ का निशान था। उसको पेंट करते थे और कई

राजनीतिक दल के नेता अपने भाषणों में मजाक उड़ाते थे कि दीवारों पर दीपक पेंट करने से सत्ता के गलियारों तक नहीं पहुंचा जा सकता। ऐसा कहते, मजाक उड़ाते थे। हम वो लोग हैं, जिन्होंने दीवारों पर कमल पेंट किया। लेकिन इतनी श्रद्धा से पेंट किया कि विश्वास था, ये दीवारों पर पेंट किया हुआ कमल कभी ना कभी तो दिलों पर भी पेंट हो जाएगा।

और कुछ लोग हमेशा हमारी मजाक उड़ाते रहे हैं। जब संसद में हमारे दो सदस्य थे। तब भी इतना भद्दा मजाक हमारे लिए उड़ाया गया था। कुछ लोगों का चरित्र ही ऐसा होता है। और उनको लगता है कि ऐसा करने से वो बड़े बन जाते हैं। लेकिन ऐसी सब प्रकार की आलोचनाओं को झेलते हुए जन सामान्य के कल्याण के लिए समर्पित होकर के, नेशन फर्स्ट की भावना को जीते हुए, हम चलते ही रहे और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने हमें मंत्र दिया था **चरैवेति-चरैवेति-चरैवेति,** चलते रहो। एक समय था, जब जनसंघ और भाजपा के कार्यकर्ता की पहचान और आज भी कुछ राज्यों में भारतीय जनता पार्टी, उसी जीवन को जीते हैं और अपने आदर्शों के लिए जूझते हैं।

हमारे कार्यकर्ताओं के लिए क्या कहा जाता था, चाहे वह जनसंघ का कार्यकर्ता हो या भाजपा का। उसका एक पैर रेल में होता है और दूसरा पैर जेल में होता है। रेल में इसलिए कि भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता निरंतर भ्रमण करता था। प्रवास करता था। जहां भी उसको जाना होता, वो दौड़ता रहता था। और समाज की समस्याओं के समाधान के लिए, सत्ता पर बैठे हुए लोगों के सामने संघर्ष करता था और इसलिए कभी जेल, तो कभी बाहर, ये उसकी स्थिति रहती थी। मुझे याद है करीब 50 साल पहले की बात होगी। जनसंघ के लोग अहमदाबाद में सत्याग्रह कर रहे थे। और एक अपनी कार्यकर्ता बहन जो जेल गई थी। करीब-करीब एक महिना लोग सब जेल में रहे थे, सिर्फ आंदोलन करने के लिए। और उसकी गोद में नौ महीने का बच्चा हाथ में लेकर के वो जेल में एक महीना गुजार करके आई थी। ऐसे जुल्म सहकर के पार्टी यहां पहुंची है। और ये जुल्म करने वाले लोग, एक छोटे से जुलूस को भी स्वीकार करने को तैयार नहीं होते थे। जेल में बंद कर देते थे। सत्ता का नशा उतना था उनको।

मैंने सालों तक संगठन में ही काम किया है। मैं भी कभी इसी प्रकार की बैठक लिया करता था, दौरा किया करता था। सदस्यता अभियान का हिसाब-किताब किया करता था। और मेरी ट्रेनिंग इस काम के लिए प्रमुख रूप से हमारे माननीय सुंदर सिंह जी भंडारी जी ने की थी। और वे इस विषय में बहुत आग्रही रहते थे।

थोड़ा-सा भी वो इधर-उधर स्वीकार नहीं करते थे। कभी-कभी लोगों को ऐसा भी लगता था कि भई एक स्ट्रक्चर बना देने से क्या होगा। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि उसी स्ट्रक्चर ने देश के आशा-अपेक्षा को पूर्ण करने के लिए एक माध्यम बना दिया। अब हम सदस्यता के लिए जाएंगे।

ये सदस्यता कर्मकांड नहीं है। हमारे लिए सदस्यता यानी, अपने परिवार का विस्तार है। हमारे परिवार में अगर किसी का जन्म होता है तो जितनी खुशी होती है। हमारे परिवार में शादी कर करके कोई बहू आती है। तो परिवार के विस्तार का जो आनंद होता है, वो आनंद बीजेपी में जो कोई नया सदस्य बनता है। परिवार के विस्तार का आनंद होता है। और इसलिए यह सदस्यता अभियान आंकड़ों का खेल नहीं दोस्तों। कितने नंबर हम पार कर जाएंगे, ये नहीं है। ये सदस्यता अभियान एक पूर्ण रूप से वैचारिक आंदोलन भी है और भावनात्मक आंदोलन भी है। और हमने संगठन की गाड़ी को उस पटरी पर दौड़ाना है, जिसमें वैचारिक धार भी हो और भावनाओं से भरपूर भी हो। क्योंकि हमारी भावनाएं देशभक्ति से प्रेरित हैं। मां भारती के कल्याण के लिए 140 करोड़ देशवासियों के कल्याण के लिए।

ये जो सदस्यता अभियान होगा, संगठन की रचना होगी। बूथ कमेटियां बनेगी। पहले हम सदस्यता अभियान करते थे और अब सदस्यता अभियान करें, कुछ चीजें हम नए तरीके से सोच सकते हैं क्या। जैसे, ये जो सदस्यता अभियान होगा, उसी समय जो संगठन की रचना होगी। उसी कालखंड में विधानसभाओं में और लोकसभा में 33 परसेंट रिजर्वेशन लागू हो गया होगा। महिलाओं के लिए अगर यह 33 परसेंट रिजर्वेशन इसी कालखंड में आने वाला है, तो क्या मेरी सदस्यता अभियान में, मैं ऐसे सभी लोगों को जोड़ूंगा, जो मेरे पार्टी के इतने महत्वपूर्ण निर्णय में अधिकतम महिलाओं को विजयी बनाकर के एमएलए, एमपी बना सके।

हमारे देश में पूरे विश्व के लिए, खास करके ग्लोबल साउथ के देशों के लिए, डेवलपिंग कंट्रीज के लिए, एक मॉडल रूप काम हमने किया है। और वो है, एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट। एस्पिरेशनल ब्लॉक। और हम चाहते हैं कि जो अब तक, जिसकी कोई चिंता कोई नहीं करता था, परवाह नहीं करता था। मुलाजिम भी वहां पर नौकरी करने के लिए जाने को तैयार नहीं होता था। पिछड़े रहते थे। हमने उसने उसे एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट, एस्पिरेशनल ब्लॉक

बनाया है। और हमारी कोशिश है कि जल्द से जल्द उस राज्य की जो पैरामीटर हैं, उसमें जरा भी पीछे ना हो। हो सके तो उससे भी आगे जाए। और हो सके तो नेशनल लेवल पर भी जो पैरामीटर्स में आ जाए। और इतना सुखद अनुभव रहा है कि एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट में गवर्नेंस पर फोकस करने के कारण, जन भागीदारी के कारण, जनसामान्य की आकांक्षा-अपेक्षाओं को चिन्हित करकर उस पर काम करने के कारण आज देश की एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट, एस्पिरेशनल ब्लॉक करीब-करीब स्टेट में टॉप की बराबरी करने लग गए हैं। क्या हम अपना संगठन की रचना करते समय ये एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट, एस्पिरेशनल ब्लॉक उसमें विशेष अभियान चला करके, वहां के हर पोलिंग बूथ में, अपना झंडा गाड़ सकते हैं दोस्तों। और हमें कागज लेकर बैठना पड़ेगा, भई मेरे इलाके में ये एस्पिरेशनल ब्लॉक है। उन एस्पिरेशनल ब्लॉक के अंदर इतने पोलिंग बूथ हैं। उस पोलिंग बूथ के अंदर मुझे इतनी मेंबरशिप का टारगेट है। मैं उसको करूंगा। हम प्रयास करें।

आपने देखा होगा, हमने एक बहुत बड़ा आमूलचूल परिवर्तन किया है। किसी समय हिंदुस्तान के आखिरी गांव के रूप में सीमावर्ती गांव जाने जाते थे। और नेगेटिविटी का जन्म उस शब्दों में ही शुरू हो जाता था। हमने तय किया कि आखिरी गांव नहीं है, ये मेरे देश के पहले गांव हैं। अगर ये गांव हिंदुस्तान के सीमा के छोर पर है। अगर सूरज की पहली किरण आएगी, पूर्व में होगा तो पहले उसी को स्पर्श करते हुए हम तक पहुंचेगी। वो पहला गांव है और इसलिए हमने पूरी तरह बदला है विचार। क्या हम एक स्पेशल इकाई बनाएं, जो-जो राज्य सीमावर्ती राज्य हैं, वे ये जो पहला गांव है। उसमें सबसे पहले मेंबरशिप का अभियान चलाएं। और पूरे के पूरे गांव को भारतीय जनता पार्टी का किला बना सकते हैं। और जो सीमा के आखिरी छोर पर बैठा हुआ वो गांव जब भारतीय जनता पार्टी का किला बनता है ना, तब वह भारत का किला अपने-आप बन जाता है। तो मेरे लिए सदस्यता ये सिर्फ पार्टी का नंबर बढ़ाने के लिए नहीं, मेरी सदस्यता मेरे देश को मजबूत बनाने के लिए भी है और इसलिए मैं उन गांवों को किला बना के छोड़ूंगा। ये सब, ये सब मुमकिन है लाखों कार्यकर्ताओं के तपस्या के कारण।

उसी प्रकार से जहां दो राज्यों की सीमाएं मिलती हैं। क्या अभी से प्लान कर सकते हैं, कि उन दो राज्यों की सीमा पर डेट निश्चित करके, मान लीजिए महाराष्ट्र और गुजरात की सीमाएं मिलती हैं। तो महाराष्ट्र के कार्यकर्ता उनकी सीमा पे आएंगे। गुजरात के कार्यकर्ता उस दिन उनकी सीमा पर जाएंगे। और एक सीमा पर उनके गांव, इसके गांव साथ मिलकर के मेंबरशिप बनाएंगे। महाराष्ट्र का गांव होगा वहां गुजरात के लोग भी नजर आएंगे। गुजरात का गांव होगा, महाराष्ट्र के लोग नजर आएंगे। और उस स्टेट के बॉर्डर के सभी गांवों को मैं कवर कर सकता हूं। मैं जब मैं कहता हूं एक भारत, श्रेष्ठ भारत, मेरे एक भारत श्रेष्ठ भारत की यह जो रेखाएं बनी हुई हैं नक्शे पर। मेंबरशिप के द्वारा मैं महाराष्ट्र के गांव को, गुजरात के गांव को, वहां के दिलों को जोड़ने के लिए मैं मेरा कमल खिला सकता हूं क्या।

और इसलिए मैं कहता हूं, यह सदस्यता अभियान मेरे देश का सामर्थ्य बढ़ाने के लिए है। हमने हमारे ट्राइबल इलाके, मुझे याद है एक सदस्यता अभियान के समय में हिमाचल में, मेरा दौरा था। ये नड्डा जी के इलाके में। और मैं पहाड़ी क्षेत्रों में जाना चाहता था। एक पोलिंग बूथ पर जाने में मेरा एक दिन लगता था। पहाड़ों पर चढ़ना पड़ता था। और वहां जाकर के 20-22 का लोगों की मीटिंग करके मैं नीचे उतरता था। पूरा दिन मेरा चला जाता था, लेकिन मुझे आनंद होता था कि वहां कोई तो होता था, जो पूछता था कि साहब ठंड बहुत है। पहले चाय पी लीजिए। यानी किसी ने तो तपस्या की थी। किसी ने तो मेहनत की थी। क्या हम हमारे जो ट्राइबल बेल्ट है, उसमें दूरदराज के जो क्षेत्र हैं, उसमें भी, अभी जैसे आपने देखा होगा पीएम जन मन योजना शुरू की है। यह पीएम जन मन योजना हमारे आदिवासी क्षेत्रों में भी, ऐसे-ऐसे इलाके हैं। ऐसे- ऐसे समूह हैं, जहां व्यवस्थाएं इतने सालों के बाद भी पहुंच नहीं पाईं थीं।

हमने पीएम जनमन योजना बनाकर के स्पेशल एफर्ट शुरू किया है। वो पॉलिटिकल वोट बैंक होने की ताकत नहीं है। क्योंकि बहुत छोटी संख्या में है। लेकिन, अगर उंगली का नाखून भी पक जाता है ना तो पूरे शरीर में दर्द होता है। वह भी तो मेरा शरीर के हिस्से हैं। वो दुखी हो, पीड़ित हो, मेरे देश में मुझे भी उसकी पीड़ा होती है। इस पीड़ा का अनुभव करते हैं, तब जाकर के पीएम जन मन योजना जन्म लेती है। सरकार तो पहुंचेगी, रोड भी बन जाएंगे, बच्चों का स्कूल में एडमिशन भी हो जाएगा, लेकिन कमल कौन खिलाएगा। और इसलिए, हम इस प्रकार से फोकस करके इन समाजों तक हम पहुंच सकते हैं क्या।

आज देश में वो लोग, जिन्होंने तीन-तीन, चार-चार पीढ़ी में पक्का घर नहीं देखा था। जिनका कोई अता-पता नहीं था। वो झुग्गी-झोपड़ी में जिंदगी गुजारते थे। वो फुटपाथ पर जिंदगी गुजारते थे। आज यहां तो कल वहां। ऐसा ही उनका बसेरा हुआ करता था। ऐसे चार करोड़ परिवारों को हमने एड्रेस दिया है। और जब जिंदगी में घर का पता तय हो जाता है ना, तो मंजिल का पता भी अपने आप बनने लग जाता है। जिनको घर मिला है। जिनकी जिंदगी में अब अपना एक स्थाई, पीढ़ियों के बाद, चार-चार, पांच-पांच पीढ़ी में कभी उन्होंने पक्के घर में जिंदगी नहीं गुजारी होगी। क्या यह मौका नहीं है दोस्तों उनके पास जाने का। लिस्ट लेकर के उनके पास जाना चाहिए कि नहीं जाना चाहिए। क्या उसको नहीं लगना चाहिए कि जिस कमल ने घर की दीवारें बनाई हैं। उस कमल को मैं अब दिल के अंदर जगह दे दूं। ये भाव उसके अंदर पैदा नहीं हो सकता है और इसलिए मैंने कहा कि हमारे लिए ये हमारा जो परिवार का विस्तार है, वो विस्तार अपने-आपको फैलाने का है, ऐसा नहीं है। अनेक लोगों को अपने-आप में समाने का है। हमारे भीतर समाहित करना है। हमारे सुख- दुख का साथी बनाना है। और तब जाकर के एक ऐसा भाजपा परिवार पूरे देश में निर्माण होता है, जो राष्ट्र के सपनों को पूरा करने के लिए एक कैटेलिक एजेंट के रूप में बहुत बड़ी सेवा कर सकता है।

और इसलिए इस सदस्यता अभियान को एक पवित्र कार्य मान करके हमने करना चाहिए। और जब कोई व्यक्ति सदस्य बनता है ना, जैसे कोई नया बच्चा स्कूल जाता है तो मां-बाप कैसा माहौल बनाते हैं। तिलक करेंगे, मिठाई खिलाएंगे, अच्छे कपड़े पहनाएंगे। उसी भाव से सदस्य बनना चाहिए। और मुझे अच्छा

लगा आज मुझे इस वातावरण में सदस्य बनने का मौका मिला। उत्सव के वातावरण में, मैं सदस्य बन रहा हूं। हम भी सदस्यता अभियान को उत्सव में परिवर्तित करें। सामने वाला हमारे परिवार में जुड़ रहा है, मतलब हम बड़े गौरव अनुभव कर रहे हैं कि आप हमारे यहां आए। हमें यह भाव नहीं लाना चाहिए कि हमने उपकार किया है तुम्हें मेंबर बना के। नहीं, आपने देश हित के लिए आगे आए हैं, हमारे लिए गौरव की बात है। आप हमारे एक साथी बन गए हैं। जीवन में इससे हमें और क्या धन्यता चाहिए।

आज जो 18-20 साल की उम्र के लोग हैं। उन्होंने वो अखबार नहीं पढ़े हैं, जिसकी हेडलाइन हुआ करती थी कि आज इतने लाख का घोटाला हो गया। आज इतने करोड़ का घोटाला हो गया। आज ये हो गया, ये हो गया, ये हो गया। आज जो 18-20 साल के बच्चे हैं उन्होंने ये पढ़ा नहीं है। उन्हें पता नहीं है कि 10 साल 11 साल के पहले देश के हालत क्या थे। उसने एक नया हिंदुस्तान देखा है और इसलिए उसके सपने भी वहीं से शुरू हो जाते हैं। और तब जाकर के हमारी जिम्मेवारी अनेक गुना बढ़ जाती है। क्या हमारा दायित्व नहीं है कि 18 से 25 साल की एक पूरी पीढ़ी को टारगेट करके, प्लान करके भारतीय जनता पार्टी से जोड़ें, ताकि उनको भी पता चले उनके माता-पिता ने कितने बुरे दिन देखे थे। उनके माता-पिता कितनी मुसीबतों से गुजरते थे। एक टेलीफोन का कनेक्शन लेने के लिए उनको एमएलए, एमपी के घर में चक्कर काटने पड़ते थे। एक गैस का कनेक्शन लेने के लिए उनको सालों तक इंतजार करना पड़ता था। कभी बिजली का कनेक्शन नहीं मिल पाता था। अंधेरे में जिंदगी गुजर जाती थी। बच्चों के लिए पढ़ाई का प्रबंध नहीं था। 18 से 25 साल के उन हमारे देश के बेटे-बेटियों ने अपने मां-बाप किस मुसीबतों से गुजरते थे, जिंदगी जीते थे, उससे वो अनभिज्ञ हैं। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता का काम है कि उसे भारतीय जनता पार्टी में हमारा मेंबर बनाकर के साथी बना करके उसे, हम कहां से कहां देश को ले गए हैं, ये आत्मविश्वास से भरने की जरूरत है।

18 से 25 का उम्र का व्यक्ति, मेरे लिए भाजपा के मतदाता जैसे सीमित स्वार्थी विचार से मैं उसकी चर्चा नहीं कर रहा। मेरे सामने 18-25 साल का उम्र का नौजवान, वो मेरे 2047 के सपने का सबसे बड़ी शक्ति का स्रोत है। 2047 में मेरा देश विकसित भारत बनेगा। आज जो 18-20, 22-25 साल का नौजवान है। वो उस समय 50 साल का हुआ होगा। उसकी जीवनी की सबसे ऊर्जावान समय देश विकसित भारत की यात्रा में होगा। उस

समय उसकी जीवन की यात्रा चलती होगी। एक इतना बढ़िया संजोग होगा कि उसका सामर्थ्य हमें विकसित भारत बनाने के सपने पूरे करने में काम आएगा। और इसलिए विकसित भारत के सपने पूरे करने के लिए जिस सामर्थ्य की मुझे जरूरत है। वह 18 से 25 साल का मेरा नौजवान है। उसे हमने इस विचार से जोड़ना है, नेशन फर्स्ट के लिए जीने के लिए जोड़ना है।

हम सिर्फ चुनावी मशीन नहीं है। हम वो खाद-पानी है, जो देशवासियों को सपनों को हम सींचा करते हैं। हम वो खाद पानी हैं, जो अपने-आप को खपा करके देश के सपनों को संकल्प और संकल्प को सिद्धि तक ले जाने की यात्रा में अपने-आपको डुबो देते हैं जी। और इसलिए भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता चुनाव, कुछ लोगों ने कह दिया है, मशीन ये तो चुनावी मशीन है भाजपा के पास। इससे बड़ा भाजपा का कोई अपमान नहीं हो सकता है। अरे चुनाव जीतना ये तो मेरी पार्टी के कार्यकर्ताओं के निरंतर पुरुषार्थ और प्रयास के परिणाम एक बाय प्रोडक्ट है। और इसलिए, हमें निरंतर नई पीढ़ियों को भी तैयार करना है। और एक बात मान के चलिए, जो ये सोचता है कोई आएगा तो मेरा क्या होगा। वो मान के चल रहे हैं, कोई आएगा तो नहीं, लेकिन तुम जहां हो, वहां से कहीं ऊपर जा नहीं सकते हो। जैसे-जैसे नीचे तुम नए लोगों को लाते जाओगे। वैसे-वैसे तुम ऊपर चले जाओगे। ऊपर जाने का तरीका यही है कि नीचे जितनी मजबूती देते हैं, उतना ऊपर जाने की गारंटी पक्की हो जाती है। कुछ लोगों की मानसिकता रहती है कि अरे यार, ये आएगा तो मेरा क्या होगा। वो आएगा तो आपकी मजबूती बढ़ेगी। आपकी इज्जत बढ़ेगी। और आपके द्वारा इच्छित कामों को परिणाम लेने में वो आपका साथी बन कर के काम करेगा।

लोकतांत्रिक मूल्यों को जीने वाली हमारी पार्टी है। हम व्यवस्था में भी लोकतंत्र को स्वीकार करते हैं। हम विचार में भी लोकतंत्र को स्वीकार करते हैं। हम संस्कार में भी लोकतंत्र को स्वीकार करते हैं। हमारा ये सदस्यता अभियान उस नई ऊंचाइयों को पार करने वाला बने। समाज के अधिकतम लोग के, मैं तो शुरू यही चाहूंगा, आप अपने इलाके में कि जिस पोलिंग बूथ में सी ग्रेड का पोलिंग बूथ मानते हैं ना। सदस्य अभियान वहीं से शुरू करो। जिसे आप पिछले दो-तीन चुनाव में जिसको सी ग्रेड का पोलिंग बूथ मानते हैं। जहां पर आपको मिनिमम वोट मिले हैं। सदस्यता अभियान वहीं शुरू करना चाहिए। चुनौती को चुनौती देना, ये तो भारतीय जनता पार्टी की रगों में है। जहां सरस सरलता है, जहां स्वीकार्यता है, जहां सम्मान है, आदर-सत्कार है, वहां तो मेंबरशिप करना आसान हो जाएगा। उसको करते भी रहना है, लेकिन जहां चुनौती है, वहीं दिलों में कमल खिलाना है। और हमारी कसौटी इसी में है।

आज देश के गरीब का सबसे अधिक विश्वास हमारी नीतियों में है, हमारे निर्णयों में है। हमने लिए हुए रास्ते से मिले परिणामों में है। और इसलिए हमें उस सामर्थ्य के साथ आगे बढ़ना है। मुझे पक्का विश्वास है नड्डा जी के नेतृत्व में पार्टी की संगठन की शक्ति पूरी तरह लगी है, तब ये सदस्यता अभियान पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़ेगी। ये सदस्यता अभियान अनेक नए बूथों तक पहुंचेगी। ये सदस्यता अभियान देश के सबसे पहले गांव है, वहां पर भाजपा का झंडा हम यहां से देख सकें , ऐसे बनेगी। ▪

शांति का टापू हमारा प्रदेश सबसे अग्रणी राज्य बनें - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश के विकास में 4 वर्गों यथा युवा, महिला, किसान और गरीब को आधार स्तम्भ के रूप में परिभाषित किया है।

मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी के विचारों से प्रेरणा लेकर चार मिशन, युवा शक्ति, गरीब कल्याण, किसान कल्याण और नारी सशक्तिकरण मिशन बनाकर काम करने जा रही है।

- **प्रधानमंत्री श्री मोदी के संकल्पों की सिद्धि में योगदान देने के लिए मध्यप्रदेश प्रतिबद्ध।**
- **प्रधानमंत्री जी के जन्मदिन 17 सितम्बर से सभी जिला अस्पतालों में आरंभ होंगे जन-आरोग्य केन्द्र।**
- **राज्य सरकार प्रदेश का बजट अगले 5 वर्ष में दोगुना करने के लक्ष्य पर कार्य कर रही है।**
- **प्रशासन जनोन्मुखी हो, नागरिक विकास में भागीदार बनें और गरीब कल्याण की योजनाएं अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।**
- **योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए तत्परता से कार्य किया जा रहा है।**
- **प्रदेश में ई-संपदा 2.0 सॉफ्टवेयर लागू - पूर्णत: डिजीटल प्रक्रिया से होगी रजिस्ट्री।**
- **भारतीय सभ्यता के संरक्षकों के योगदान को सहेजने के लिए स्थापित होंगे वीर भारत संग्रहालय।**
- **मध्यप्रदेश समृद्ध-साक्षर-स्वस्थ हो और शांति का टापू हमारा प्रदेश, देश में सबसे आगे बढ़े यही है कामना।**

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 78वें स्वतंत्रता दिवस की सभी प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए अपनी जान न्यौछावर करने वाले वीरों, राष्ट्रभक्तों और स्वतंत्रता सेनानियों का पुण्य-स्मरण करने का दिन है। प्रशासन जनोन्मुखी हो, नागरिक विकास और सामाजिक सद्भाव में भागीदार बनें, गरीबों के कल्याण की योजनाएं अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे ऐसी पुख्ता व्यवस्था करने के लिए हमारी सरकार कटिबद्ध है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था बनने के सफर को तय कर तीसरी

बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश, प्रधानमंत्री श्री मोदी के संकल्पों की सिद्धि में अपना योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रधानमंत्री की प्रेरणा से मिशन मोड में होंगे कार्य: बन रहे है 4 मिशन

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश के विकास में 4 वर्गों यथा युवा, महिला, किसान और गरीब को आधार स्तम्भ के रूप में परिभाषित किया है। मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी के विचारों से प्रेरणा लेकर चार मिशन, युवा शक्ति, गरीब कल्याण, किसान कल्याण और नारी सशक्तिकरण मिशन बनाकर काम करने जा रही है। मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस आगामी एक नवम्बर से यह मिशन अपना काम प्रारंभ करेंगे। युवा शक्ति मिशन में शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार, उद्यमिता, नेतृत्व विकास, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की कार्य योजना तैयार कर मिशन मोड में कार्य किया जाएगा। गरीब कल्याण मिशन में स्व-रोजगार योजनाएँ, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा आदि की दिशा में कार्य करेगा। नारी सशक्तिकरण मिशन के तहत बालिका शिक्षा, लाड़ली लक्ष्मी योजना, लाड़ली बहना योजना, लखपति दीदी योजना, महिला स्व-सहायता समूहों के सशक्तिकरण आदि कार्य सर्वोच्च प्राथमिकता से किए जाएंगे। किसान कल्याण मिशन में सरकार कृषि एवं उद्यानिकी को लाभ का व्यवसाय बनाने की दिशा में कार्य करेगी। किसानों को राहत प्रदान करने के साथ एवं कृषि की पैदावार बढ़ाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जाएंगे।

पूँजीगत व्यय में हुई 29 प्रतिशत की वृद्धि

मध्यप्रदेश का बजट अगले पांच वर्ष में दो गुना करने की दिशा में सरकार काम कर रही है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में पूँजीगत व्यय 60 हजार 689 करोड़ रुपये किया गया। वर्ष 2022-23 की तुलना में यह वृद्धि लगभग 29 प्रतिशत है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए पूँजीगत व्यय का लक्ष्य 64 हजार 738 करोड़ रुपये रखा गया है।

ए.आई., मशीन लर्निंग और कोडिंग जैसी नवीन तकनीकी शिक्षा के लिए कर रहे है विशेष प्रावधान

युवाओं को सिर्फ पारंपरिक शिक्षा तक सीमित नहीं रहना है, बल्कि ए.आई., मशीन लर्निंग और कोडिंग जैसी नवीन तकनीकों की भी शिक्षा प्राप्त करनी है। इसके लिए उच्च शिक्षा में 485 करोड़ रुपये का निवेश किया गया है। प्रदेश के 55 जिलों के एक-एक महाविद्यालयों को पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में परिवर्तित किया गया है। कौशल विकास को राज्य शासन ने प्राथमिकता पर रखा है। मुख्यमंत्री सीखो-कमाओं योजना में 8 हजार प्रशिक्षणार्थियों को 6 करोड़ 60 लाख रुपये का स्टायपेंड प्रदान किया गया है। नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख विद्यालयों में इन्क्यूवेशन केन्द्र स्थापित किए गए हैं। राज्य में 10 हजार करोड़ रुपये की लागत से 60 से अधिक नई औद्योगिक इकाईयों की स्थापना की जा रही है। इसमें 17 हजार से अधिक रोजगार के अवसर सृजित होंगे। सरकारी नौकरियों के रिक्त पदों को भरने के लिए तेजी से कार्य किया गया है। विगत 8 महीनों में शासकीय नौकरियों में 11 हजार से अधिक नियुक्ति पत्र जारी किए गए हैं।

संबल योजना का 1 करोड़ 67 लाख से अधिक पंजीकृत असंगठित श्रमिकों को मिल रहा है लाभ

प्रदेश में 1 करोड़ 67 लाख से अधिक पंजीकृत असंगठित श्रमिकों को मुख्यमंत्री जन-कल्याण संबल योजना का लाभ मिल रहा है। इसके लिए इस वर्ष 600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। योजना के दूसरे चरण में 30 हजार 500 से अधिक श्रमिक परिवारों को 670 करोड़ रुपये से अधिक की अनुग्रह सहायता राशि का अंतरण किया गया। प्रदेश सरकार ने इन्दौर की हुकुमचंद मिल के 4 हजार 800 श्रमिक परिवारों को 224 करोड़ रुपये की राशि का भुगतान किया गया। प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना में प्रदेश के 7 लाख 50 हजार हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया है। प्रधानमंत्री आवास योजना में ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 7 लाख मकानों का निर्माण कर दिया गया है। हर महीने 117 लाख पात्र परिवारों को निःशुल्क अनाज प्रदान किया जा रहा है।

प्रदेश में महिला-पुरुष अनुपात में हुआ सुधार

प्रदेश सरकार ने मुख्यमंत्री कन्या विवाह और निकाह सहायता योजना में वर्ष 2023-24 में 62 हजार 583 कन्याओं को विवाह के लिए सहायता राशि दी है। लाड़ली बहना योजना के अंतर्गत एक करोड़ 29 लाख बहनों के खाते में विगत आठ माह में 12 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि अंतरित की जा चुकी है। इस वर्ष रक्षाबंधन पर हर लाड़ली बहना के खाते में 250 रुपये की अतिरिक्त राशि जारी की गई है।

महिला स्व-सहायता समूहों को सुदृढ़ कर महिलाओं के आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। देश में प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना में प्रदेश प्रथम स्थान पर है। इस योजना में 2017 से 2024 तक 41 लाख 70 हजार बहनों को 1 हजार 150 करोड़ रुपये की राशि दी गई। प्रदेश की लगभग 90 लाख बहनों को उज्ज्वला गैस कनेक्शन दिए गए हैं। प्रदेश की 45 लाख 89 हजार बहनों के खाते में 450 रुपये में गैस सिलेण्डर की रीफिलिंग के लिए 118 करोड़ रुपये की राशि अंतरित की गई। प्रदेश में महिला-पुरुष के अनुपात में सुधार हो रहा है। यह अनुपात प्रति एक हजार पुरुषों पर 927 महिलाओं से बढ़कर 956 हो गया है।

जनजातीय वर्ग के समग्र विकास और कल्याण के लिए बजट में 23 प्रतिशत अधिक राशि का प्रावधान

जनजातीय वर्ग के समग्र विकास और कल्याण के लिए इस वित्तीय वर्ष में 40 हजार 804 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, यह पिछले बजट की तुलना में 23.4 प्रतिशत अधिक है। तेन्दूपत्ता संग्राहकों का मानदेय 3 हजार रुपये प्रति बोरा से बढ़ाकर 4 हजार रुपये कर दिया गया है। इसका सीधा लाभ लगभग 35 लाख संग्राहकों को हो रहा है। छात्रावासों के विद्यार्थियों की समस्याओं के निराकरण और मार्गदर्शन के लिए मित्र हेल्पलाइन आरंभ की गई है। साथ ही छात्रावासों में विद्यार्थियों को कम्प्यूटर शिक्षा भी उपलब्ध कराई जा रही है। हर गरीब और कमजोर व्यक्ति को समृद्धि और सुरक्षा की ओर ले जाना हमारा संकल्प है। योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए भी तत्परता से कार्य किया जा रहा है।

वर्ष 2028-29 तक सिंचाई क्षमता 1 करोड़ हेक्टेयर तक बढ़ाने का लक्ष्य

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत अब तक 80 लाख से अधिक किसान भाइयों के खाते में 1 हजार 643 करोड़ रुपये अंतरित किए गए। सरकार ने फसलों के उर्पाजन और मंडियों की व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए भी कई कदम उठाएं हैं। मिट्टी परीक्षण में कृषि स्नातक युवाओं के साथ पार्टनरशिप में कार्य करने की नीति बनाई गई है। कृषि प्र-संस्करण उद्योगों का जाल बिछाकर स्थानीय स्तर पर ही कृषि उपज का मूल्य संवर्धन करने की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है। श्रीअन्न उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए लागू रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत किसानों को प्रति क्विंटल 1 हजार रुपये की विशेष प्रोत्साहन राशि दी जा

रही है। संभाग स्तर पर 10 नर्सरी को हाईटेक बनाने की कार्यवाही जारी है। प्रदेश के 40 लाख किसानों को क्रेडिट कार्ड प्रदान किए गए हैं। प्रदेश में वर्ष 2028-29 तक सिंचाई क्षमता 1 करोड़ हेक्टेयर तक बढ़ाने का लक्ष्य है। केन-बेतवा लिंक परियोजना और पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना पर भी कार्य किया जा रहा है। साथ ही पशुपालकों को बिचौलियों के शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए 2024-25 में मुख्यमंत्री सहकारी दुग्ध उत्पादक प्रोत्साहन योजना में 150 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। प्रदेश में चैत्र माह से अगले वर्ष तक गौ-वंश रक्षा वर्ष मनाया जा रहा है।

प्रदेश में नवकरणीय ऊर्जा का उत्पादन बढ़कर हुआ 6 हजार 444 मेगावॉट

प्रदेश की उपलब्ध विद्युत क्षमता 22 हजार 823 मेगावाट है। गैर-कृषि उपभोक्ताओं को लगभग 24 घंटे और कृषि उपभोक्ताओं को लगभग 10 घंटे प्रतिदिन विद्युत प्रदाय की जा रही है। अटल कृषि ज्योति और अटल गृह ज्योति योजना में उपभोक्ताओं को लाभ दिया जा रहा है। प्रदेश की नवकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़कर 6 हजार 444 मेगावाट हो गई है। प्रदेश के 71 लाख से अधिक ग्रामीण परिवारों को जल जीवन मिशन के अंतर्गत घर में जल प्रदाय की सुविधा प्रदान की गई है।

9 हजार 800 एकड़ में विकसित होंगे 31 नए औद्योगिक क्षेत्र

प्रदेश के औद्योगिक विकास की ठोस पहल के रूप में रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव की श्रृंखला आरंभ की गई है। प्रदेश में 31 नए औद्योगिक क्षेत्र को 9 हजार 800 एकड़ भूमि प्रदान की जा रही है। उज्जैन में मेडिकल डिवाइज पार्क , मुरैना में मेगा लेदर पार्क , धार में पीएम मित्रा इंटीग्रेटेड मेगा टेक्सटाईल पार्क सहित प्रदेश में मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक पार्क के विकास के लिए पहल हुई है। भविष्य में प्रदेश में हीरा तराशने का कार्य भी किया जाएगा। नदियों से प्राकृतिक रेत की निर्भरता कम कर पत्थर से निर्मित रेत को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

61 हजार 629 मेधावी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई गई 450 करोड़ की राशि

शिक्षा की गुणवत्ता और व्यवस्था को सर्वसुविधा युक्त व सुदृढ़ बनाने के लिए पीएमश्री योजना के अंतर्गत प्रदेश में 416 विद्यालय संचालित हैं। साथ ही प्रथम चरण में 275 सीएम राइज स्कूल संचालित हो रहे हैं।

आजादी के वर्षगांठ का दिन सच्चे अर्थों में आजादी के फल को नागरिकों तक पहुंचाने के लिए दृढ़ संकल्पित होने का दिन है।

मध्यप्रदेश ने पिछले वर्षों में प्रगति और विकास की यात्रा में तेजी से कदम बढ़ाएं हैं, हमें अब इस यात्रा को निरंतरता देना है। प्रदेशवासियों की तरक्की और खुशहाली को देश- दुनिया के सामने मिसाल बनाना है।

मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा के सकल नामांकन अनुपात में राष्ट्रीय औसत से आगे निकल गया है। भारतीय संस्कृति के अनुरूप विश्वविद्यालय के कुलपति पद को अब कुलगुरु नाम दिया गया है। मध्यप्रदेश नई राष्ट्रीय नीति के क्रियान्वयन में भी अग्रणी रहा है। मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना में इस वर्ष 61 हजार 629 मेधावी विद्यार्थियों को 450 करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध कराई गई है।

प्रत्येक जिला अस्पताल में आयुष विंग बनाया जा रहा है

प्रदेश में चिकित्सा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए आगामी दो वर्ष में लगभग 25 हजार पदों को भरने की योजना है। प्रदेश में सिकल सेल एनीमिया की रोकथाम और बचाव के लिए सभी आदिवासी बहुल जिलों में जांच की व्यवस्था की जा रही है। प्रत्येक जिला अस्पताल में आयुष विंग बनाया जा रहा है। प्रदेश में प्रत्येक जिला अस्पताल में आगामी 17 सितम्बर को प्रधानमंत्री श्री मोदी के जन्म दिवस पर रेडक्रॉस से जन आरोग्य केन्द्र आरंभ किए जा रहे हैं।

श्रीकृष्ण पाथेय योजना का कार्य प्रगति पर

पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा आरंभ कर प्रदेश के 8 शहरों भोपाल, इन्दौर, जबलपुर, रीवा, उज्जैन, ग्वालियर, सिंगरौली और खजुराहो को वायु सेवा से जोड़ा गया है। पीएमश्री धार्मिक पर्यटन हेली सेवा का संचालन भी आरंभ किया गया है। भगवान श्रीकृष्ण के चरण प्रदेश के जिन-जिन स्थानों पर पड़े थे उन स्थानों के विकास के लिए श्रीकृष्ण पाथेय योजना की कार्य योजना बनाने का कार्य प्रगति स्तर पर है। श्रीराम वन गमन पथ के विकास के लिए चित्रकूट, पन्ना, सतना, अमरकंटक आदि स्थानों पर अनेक कार्य किए जा रहे हैं।वीर भारत संग्रहालय स्थापित कर भारतीय सभ्यता के संरक्षकों के योगदान को सहेजा जाएगा। इस वर्ष वीरांगना रानी दुर्गावती का 500वां जयंती उत्सव और देवी अहिल्या बाई का 300वां जयंती उत्सव विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से संपूर्ण प्रदेश में धूमधाम से मनाया जाएगा। मुख्यमंत्री तीर्थदर्शन योजना में इस वर्ष हवाई जहाज से तीर्थ यात्रा की शुरुआत हुई है।

पुलिस थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण से 2 हजार 200 गांव हुए लाभान्वित

प्रदेश में 15 अगस्त से ई-संपदा 2.0 सॉफ्टवेयर लागू किया जा रहा है, जिसके माध्यम से रजिस्ट्री पूर्णतः डिजीटल प्रक्रिया से होगी। प्रदेश में नगरों में बेहतर नागरिक सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर और जबलपुर में मेट्रोपॉलिटिन सिटी बनाई जाएगी। कानून और व्यवस्था की स्थिति को अधिक सुदृढ़ करने के लिए प्रदेश में पुलिस थानों की सीमाओं को पुनर्निर्धारण का ऐतिहासिक कार्य हुआ है। प्रदेश में 627 पुलिस थानों की सीमाएं फिर से तय की गईं हैं। इससे 2 हजार 200 गांवों को लाभ मिला है। सुशासन के उद्देश्य से परिवहन जांच चौकियों के स्थान पर वाहन चैंकिंग की नवीन व्यवस्था लागू की गई है। अब राज्य सरकार संभागीय और जिलास्तर पर भी चालक प्रशिक्षण केन्द्र प्रारंभ होंगे। प्रदेश में लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत 741 अधिसूचित सेवाओं का लाभ नागरिकों को समय-सीमा में मिल रहा है। इस व्यवस्था के तहत अब तक 10 करोड़ से अधिक आवेदनों का निराकरण किया जा चुका है।

प्रगति और विकास की यात्रा को निरंतरता देना हमारा कर्तव्य है

आजादी के वर्षगांठ का दिन सच्चे अर्थों में आजादी के फल को नागरिकों तक पहुंचाने के लिए दृढ़ संकल्पित होने का दिन है। मध्यप्रदेश ने पिछले वर्षों में प्रगति और विकास की यात्रा में तेजी से कदम बढ़ाएं हैं, हमें अब इस यात्रा को निरंतरता देना है। प्रदेशवासियों की तरक्की और खुशहाली को देश- दुनिया के सामने मिसाल बनाना है। कामना है कि मध्यप्रदेश समृद्ध-साक्षर-सशक्त हो और शांति का टापू हमारा प्रदेश सबसे अग्रणी बनें। ▪

विकसित भारत की संकल्प सिद्धि का अभियान

भाजपा अकेली ऐसी पार्टी है, जो वैचारिक प्रतिष्ठान और अधिष्ठान पर चलती है, और जो राष्ट्रवादी विचारों से जुड़ी है। हमें गर्व है कि हमारा दल देश का ऐसा एकमात्र राजनीतिक दल है, जिसने राष्ट्रहितों के साथ कभी समझौता नहीं किया, अन्य सभी दलों ने सत्ता प्राप्ति एवं स्वार्थ सिद्धि के लिए एक नहीं, अनेकों बार समझौता किया।

भाजपा के लिए राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का साधन नहीं है, समाज को अपेक्षित दिशा में प्रगति पथ पर ले जाना भी उसका पहला कार्य है। इसके लिये संगत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो संगत विचारधारा से प्राप्त होता है। भाजपा को छोड़कर आज भारत के सभी राजनैतिक दल विचारधारा की शून्यता के शिकार हैं।

विष्णुदत्त शर्मा

लोकतंत्र की भावना भारतीय जनता पार्टी संगठन की पंच निष्ठाओं में से एक है। यह भावना सिर्फ वैचारिक स्तर पर ही नहीं, अपितु पार्टी के आचरण और उसकी कार्यपद्धति में भी स्पष्ट दिखाई देती है।

संगठन पर्व भाजपा का सदस्यता अभियान इसी लोकतांत्रिक कार्य पद्धति का महत्वपूर्ण अंग है, जिसके माध्यम से नए सदस्य भाजपा परिवार से जुड़ते हैं और विचार को विस्तार देते हैं। ऐसे ही विशिष्ट कार्यशैली वाले अभियानों के बल पर भाजपा दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन चुका है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा सदस्यता ग्रहण किए जाने के उपरांत देश में 2 सितंबर से संगठन पर्व प्रारंभ हो चुका है।

हमारे पूर्वजों ने पार्टी संगठन तथा कार्यकर्ताओं को गढ़ने और तराशने के लिए जो त्याग और परिश्रम किया है, उसी के बल पर वर्तमान में मध्यप्रदेश के पार्टी संगठन को पूरे देश में आदर्श माना जाता है। प्रदेश के लाखों-लाख कार्यकर्ता अपनी इस पहचान को कायम रखते हुए संगठन पर्व में पार्टी के विस्तार को नई ऊंचाईयां प्रदान करने को तैयार हैं।

पंचनिष्ठाओं पर आधारित हमारा विचार और आधार

भाजपा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म-मानवदर्शन' को अपने वैचारिक, दर्शन के रूप में अपनाया है तथा सुशासन, विकास एवं सुरक्षा भाजपा की

प्राथमिकताएं हैं। पार्टी ने पांच प्रमुख सिद्धांतों के प्रति भी अपनी निष्ठा व्यक्त की है, जिन्हें 'पंचनिष्ठा' कहते हैं। यह पंचनिष्ठाएं राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय अखंडता, लोकतंत्र, सकारात्मक पंथ-निरपेक्षता (सर्वधर्म समभाव), गांधीवादी समाजवाद (सामाजिक-आर्थिक विषयों पर गाँधीवादी दृष्टिकोण द्वारा शोषण मुक्त समरस समाज की स्थापना) तथा मूल्य आधारित राजनीति है। भाजपा अकेली ऐसी पार्टी है, जो वैचारिक प्रतिष्ठान और अधिष्ठान पर चलती है, और जो राष्ट्रवादी विचारों से जुड़ी है। हमें गर्व है कि हमारा दल देश का ऐसा एकमात्र राजनीतिक दल है, जिसने राष्ट्रहितों के साथ कभी समझौता नहीं किया, अन्य सभी दलों ने सत्ता प्राप्ति एवं स्वार्थ सिद्धि के लिए एक नहीं, अनेकों बार समझौता किया। भाजपा के लिए राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का साधन नहीं है, समाज को अपेक्षित दिशा में प्रगति पथ पर ले जाना भी उसका पहला कार्य है। इसके लिये संगत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो संगत विचारधारा से प्राप्त होता है। भाजपा को छोड़कर आज भारत के सभी राजनैतिक दल विचारधारा की शून्यता के शिकार हैं। भाजपा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, एकात्म मानववाद तथा पंचनिष्ठाओं की संगत विचारधाराओं के आधार पर संगठन का नियमन कर रही है। शासन की नीति में भी इनका समुचित प्रतिबिम्बन होगा। भाजपा राष्ट्र प्रथम के साथ शोषित, वंचित, पीड़ित का उत्थान और सेवा कर रही है।

राष्ट्र सर्वोपरि के भाव से अनेकानेक ऐतिहासिक निर्णय हुए

हमारे विचार की संकल्प शक्ति की वजह से ही लगभग पांच सौ वर्षों की प्रतीक्षा के पश्चात् आज अयोध्या में भव्य व दिव्य राम मंदिर के निर्माण का सपना वास्तविकता बना है। हमारे पार्टी के संस्थापकों एवं असंख्य कार्यकर्ताओं ने श्रीरामलला को अपने मंदिर में विराजमान देखने हेतु अपनी चुनी हुई सरकारें भी न्यौछावर कर दीं, यह अपने विचारधारा पर अडिग रहने का एक उदाहरण मात्र है। हमारे पितृ-पुरुषों का संकल्प एवं एक देश में ''दो विधान, दो प्रधान, दो निशान नहीं चलेंगे'' की पूर्ति स्वरूप अनुच्छेद 370 को हटाने का ऐतिहासिक निर्णय हमारी ध्येय पूर्ति की यात्रा का और एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार एवं हमारे पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं देश के वर्तमान गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के कार्यकाल में भाजपा ने श्रद्धेय अटलजी की सरकार तथा तत्कालीन संगठन की नीतियों को दिशा देने के प्रयास के साथ ही अपनी विचारधारा अनुरूप राष्ट्र सर्वोपरि मानकर अनेकानेक ऐतिहासिक निर्णय किये हैं जो हमारी विचारों की स्पष्टता को प्रतिलक्षित करते हैं। हमारे संस्थापकों ने भारत को विश्व गुरू बनाने का जो सपना देखा था आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में उस ओर हम कर्तव्य परायणता के साथ अग्रसर हैं।

अंत्योदय का सपना साकार कर रही मोदी सरकार

हमारी ध्येय यात्रा में पूर्ण बहुमत की सरकार आते ही तीन तलाक कानून, नागरिकता संशोधन कानून, आपराधिक न्यायिक कानूनों में बदलाव के साथ ही पंडित दीनदयाल जी के अंत्योदय पर आधारित गरीब-कल्याण की योजनाओं के द्वारा करोड़ों गरीब लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने का काम भी हुआ है। हमारी केंद्र की सरकार ने अंत्योदय के सिद्धांत अनुरूप ही 50 करोड़ से अधिक लोगों के जनधन खाते खुलवाए और आयुष्मान, उज्ज्वला और पीएम आवास जैसी अनुकरणीय योजनाएं संचालित की गईं और देश खुले में शौच से मुक्त हुआ। घर-घर बिजली पहुंचाई गई, 10 करोड़ से अधिक परिवारों को गैस कनेक्शन दिए गए और हर घर शुद्ध पेयजल पहुँचाया। कुछ प्रमुख आधारभूत कार्य हैं जो देश की पूर्ववर्ती सरकारों के 50 वर्षों के शासनकाल की प्राथमिकता होनी चाहिए थी, किन्तु वोट बैंक की राजनीति की वजह से किसी एक वर्ग विशेष की चिंता ही उनकी राजनीति की प्राथमिकता रही है। वे तुष्टीकरण करते रहे, हमने संतुष्टीकरण करने का ईमानदार प्रयास किया। वास्तव में, केंद्र और राज्यों की हमारी सरकारें सुशासन के प्रति समर्पित रहती हैं क्योंकि यही लोकतंत्र की आवश्यकता है। भाजपा समाज के आखिरी छोर पर खड़े व्यक्ति के विकास की बात ही नहीं करती, बल्कि उसे चरितार्थ भी करती है। भाजपा के सिद्धांतों के अनुरूप प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पारदर्शिता के शासन से देश के लोकतंत्र को मजबूती दी है, जिससे सामान्य व्यक्ति आज गरिमा के साथ जीवनयापन कर रहा है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के साथ विश्व में एक बड़ी ताकत बनकर उभरा भारत

आज भारत ही नहीं पूरा विश्व देख रहा है कि एक राजनीतिक दल और उसका नेतृत्व किस प्रकार अपने उन संकल्पों को पूरा करने में सफल सिद्ध हुआ है, जिन्हें पूरा करना कभी असंभव सा लगता था। भाजपा सरकार में अपनी सांस्कृतिक पहचान के साथ विश्व में एक बड़ी ताकत बनकर उभरे भारत ने अपने पुराने स्वाभिमान और आत्मगौरव को भी वापस हासिल किया है। राष्ट्रीय संकट में जनकल्याण की कसौटी पर भी भारत ने लोकतांत्रिक व्यवस्था में भाजपा के नेतृत्व ने एक अनूठा उदाहरण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया है। कोरोना संकट में दुनिया के अनेक देशों ने जहाँ अपने नागरिकों को अपने हाल पर छोड़ दिया, वहीं भारत में भाजपा की मोदी सरकार ने अपने हर नागरिक के जीवन को अमूल्य मानते हुए उनके लिए अनाज के साथ दवाओं और अन्य वस्तुओं को उपलब्ध कराया। स्वदेशी वैक्सीन के आविष्कार में प्रेरक भूमिका तो निभाई और हर नागरिक के लिए उसे मुफ्त उपलब्ध कराने हेतु विश्व का सबसे बड़ा वैक्सिनेशन अभियान चलाकर दुनिया से अपने सामर्थ्य का लोहा भी मनवा लिया है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास ही भाजपा का मूलमंत्र बन गया है।

विकसित भारत हेतु सदस्यता अभियान

लगभग 44 वर्षों की इस यात्रा में आज हमारी भाजपा भारतीय राजनीति के जिस शीर्ष पर पहुंची है, वो हमारी विचारधारा के प्रति एकनिष्ठ और समर्पित भाव से बढ़ते रहने के कारण ही संभव हुआ है। अपने 45 वें वर्ष में दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक दल ने चार दशक पूर्व जो सपने देखे, वह तो साकार हुए ही हैं, साथ ही स्वाधीनता के अमृत वर्ष में मोदी जी के नेतृत्व में विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को अपना दिशा-सूत्र बना चुका है, जिसको पूरा करने का दारोमदार भी भारतीय जनता पार्टी के कोटि-कोटि कार्यकर्ताओं के कंधों पर है।

देश की सेवा के लिए अधिकाधिक लोगों को आव्हान और प्रेरित करना भाजपा का संगठन पर्व है। भारतीय जनता पार्टी का यह संगठन पर्व केवल सदस्यता आंकड़ों को बढ़ाने और सत्ता सुख भोगने के लिए नहीं है, बल्कि जनता का दुख-दर्द दूर करने के साथ देश का मान-सम्मान बढ़ाने के लिए है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने कहा था कि ''आज का विरोधी कल हमारा मतदाता बने, कल का मतदाता परसों भारतीय जनता पार्टी का सदस्य बने और परसों का सदस्य हमारा सक्रिय कार्यकर्ता बने''। निश्चित ही भाजपा अपनी संकल्प शक्ति, निष्ठा और नियति से इस लक्ष्य को पूरा करेगी तथा हमारे सदस्य देश के भविष्य-निर्माण की प्रक्रिया में अग्रणी भूमिका निभाते हुए संकल्प सिद्धि की ओर अग्रसरता में अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगे। ▪

(लेखक भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद हैं।)

विकसित भारत@2047 का समर्थन, सहयोग व भागीदारी सुनिश्चित करें

राष्ट्र निर्माण यात्रा में शामिल हों

जो परिवर्तन आप देखना चाहते है उसका आरंभ खुद से करें।

भाजपा की सदस्यता लें, भाजपा में शामिल हों

भाजपा एक मजबूत और विकसित भारत के निर्माण के लिए पूरी निष्ठा से प्रतिबद्ध है, जो भारत के लोगों के विश्वास और अटूट समर्थन के बिना अकल्पनीय है।

भाजपा से जुड़ें और उस अभूतपूर्व परिवर्तन का हिस्सा बनें जो समाज के सभी वर्गों के जीवन को बेहतरी की ओर बदल रहा है। आइए, मिलकर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का निर्माण करें और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व में नए भारत का उदय देखें।

सशक्त भाजपा - विकसित भारत
सदस्यता अभियान-2024

भाजपा का सदस्य बनने के लिए

88 00 00 2024

पर मिस्ड कॉल करें

भारतीय जनता पार्टी

सशक्त भाजपा, विकसित भारत

कभी नहीं जीतने वाली विधानसभाओं में सदस्यता अभियान से परचम फहरायेंगे-डॉ. मोहन यादव

पार्टी का कार्य करना देव कार्य कहा जाता है, यानी देवताओं का कार्य। भगवान श्री राम के युग में जो कार्य वानर सेना ने किया, श्री कृष्ण युग में वही कार्य बाल गोपाल ने किया, इस युग में वही कार्य भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को करना है।

पार्टी ने आजादी के बाद प्रदेश की लगभग 11 विधानसभा सीटें कभी नहीं जीती हैं। हमें संगठन पर्व के माध्यम से उन विधानसभाओं में पार्टी संगठन को मजबूत कर जीत का परचम फहराना है। पार्टी नेतृत्व में मध्यप्रदेश में डेढ़ करोड़ सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है। इस प्रदेश की जनसंख्या साढ़े आठ करोड़ से अधिक है। वर्तमान में प्रदेश में 4.30 करोड़ मतदाता हैं। ऐसे में डेढ़ करोड़ का लक्ष्य कोई बहुत बड़ा लक्ष्य नहीं है। हमारे सामने अभी आकाश बाकी है, 4.30 करोड़ मतदाताओं में डेढ़ करोड़ का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सरकार भी अपना कार्य कर रही है। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार सामाजिक सरोकारों के साथ सभी धर्म-समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के कार्यों को आगे बढ़ा रही है।

पार्टी का कार्य करना देव कार्य कहा जाता है, यानी देवताओं का कार्य। भगवान श्री राम के युग में जो कार्य वानर सेना ने किया, श्री कृष्ण युग में वही कार्य बाल गोपाल ने किया, इस युग में वही कार्य भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को करना है। इस काल में भारत माता की सेवा का कार्य ही देव कार्य है। भारतीय जनता पार्टी का सदस्य बनकर भारत माता की सेवा करने का अवसर हम सबको मिला है। मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता अपनी मेहनत से प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों को जीतकर इतिहास बना चुके हैं।

2023 के विधानसभा चुनाव में 163 सीटों में जीत कर इतिहास कायम कर चुके हैं। सरकार के कार्यों और संगठन शक्ति के साथ कार्य करते हुए पार्टी कार्यकर्ता हर लक्ष्य को पूरा करने में सक्षम हैं। भाजपा कार्यकर्ता पार्टी द्वारा तय किए गए सदस्यता अभियान के लक्ष्य को पूरा करेंगे। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रदेश सरकार के मंत्री, सभी सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधि व कार्यकर्ता पूरे मनोयोग से जुटेंगे। ▪

1.5 करोड़ नए सदस्य बनाने का संकल्प लेकर मैदान में उतरें: विष्णुदत्त शर्मा

छिंदवाड़ा चुनाव के पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने यह पूछा था कि हम छिंदवाड़ा कैसे जीतेंगे? तब मैंने उन्हें बताया था कि हमारा पार्टी संगठन और केंद्र व राज्य सरकारों की योजनाओं के हितग्राही हमारी ताकत हैं। इन्हीं के बल पर हम ये चुनाव जीतेंगे और हम जीत भी गए।

2014-15 के सदस्यता अभियान में भाजपा के सदस्यों की संख्या बढ़कर 11 करोड़ हो गई थी और भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन गई थी। 2019 में भाजपा की सदस्य संख्या 19 करोड़ हो गई थी। मध्यप्रदेश में भी पिछले संगठन पर्व में 96 लाख लोगों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की थी। इस बार हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व ने तय किया है कि देश में 10 करोड़ नए सदस्य बनाना है। मध्यप्रदेश में सभी की सहमति से 1.5 करोड़ नए सदस्य जोड़ने का लक्ष्य तय किया गया है। छिंदवाड़ा चुनाव के पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने यह पूछा था कि हम छिंदवाड़ा कैसे जीतेंगे? तब मैंने उन्हें बताया था कि हमारा पार्टी संगठन और केंद्र व राज्य सरकारों की योजनाओं के हितग्राही हमारी ताकत हैं। इन्हीं के बल पर हम ये चुनाव जीतेंगे और हम जीत भी गए। अब इसी ताकत के बल पर हम 1.5 करोड़ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य भी हासिल करेंगे। सभी लोग पूर्व योजना तथा पूर्ण योजना के साथ संकल्प लेकर मैदान में उतरें और लक्ष्य हासिल कर के इतिहास बनाएं। प्रदेश में हमारे 24 हजार जन प्रतिनिधि हैं और बूथ स्तर तक हमारे लाखों कार्यकर्ता हैं। कार्यशाला के साथ संगठन पर्व की शुरुआत हो रही है, उसमें यही कार्यकर्ता और जनप्रतिनिधि हमारा नेतृत्व करेंगे। विधानसभा चुनाव के समय हमारे कार्यकर्ता 10 प्रतिशत वोट बढ़ाने का लक्ष्य लेकर मैदान में उतरे थे और हमने हर बूथ पर 8 प्रतिशत वोट बढ़ाए। इसी तरह लोकसभा चुनाव में हमने प्रदेश की सभी 29 सीटें जीती और 1.2 प्रतिशत वोट बढ़ाए। यह हमारे कार्यकर्ताओं की मेहनत से ही संभव हुआ है। इन चुनावों में प्रदेश के जिन 15000 बूथों पर हमारा प्रदर्शन कमजोर रहा है, संगठन पर्व इस कमजोरी को मजबूती में बदलने का एक अवसर है। पार्टी कार्यकर्ता और जनप्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्रों में कमजोर बूथों की पहचान करें और अधिक से अधिक लोगों को पार्टी से जोड़कर कमजोरी को मजबूती में बदल दें। ▪

सदस्यता अभियान के कैलेंडर का पालन कर लक्ष्य प्राप्त करें- हितानंद जी

सभी जिलों में निर्धारित तिथियों पर कार्यशालाएं आयोजित की जाएं। कार्यक्रम का समय पर क्रियान्वयन हो। जिला अध्यक्ष, जिला प्रभारी और संभाग प्रभारी इसकी पूरी जिम्मेदारी संभालेंगे।

हमारी पहचान कार्यकर्ता निर्माण की है। यह स्व. कुशाभाऊ ठाकरे जी की कर्मभूमि है। उन्होंने पार्टी संगठन को मजबूत करने के लिए जो कार्य किया था, उसकी वजह से मध्यप्रदेश में पार्टी का संगठन इतना मजबूत है। हारे हुए बूथों, शक्ति केंद्रों और विधानसभाओं में सदस्यता अभियान को लेकर विशेष ध्यान रखा जाए। ▪

संगठन पर्व को लेकर मोर्चों एवं प्रकोष्ठों की संयुक्त बैठक

सदस्यता अभियान को सार्थक करेंगे: डॉ.मोहन यादव

संगठन पर्व हमारे लिए सबसे बड़ा त्यौहार है। हमें गर्व है कि विश्व की सबसे बड़ी पार्टी हमारी है। हम सामूहिक रूप से एक साथ मिलकर पार्टी के संगठन पर्व के अभियान को सार्थक करेंगे। हम हमेशा दो दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़े हैं। देश की संस्कृति और लोकतंत्र की निष्ठा के दृष्टिकोण ने हमें सबसे अलग खड़ा किया है। जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना से लेकर आज तक हमने लोकतंत्र को जिंदा रखा है। कांग्रेस ने हमेशा झूठ और चालाकियां की हैं। कांग्रेस संविधान के नाम पर देश को गुमराह करने का काम कर रही हैं। महात्मा गांधी ने कहा था आजादी के बाद कांग्रेस को राजनीतिक यात्रा नहीं करना चाहिए, लेकिन कांग्रेस नेताओं ने इसे नहीं माना और आज भी कांग्रेस सुधरने का नाम नहीं ले रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पिछले 10 सालों में भारत का मान-सम्मान बढ़ाया है। अभी हाल ही में यूक्रेन-रूस से बातचीत कर शांति वार्ता की दिशा में कदम बढ़ा दिया है। दुनिया भारत की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रही है। यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश लगातार प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है और दुनिया में भारत का डंका बज रहा है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां विकास नहीं हुआ हो और विकास ने रफ्तार नहीं पकड़ी हो। सदस्यता अभियान में हमें इस अनुकूलता का लाभ लेना चाहिए। ▪

लक्ष्य हासिल कर सकते हैं: विष्णुदत्त शर्मा

विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 163 सीटें हासिल की और लोकसभा चुनाव में 29 में से 29 सीटें जीतकर इतिहास रचा। इन चुनावों में हमारे मोर्चों और प्रकोष्ठ ने यह चरितार्थ कर दिया कि 'संगठन तंत्र की ताकत ही वैभव का चित्र सजाती है'। हमारे मोर्चे और प्रकोष्ठ समाज के विभिन्न वर्गों तक पार्टी की पहुंच बनाने के माध्यम हैं।

मध्यप्रदेश स्व. कुशाभाऊ ठाकरे जी, राजमाता सिंधिया जी, सुंदरलाल पटवा जी, कैलाश जोशी जी और प्यारेलाल खंडेलवाल जी जैसे कार्यकर्ताओं का प्रदेश है। यहां प्रत्येक कार्यकर्ता पार्टी की ताकत और उसका चेहरा है। सदस्यता अभियान में अगर हर कार्यकर्ता अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह करे, तो 1.5 करोड़ नए सदस्यों को जोड़ने का लक्ष्य बहुत आसानी से हासिल किया जा सकता है।

हमें हर बूथ पर 200 नए सदस्य जोड़ना है और इस काम में हर मोर्चे की भूमिका होनी चाहिए। इसके लिए हर मोर्चा और प्रकोष्ठ एडवांस प्लानिंग करें और ठीक तरीके से योजनाएं बनाएं। हमारे 25 हजार जनप्रतिनिधि हैं और सभी जनप्रतिनिधियों को अपने-अपने क्षेत्र में काम करना है। अनेक बूथों पर हम अधिक सशक्त नहीं हैं। वहां हमें इतने नए सदस्यों को जोड़ना है कि हर बूथ पर कमल खिले। हर समाज और वर्ग के लोग भाजपा से जुड़ना चाहते हैं। हमें उन तक पहुंचकर उन्हें पार्टी से जोड़ना है।

कांग्रेस पार्टी ने सत्ता में बने रहने के लिए कश्मीर में धारा 370 लगाई, जिसके विरोध में हमारे नेता डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर जनसंघ की नींव रखी। उन्होंने धारा 370 हटाये जाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। स्व. अटलजी की सरकार भाजपा का पूर्ण बहुमत न होने के कारण 370 नहीं हटा सकी, लेकिन मोदी जी की पूर्ण बहुमत वाली सरकार ने धारा 370 हटा दी। देश ने नक्सलवाद और आतंकवाद का तांडव देखा है। जनता भ्रष्टाचार और हर तरह के आतंकवाद से मुक्त हो तथा सामाजिक समरसता की स्थापना हो, भाजपा इसी के लिए बनी है। सदस्यता अभियान सत्ता प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि जिन क्षेत्रों में हम कमजोर हैं, उनमें मजबूती प्रदान करने के लिए है। देश में आज भी कई ताकतें विद्वेष फैला रही हैं। इन ताकतों पर प्रहार करने के लिए भाजपा का शक्तिशाली होना जरूरी है। इसलिए सदस्यता अभियान में पार्टी का विस्तार कर पार्टी की ताकत बढ़ाएं। ▪

भारतीय जनता पार्टी संगठन ने प्रदेश में डेढ़ करोड़ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है...

हर बूथ पर 200 सदस्य जोड़ें : हितानंद जी

भारतीय जनता पार्टी संगठन ने प्रदेश में डेढ़ करोड़ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। हर बूथ पर हमें पूरी शिद्दत के साथ काम करके 200 से ज्यादा सदस्य बनाना है। हमारा बूथ मजबूत होगा तो हमारी पार्टी मजबूत होगी और हम विधानसभा और लोकसभा की तरह बड़ी जीत हासिल करेंगे। लोकसभा चुनाव में करीब 15 हजार बूथों पर हम कमजोर रहे, इसलिए उन पर ज्यादा फोकस करना हर पदाधिकारी के साथ-साथ कार्यकर्ताओं की भी जिम्मेदारी रहेगी। हमारी सदस्यता जितनी ज्यादा होगी उतनी ही हमारी जीत सुनिश्चित होती जाएगी। प्रदेश संगठन को पार्टी में नवाचार करने और हमेशा अव्वल करने के तौर पर जाना जाता है। विश्वास है कि हर कार्यकर्ता पूरी मेहनत के साथ एक बार फिर लक्ष्य से ज्यादा सदस्यता दिलाकर देशभर में रिकॉर्ड बनाएगा। ▪

कदम मिलाकर चलना होगा

अटल बिहारी वाजपेयी

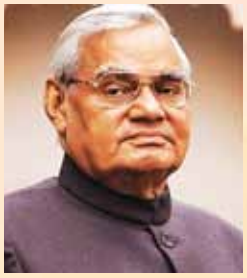

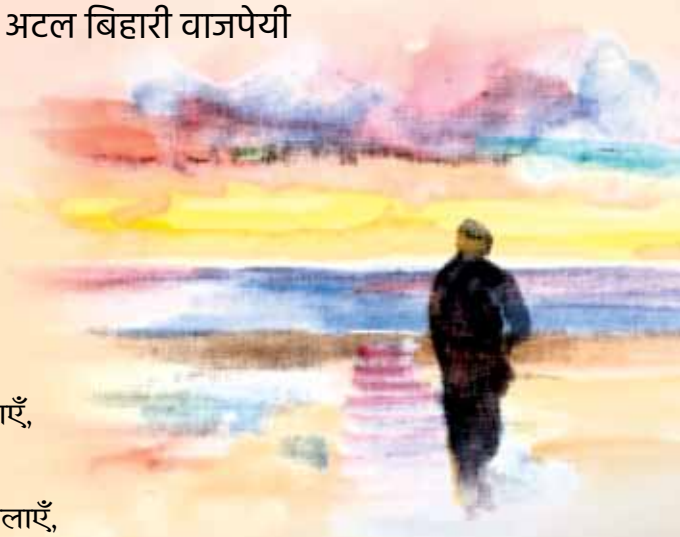

बाधाएँ आती हैं आएँ,
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,

पाँवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,

निज हाथों से हँसते-हँसते,
आग लगा कर जलना होगा।

कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रूदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,

उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,

उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।

कदम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कछार में, बीच धार में,

घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,

जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा।

कदम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अमर ध्येय पथ,
प्रगति चिरन्तन कैसा इति अथ,

सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न माँगते,
पावस बनकर ढलना होगा।

कदम मिलाकर चलना होगा।

कुश काँटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वन्चित यौवन,

नीरवता से मुखरित मधुवन,
पर-हित अर्पित अपना तन-मन,

जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।

कदम मिलाकर चलना होगा।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस संवेदनाओं को मजबूत करेगा- विष्णुदत्त शर्मा

तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों नें 1947 में देश का बंटवारा होने दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि मेरे शरीर के दो टुकड़े होंगे, इसके बाद देश का बंटवारा होगा, लेकिन पद की लालसा रखने वाले प्रधानमंत्री बनने के लिए 1947 में देश का बंटवारा होने दिया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने देश के बंटवारे का विरोध किया था, लेकिन उनकी बात को नहीं माना गया और देश के बंटवारे के बाद जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देकर देश से अलग करने का पूरा षडयंत्र रचा गया। इसके बाद डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने विरोध करते हुए कहा कि एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे और आंदोलन शुरू कर दिया। डॉ. मुखर्जी को धारा 370 के उल्लंघन के विरोध में गिरफ्तार किया गया और जेल के अंदर रहस्यमय तरीके से उनकी मौत हो गई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी कहा है कि देश के बंटवारे के दर्द को कभी भुलाया नहीं जा सकता। पद की लालसा वाले लोगों ने तुष्टिकरण की राजनीति करते हुए देश का बंटवारा हो जाने दिया और बंटवारे का दंश सहने वाले लोगों की पीड़ा को नहीं देखा। स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि जब भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनेगी, तब जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटा लिया जाएगा। श्री नरेन्द्र मोदी जी जब देश के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने सबसे पहले जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने का कार्य किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाकर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के संकल्प को पूरा किया है।

देश के बंटवारे के समय हमारे लाखों हिंदू भाई-बहनों का कत्लेआम करके लाशों को पाकिस्तान से आने वाली ट्रेनों में भरकर भारत भेजा गया था। हिंदू समाज की लाखों माताओं-बहनों के साथ पाकिस्तान में दरिंदगी की गई। देश की स्वतंत्रता से पहले हुए संघर्ष, बलिदान की याद में केंद्र सरकार ने प्रति वर्ष 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाने का निर्णय लिया है। यह स्मृति दिवस विभाजन के समय अपना बलिदान देने वालों के कष्ट व दर्द की याद दिलाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा है कि विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस देश के बंटवारे के समय बलिदान देने वालों को याद करने के साथ एकता व मानवीय संवेदना को मजबूत करने का कार्य करेगा। आजादी के तत्काल बाद सत्ता में आने वाले लोगों ने पद की लालसा में देश का बंटवारा होने दिया। लेकिन भाजपा तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों को बेनकाब करती रहेगी। एक कांग्रेस पार्टी थी जिसने देश का बंटवारा होने दिया और एक भाजपा है कि केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी यहां तक कहते हैं कि पाक अधिकृत कश्मीर हमारा है, हम उसे लेकर रहेंगे। अखंड भारत एक भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं है, यह सांस्कृतिक भारत है। आज देश के अंदर लोग इस दिशा में सोचते भी हैं।

आजादी के बाद वर्षों तक देश में शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी ने देश के बंटवारे के समय बलिदान देने वाले हिंदू समाज के लाखों लोगों को कभी याद नहीं किया। कांग्रेस आज भी देश में अंग्रेजों की तरह बांटों और राज करो की नीति पर कार्य कर रही है। आज बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ अमानवीय दुर्व्यवहार हो रहा है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान में रहने वाले हिंदुओं को धर्म के आधार पर प्रताड़ित किया जाता है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में रहने वाले हिंदू, सिख समाज के लोगों को भारत की नागरिकता देने के लिए सीएए कानून बनाते हैं तो कांग्रेस तुष्टिकरण की राजनीति शुरू कर देती है। सीएए कानून को लेकर कांग्रेस पार्टी भारत में रहने वाले मुस्लिम समाज को भ्रमित करने का कार्य कर रही है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी कहा कि बांग्लादेश में हिंदू समाज के लोगों की प्रताड़ना सहन नहीं की जाएगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी इस विषय पर लगातार नजर बनाए हुए हैं। ▪

श्री नरेन्द्र मोदी जी जब देश के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने सबसे पहले जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने का कार्य किया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाकर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के संकल्प को पूरा किया है।

अंतरिक्ष क्षेत्र में रिफॉर्म्स से युवाओं को फायदा

- अंतरिक्ष क्षेत्र में रिफॉर्म्स से देश के युवाओं को फायदा हुआ है।
- युवा राजनीति में आने के लिए उत्सुक हैं, सही अवसर और मार्गदर्शन की तलाश में हैं।
- ''हर घर तिरंगा'' अभियान ने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोया है।
- #MannKiBaat - पीएम मोदी ने बरेकुरी के ग्रामीणों और हूलॉक गिब्बन के बीच के दिल को छू लेने वाले संबंध को साझा किया।
- खिलौनों की रीसाइक्लिंग से पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है।
- आज भारत और विश्व स्तर पर संस्कृत के प्रति रुचि बढ़ रही है।
- बच्चों का पोषण देश की प्राथमिकता है।

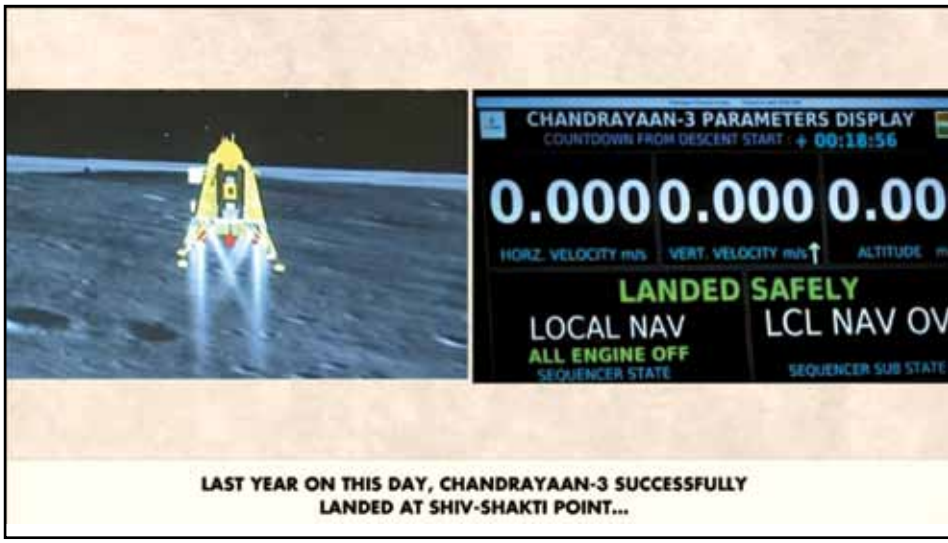

'मन की बात'

में, एक बार फिर, मेरे सभी परिवारजनों का स्वागत है। एक बार फिर बात होगी - देश की उपलब्धियों की, देश के लोगों के सामूहिक प्रयासों की। 21वीं सदी के भारत में, कितना ही कुछ ऐसा हो रहा है, जो विकसित भारत की नींव मजबूत कर रहा है। जैसे, इस 23 अगस्त को ही हम सब देशवासियों ने पहला National Space Day मनाया। मुझे विश्वास है कि आप सबने इस दिन को celebrate किया होगा, एक बार फिर चंद्रयान-3 की सफलता का जश्न मनाया होगा। पिछले वर्ष इसी दिन चंद्रयान-3 ने चाँद के दक्षिणी हिस्से में शिव-शक्ति Point पर सफलतापूर्वक landing की थी। भारत इस गौरवपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने वाला दुनिया का पहला देश बना।

देश के युवाओं को Space Sector Reforms से भी काफी फायदा हुआ है, इसलिए मैंने सोचा, कि क्यों न आज, 'मन की बात' में Space Sector से जुड़े अपने कुछ युवा साथियों से बात की जाए। मेरे साथ बात करने के लिए Spacetech Start-Up GalaxEye की टीम जुड़ रही है। इस Start-Up को IIT-Madras के alumni ने शुरू किया था। ये सारे नौजवान आज हमारे साथ Phone Line पर मौजूद हैं - सूयश, डेनिल, रक्षित, किशन और प्रनित। आइए, इन युवाओं के अनुभवों को जानते हैं।

प्रधानमंत्री जी : Hello!

सभी युवा : Hello

प्रधानमंत्री जी : नमस्ते जी!

सभी युवा (एक साथ): नमस्कार सर!

प्रधानमंत्री जी : अच्छा साथियो, मुझे ये देखकर खुशी होती है कि IIT-Madras के दौरान हुई आपकी दोस्ती आज भी मजबूती से कायम है। यही वजह है कि आपने मिलकर

21वीं सदी के भारत में, कितना ही कुछ ऐसा हो रहा है, जो विकसित भारत की नींव मजबूत कर रहा है। जैसे, इस 23 अगस्त को ही हम सब देशवासियों ने पहला National Space Day मनाया।

मुझे विश्वास है कि आप सबने इस दिन को celebrate किया होगा, एक बार फिर चंद्रयान-3 की सफलता का जश्न मनाया होगा। पिछले वर्ष इसी दिन चंद्रयान-3 ने चाँद के दक्षिणी हिस्से में शिव-शक्ति Point पर सफलतापूर्वक landing की थी। भारत इस गौरवपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने वाला दुनिया का पहला देश बना।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी समाज के हर क्षेत्र से ऐसे अनेकों लोग सामने आए थे, जिनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं थी। उन्होनें खुद को भारत की आजादी के लिए झोंक दिया था।

आज हमें विकसित भारत का लक्ष्य पाने के लिए एक बार फिर उसी spirit की जरूरत है। मैं अपने सभी युवा साथियों को कहूँगा इस अभियान से जरूर जुड़ें। आपका ये कदम अपने और देश के भविष्य को बदलने वाला होगा।

GalaxEye शुरू करने का फैसला किया। और मैं आज जरा उसके विषय में भी जानना चाहता हूँ। इस बारे में बताइए। इसके साथ ही ये भी बताएं कि आपकी Technology से देश को कितना लाभ होने वाला है।

सूयश : जी मेरा नाम सूयश है। हम लोग साथ में जैसा आपने बोला। सब लोग साथ में IIT-Madras में मिले। वहीं पर हम लोग सब पढ़ाई कर रहे थे, अलग-अलग years में थे। अपनी Engineering की। और उसी वक्त हम लोगों ने सोचा कि एक Hyperloop नाम का एक project है। जो हम लोग चाहते थे, साथ में करेंगे। उसी दौरान हमने एक team की शुरुआत की उसका नाम था 'आविष्कार हाइपरलूप' (Avishkar Hyperloop) जिसको लेकर हम लोग अमेरिका (America) भी गए। उस साल हम एशिया की इकलौती team थी, जो वहाँ गई और हमारे देश का जो झंडा है। उसको हमने फहराया। और हम top 20 teams में से थे जो out of around 1500 (Fifteen hundred) teams around the world।

प्रधानमंत्री जी : चलिए ! आगे सुनने से पहले इसके लिए तो बधाई दे दूँ।

सूयशः बहुत-बहुत धन्यवाद आपका। उसी उपलब्धि के दौरान हम लोगों की दोस्ती काफी गहरी हुई और इस तरीके के कठिन projects और tough projects करने का confidence भी आया। और उसी दौरान SpaceX को देख के और Space में जो आपने जो Open up किया एक privatization को जो 2020 में एक landmark decision भी आया। उसको लेकर हम लोग काफी excited थे। और मैं रक्षित को invite करना चाहूंगा बोलने के लिए कि हम क्या बना रहे हैं? और उसका फायदा क्या है?

रक्षितः जी, तो मेरा नाम रक्षित है। और इस technology से हमको कैसे लाभ होगा? मैं इसका उत्तर दूँगा।

प्रधानमंत्री जी : रक्षित आप उत्तराखंड में कहाँ से हैं?

रक्षित : सर मैं अल्मोड़ा से हूँ।

प्रधानमंत्री जी : तो बाल मिठाई वाले हैं आप?

रक्षित : जी सर। जी सर। बाल मिठाई हमारी favourite है।

प्रधानमंत्री जीः वो हमारा जो लक्ष्य सेन है, न, वो मेरे लिए regularly बाल मिठाई खिलाता रहता है मुझे। हाँ रक्षित बताइये।

रक्षितः तो हमारी जो ये technology है, ये अंतरिक्ष से बादलों के आर-पार देख सकती है और ये रात्रि में भी देख सकती है तो हम इससे देश के किसी भी कोने के ऊपर रोज एक साफ तस्वीर खींच सकते हैं। और ये जो data हमें आएगा इसका उपयोग हम दो क्षेत्रों में विकास करने के लिए करेंगे। पहला है, भारत को अत्यंत सुरक्षित बनाना। हमारे जो borders हैं और हमारे जो oceans हैं, seas हैं, उसके ऊपर रोज हम monitor करेंगे। और enemy की activities को monitor करेंगे और हमारी Armed Forces को intelligence provide करेंगे। और दूसरा है भारत के किसानों को सशक्त बनाना। तो हमने already एक product बनाया है भारत के झींगा किसानों के लिए जो अंतरिक्ष से उनके ponds के पानी की quality measure कर सकता है 1/10th of the current cost में। और हम चाहते हैं आगे जाते हुए हम दुनिया के लिए best quality satellite images generate करें और जो global issues है Global Warming जैसे इससे लड़ने के लिए हम दुनिया को best quality satellite data provide करें।

प्रधानमंत्री जीः इसका मतलब हुआ कि आपकी टोली जय जवान भी करेगी, जय किसान भी करेगी।

रक्षित : जी सर, बिल्कुल।

प्रधानमंत्री जीः आप इतना अच्छा काम कर रहे हैं, मैं ये भी जानना चाहता हूँ कि आपकी इस technology का precision कितना है?

रक्षित : सर हम less than 50 centimeter के resolution तक जा पाएंगे। और हम एक बार में approximately more than 300 square kilometer

area को image कर पाएंगे।

प्रधानमंत्री जीः चलिए, मैं समझता हूँ कि ये बात जब देशवासी सुनेंगे तो उनको बड़ा गर्व होगा। लेकिन मैं एक और सवाल पूछना चाहूँगा।

रक्षितः जी सर।

प्रधानमंत्री जी : Space ecosystem बहुत ही vibrant हो रहा है। अब आपकी team इसमें क्या बदलाव देख रहे हैं?

किशनः मेरा नाम किशन है, हमने ये GalaxEye शुरू होने के बाद से ही हमने IN-SPACe आते हुए देखा है और काफी सारे policies आते हुए देखे है ये, जैसे कि 'geo-Spatial Data Policy' and 'India Space Policy' और हमने पिछले 3 साल में काफी बदलाव आते हुए देखा है और काफी processes और काफी infrastructure और काफी facilities, ISRO के ये available और काफी अच्छे तरीके से हुए है। जैसे कि हम ISRO में जाके testing कर सकते हैं हमारे hardware का, ये काफी आसान तरीके से अभी हो सकता है। 3 साल पहले वो processes उतने नहीं थे और ये काफी helpful रहा है हमारे लिए और काफी और Start-Ups के लिए भी। और recent FDI policies की वजह से और ये facilities availability की वजह से और Start-Ups को आने के लिए काफी incentive है और ऐसे Start-Ups आ के काफी easily और काफी अच्छे से development कर सकते हैं ऐसी field में जिसमें usually development करना बहुत costly और time consuming रहता है। But current policies और IN-SPACe के आने के बाद काफी चीजें आसान हुई हैं Start-Ups के लिए। मेरे मित्र डेनिल चावड़ा भी इस पर कुछ बोलना चाहेंगे।

प्रधानमंत्री जी : डेनिल बताइए...

डेनिल : सर, हमने एक और चीज observe किया है, हमने देखा है कि जो engineering के छात्र हैं उनकी सोच में बदलाव देखा है। वो पहले बाहर जाकर higher studies pursue करना चाहते थे और वहाँ काम करना चाहते थे और space domain में, but अब क्यूँकि India में एक space eco system बहुत अच्छी तरीके से आ रहा है, तो इस कारण वो लोग India वापस आ के इस eco system के part बनना चाहते हैं। तो ये काफी अच्छा feedback हमें मिला है और हमारी खुद की कंपनी में कुछ लोग वापस आ के काम कर रहे हैं इसी वजह से।

प्रधानमंत्री जी : मुझे लगता है कि आपने

दोनों जो पहलू बताएँ, किशन ने और डेनिल दोनों ने, मैं जरूर मानता हूँ कि बहुत से लोगों का इस तरफ ध्यान नहीं गया होगा कि एक क्षेत्र में जब reform होता है, तो reform का कितने multiple effects होते हैं, कितने लोगों का लाभ होता है और जो आपके वर्णन से, क्योंकि आप उस field में है तो आपको ध्यान में जरूर आता है और आप ने observe भी किया है कि देश के नौजवान अब इस field में यहीं पर अपना भविष्य आजमाना चाहते हैं, अपने talent का उपयोग करना चाहते हैं। बहुत अच्छा observation है आपका। एक और सवाल में पूछना चाहूँगा, आप उन युवाओं को क्या संदेश देना चाहेंगे, जो Start-Ups और Space Sector में सफलता हासिल करना चाहते है।

प्रनित : मैं प्रनित बात कर रहा हूँ और मैं सवाल का जवाब दूंगा।

प्रधानमंत्री जीः हाँ प्रनित, बताइए।

प्रनितः सर, मैं अपने कुछ सालों के experience से दो चीजें बोलना चाहूँगा। सबसे पहली कि अगर अपने को Start-Up करना हो तो यही मौका है क्योंकि पूरी दुनिया में India आज वो देश है जो world का सबसे Fastest growing economy है और इसका मतलब ये हुआ कि अपने पास opportunity बहुत ज्यादा है। जैसे मैं 24 साल की उम्र में ये सोच के proud feel करता हूँ कि अगले साल हमारी एक satellite launch होगी। जिसके basis पर अपनी government कुछ major decisions लेगी और उसमें हमारा छोटा सा एक contribution है। ऐसी कुछ national impact की projects से काम करने को मिले, ये ऐसी industry और ये ऐसा time है, given की ये Space Industry आज, अभी तक start हो रही है। तो मैं अपने युवा दोस्तों को यही बोलना चाहूँगा कि ये opportunity न सिर्फ impact की, but also उनके खुद के financial growth की और एक global problem solve करने की है। तो हम आपस में यही बात करते हैं कि बचपन में हम ये बोलते थे कि बड़े हो कर actor बनेंगे, sportsmen बनेंगे, तो यहाँ ऐसे कुछ चीजें होती थी। but अगर आज हम ये सुने कि कोई बड़ा हो कर ये बोलता है कि मुझे बड़ा हो कर entrepreneur बनना है, space industry में काम करना है। ये हमारे लिए बहुत proud moment है कि हम इस पूरे transformation में एक छोटा सा part play कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री जी : एक प्रकार से प्रनित, किशन, डेनिल, रक्षित, सुयश जितनी मजबूत आपकी दोस्ती है उतना ही मजबूत आपका Start-Up भी है। तभी तो आप लोग इतना शानदार काम कर रहे हैं। मुझे कुछ साल पहले IIT-Madras जाने का अवसर मिला था और मैंने उस संस्थान के excellence को खुद अनुभव किया है। और वैसे भी IIT के संबंध में पूरे विश्व में एक सम्मान का भाव है और वहाँ से निकलने वाले हमारे लोग जब भारत के लिए काम करते हैं तो जरूर कुछ न कुछ

अच्छा contribute करते हैं। आप सभी को और Space Sector में काम करने वाले दूसरे सभी Start-Ups को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं, और आप पांचों साथियों से बात करके मुझे बहुत अच्छा लगा। चलिए, बहुत-बहुत धन्यवाद दोस्तों।

सुयश :Thank you so much !

इस साल मैंने लाल किले से बिना Political background वाले एक लाख युवाओं को Political system से जोड़ने का आव्हान किया है। मेरी इस बात पर जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई है। इससे पता चलता है कि कितनी बड़ी संख्या में हमारे युवा, राजनीति में आने को तैयार बैठे हैं। बस उन्हें सही मौके और सही मार्गदर्शन की तलाश है। इस विषय पर मुझे देश-भर के युवाओं के पत्र भी मिले हैं। social media पर भी जबरदस्त response मिल रहा है। लोगों ने मुझे कई तरह के सुझाव भी भेजे हैं। कुछ युवाओं ने पत्र में लिखा है कि ये उनके लिए वाकई अकल्पनीय है। दादा या माता-पिता की कोई राजनीतिक विरासत नहीं होने की वजह से, वो, राजनीति में चाहकर भी नहीं आ पाते थे। कुछ युवाओं ने लिखा कि उनके पास जमीनी स्तर पर काम करने का अच्छा अनुभव है, इसलिए, वे लोगों की समस्याओं को सुलझाने में मददगार बन सकते हैं। कुछ युवाओं ने ये भी लिखा कि परिवारवादी राजनीति, नई प्रतिभाओं का दमन कर देती है। कुछ युवाओं ने कहा कि इस तरह के प्रयासों से हमारे लोकतंत्र को और मजबूती मिलेगी। मैं इस विषय पर सुझाव भेजने के लिए हर किसी का धन्यवाद करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि अब हमारे सामूहिक प्रयास से ऐसे युवा, जिनका कोई Political background नहीं है, वे भी राजनीति में आगे आ सकेंगे, उनका अनुभव, और उनका जोश, देश के काम आएगा।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी समाज के हर क्षेत्र से ऐसे अनेकों लोग सामने आए थे, जिनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं थी। उन्होनें खुद को भारत की आजादी के लिए झोंक दिया था। आज हमें विकसित भारत का लक्ष्य पाने के लिए एक बार फिर उसी spirit की जरूरत है। मैं अपने सभी युवा साथियों को कहूँगा इस अभियान से जरूर जुड़ें। आपका ये कदम अपने और देश के भविष्य को बदलने वाला होगा।

'हर घर तिरंगा और पूरा देश तिरंगा' इस बार ये अभियान अपनी पूरी ऊंचाई पर रहा। देश के कोने-कोने से इस अभियान से जुड़ी अद्भुत तस्वीरें सामने आई हैं। हमने घरों पर तिरंगा लहराते देखा - School, College,

University में तिरंगा देखा। लोगों ने अपनी दुकानों, दफ्तरों में तिरंगा लगाया, लोगों ने अपने Desktop, Mobile और गाड़ियों में भी तिरंगा लगाया। जब लोग एक साथ जुड़कर अपनी भावना प्रकट करते हैं, तो इसी तरह हर अभियान को चार चाँद लग जाते हैं। अभी आप अपने TV Screen पर जो तस्वीरें देख रहे हैं, ये जम्मू-कश्मीर के रियासी की हैं। यहाँ 750 मीटर लंबे झंडे के साथ तिरंगा रैली निकाली गई और ये रैली दुनिया के सबसे ऊंचे चिनाब रेलवे ब्रिज पर निकाली गई। जिसने भी इन तस्वीरों को देखा, उसका मन खुशी से झूम उठा। श्रीनगर के डल लेक में भी तिरंगा यात्रा की मनमोहक तस्वीरें हम सबने देखी। अरुणाचल प्रदेश के ईस्ट कामेंग जिले में भी 600 फीट लंबे तिरंगे के साथ यात्रा निकाली गई। देश के अन्य राज्यों में भी इसी तरह, हर उम्र के लोग, ऐसी तिरंगा यात्राओं में शामिल हुए। स्वतंत्रता दिवस अब एक सामाजिक पर्व भी बनता जा रहा है, ये, आपने भी अनुभव किया होगा। लोग अपने घरों को तिरंगा माला से सजाते हैं। 'स्वयं सहायता समूह' से जुड़ी महिलाएं लाखों झंडे तैयार करती हैं। E-Commerce platform पर तिरंगे में रंगे सामानों की बिक्री बढ़ जाती है। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देश के हर कोने, जल-थल-नभ - हर जगह हमारे झंडे के तीन रंग दिखाई दिए। हर घर तिरंगा Selfie पर पाँच करोड़ से ज्यादा website भी पोस्ट की गई। इस अभियान ने पूरे देश को एक सूत्र में बांध दिया है और यही तो 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' है।

इंसानों और जानवरों के प्यार पर आपने कितनी सारी फिल्में देखी होंगी! लेकिन एक Real story इन दिनों, असम में बन रही है। असम में तिनसुकिया जिले के छोटे से गाँव बारेकुरी में, मोरान समुदाय के लोग रहते हैं और इसी गाँव में रहते हैं 'हूलॉक गिबन', जिन्हें यहाँ 'होलो बंदर' कहा जाता है। हूलॉक गिबन्स ने इस गाँव में ही अपना बसेरा बना लिया है। आपको जानकर आश्चर्य होगा - इस गाँव के लोगों का हूलॉक गिबन के साथ बहुत गहरा संबंध है। गाँव के लोग आज भी अपने पारंपरिक मूल्यों का पालन करते हैं। इसलिए उन्होंने वो सारे काम किए, जिससे गिबन्स के साथ उनके रिश्ते और मजबूत हों। उन्हें जब यह एहसास हुआ कि गिबन्स को केले बहुत पसंद हैं, तो उन्होंने केले की खेती भी शुरू कर दी। इसके अलावा उन्होंने तय किया कि गिबन्स के जन्म और मृत्यु से जुड़े रीति-रिवाजों को वैसे ही पूरा करेंगे, जैसा वे अपने लोगों के लिए करते हैं। उन्होंने गिबन्स को नाम भी दिए हैं। हाल ही में गिबन्स को पास से गुजर रहे बिजली के तारों के कारण मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे में इस गाँव के लोगों ने सरकार के सामने इस मामले को रखा और जल्द ही इसका समाधान भी निकाल लिया गया। मुझे बताया गया है कि अब ये गिबन्स तस्वीरों के लिए पोज भी देते हैं।

पशुओं के प्रति प्रेम में हमारे अरुणाचल

प्रदेश के युवा साथी भी किसी से पीछे नहीं हैं। अरुणाचल में हमारे कुछ युवा-साथियों ने 3-D printing technology का उपयोग करना शुरू किया है- जानते हैं क्यों? क्योंकि, वो, वन्य जीवों को सींगों और दांतों के लिए शिकार होने से बचाना चाहते हैं। नाबम बापू और लिखा नाना के नेतृत्व में ये टीम जानवरों के अलग-अलग हिस्सों की 3-D printing करती है। जानवरों के सींग हों, दांत हों, ये सब, 3-D printing से तैयार होते हैं। इससे फिर ड्रेस और टोपी जैसी चीजें बनाई जाती हैं। ये गजब का Alternative है जिसमें Bio-degradable material का उपयोग होता है। ऐसे अदभुत प्रयासों की जितनी भी सराहना की जाए कम है। मैं तो कहूँगा, अधिक से अधिक Start-ups इस क्षेत्र में सामने आएं ताकि हमारे पशुओं की रक्षा हो सके और परंपरा भी चलती रहे।

मध्य-प्रदेश के झाबुआ में, कुछ ऐसा शानदार हो रहा है, जिसे आपको जरूर जानना चाहिए। वहाँ पर हमारे सफाई-कर्मी भाई-बहनों ने कमाल कर दिया है। इन भाई-बहनों ने हमें 'Waste to Wealth' का संदेश सच्चाई में बदलकर दिखाया है। इस टीम ने झाबुआ के एक पार्क में कचरे से अदभुत Art Works तैयार किया है। अपने इस काम के लिए उन्होंने आसपास के क्षेत्रों से plastic waste, इस्तेमाल की हुई bottles, tyres और pipes इकट्ठा किए। इन Art Work में हेलीकॉप्टर, कार और तोपें भी शामिल हैं। खूबसूरत हैंगिंग flower pots भी बनाए गए हैं। यहाँ इस्तेमाल किए गए टायरों का उपयोग आरामदायक bench बनाने के लिए किया गया है। सफाई कामगारों की इस टीम ने Reduce, Reuse और Recycle का मंत्र अपनाया है। उनके प्रयासों से पार्क बहुत ही सुंदर दिखने लगा है। इसे देखने के लिए स्थानीय लोगों के साथ ही आसपास के जिलों में रहने वाले भी यहाँ पहुँच रहे हैं।

मुझे खुशी है कि आज हमारे देश में कई सारी Start-Up टीम भी पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए ऐसे प्रयासों से जुड़ रही है। e-Conscious नाम की एक टीम है, जो, plastic waste का उपयोग eco-friendly products बनाने में कर रही है। इसका idea उन्हें हमारे पर्यटन स्थलों, विशेषकर पहाड़ी इलाकों में फैले कचरे को देखकर के आया। ऐसे ही लोगों की एक और टीम ने Ecokaari नाम से start-up शुरू किया है। ये plastic waste से अलग-अलग खूबसूरत चीजें बनाते हैं।

Toy Recycling भी ऐसा ही एक और क्षेत्र है, जिसमें हम मिलकर काम कर सकते हैं। आप भी जानते हैं कि कई बच्चे कितनी जल्दी खिलौनों से bore हो जाते हैं, वहीं, ऐसे बच्चे भी हैं, जो उन्हीं खिलौनों का सपना सँजोए होते हैं। ऐसे खिलौने जिससे अब आपके बच्चे नहीं खेलते, उन्हें आप ऐसी जगहों पर दे सकते हैं, जहाँ, उनका उपयोग होता रहे। ये भी पर्यावरण की रक्षा का एक अच्छा रास्ता है। हम सब मिलकर प्रयास करेंगे तभी पर्यावरण भी मजबूत होगा और देश भी आगे बढ़ेगा।

कुछ ही दिन पहले हमने 19 अगस्त को रक्षाबंधन का पर्व मनाया। उसी दिन पूरी दुनिया में 'विश्व संस्कृत दिवस' भी मनाया गया। आज भी देश-विदेश में संस्कृत के प्रति लोगों का विशेष लगाव दिखता है। दुनिया के कई देशों में संस्कृत भाषा को लेकर तरह-तरह की research और प्रयोग हो रहे है। आगे की बात करने से पहले, मैं आपके लिए एक छोटी सी audio clip play कर रहा हूँ:

इस audio का संबंध यूरोप के एक देश लिथुएनिया से है। वहाँ एक प्रोफेसर Vytis Vidūnas ने एक अनूठा प्रयास किया है और इसे नाम दिया है - 'On the Rivers'. कुछ लोगों का एक group वहां नेरिस River के किनारे जमा हुआ और वहां उन्होंने वेदों और गीता का पाठ किया। यहाँ ऐसे प्रयास पिछले कुछ वर्षों से निरंतर जारी है। आप भी संस्कृत को आगे बढ़ाने वाले ऐसे प्रयासों को सामने लाते रहिए।

हम सबके जीवन में fitness का बहुत महत्व है। फिट रहने के लिए हमें अपने खानपान, रहन-सहन सब पर ध्यान देना होता है। लोगों को fitness के प्रति जागरूक करने के लिए ही ''फिट इंडिया अभियान'' की शुरुआत की गई। स्वस्थ रहने के लिए आज हर आयु, हर वर्ग के लोग, योग को अपना रहे हैं। लोग अपनी थाली में अब superfood millets यानि श्रीअन्न को जगह देने लगे हैं। इन सभी प्रयासों का उद्देश्य यही है कि हर परिवार स्वस्थ हो।

हमारा परिवार, हमारा समाज, और हमारा देश, और इन सबका भविष्य, हमारे बच्चों की सेहत पर निर्भर है और बच्चों की अच्छी सेहत के लिए जरूरी है कि उन्हें सही पोषण मिलता रहे। बच्चों का nutrition देश की प्राथमिकता है। वैसे तो उनके पोषण पर पूरे साल हमारा ध्यान रहता है, लेकिन एक महीना, देश, इस पर विशेष focus करता है। इसके लिए हर साल 1 सितम्बर से 30 सितम्बर के बीच पोषण माह मनाया जाता है। पोषण को लेकर लोगों को जागरूक बनाने के लिए पोषण मेला, एनीमिया (anemia) शिविर, नवजात शिशुओं के घर की visit, seminar, webinar जैसे कई तरीके अपनाए जाते हैं। कितनी ही जगहों पर आंगनवाड़ी के तहत mother and child committee की स्थापना भी की गई है। ये कमेटी कुपोषित बच्चों, गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं की माताओं को track करती है, उन्हें लगातार monitor किया जाता है, और उनके पोषण की व्यवस्था की जाती है। पिछले वर्ष पोषण अभियान को नई शिक्षा नीति से भी जोड़ा गया है। 'पोषण भी पढ़ाई भी' इस अभियान के द्वारा बच्चों के संतुलित विकास पर focus किया गया है। आपको भी अपने क्षेत्र में पोषण के प्रति जागरूकता वाले अभियान से जरूर जुड़ना चाहिए। आपके एक छोटे से प्रयास से, कुपोषण के खिलाफ, इस लड़ाई में बहुत मदद मिलेगी।

इस बार की 'मन की बात' में, इतना ही। 'मन की बात' में आपसे बात करके मुझे हमेशा बहुत अच्छा लगता है। ऐसा लगता है जैसे मैं अपने परिवारजनों के साथ बैठ करके हल्के-फुल्के वातावरण में अपने मन की बातें साझा कर रहा हूं। आपके मन से जुड़ रहा हूं। आपके feedback, आपके सुझाव, मेरे लिए बहुत ही मूल्यवान हैं। कुछ ही दिनों में अनेक त्योहार आने वाले हैं। मैं, आप सभी को उनकी ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ । जन्माष्टमी का त्योहार भी है। अगले महीने शुरुआत में ही गणेश चतुर्थी का भी पर्व है। ओणम का त्योहार भी करीब है। मिलाद-उन-नबी की भी बधाई देता हूं।

इस महीने 29 तारीख को 'तेलुगु भाषा दिवस' भी है। यह सचमुच बहुत ही अद्भुत भाषा है। मैं दुनिया-भर के सभी तेलुगु भाषियों को 'तेलुगु भाषा दिवस' की शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रपंच व्याप्तंगा उन्न,
तेलुगु वारिकि,
तेलुगु भाषा दिनोत्सव शुभाकांक्षलु।

मैं आप सभी से बारिश के इस मौसम में सावधानी बरतने के साथ ही 'Catch the Rain Movement'का हिस्सा बनने का भी आग्रह दोहराऊँगा। मैं आप सभी को 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की याद दिलाना चाहूँगा। ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं और दूसरों से भी इसका आग्रह करे।

आने वाले दिनों में पेरिस में Paralympics शुरू हो रहे हैं। हमारे दिव्यांग भाई-बहन वहां पहुचे हैं। 140 करोड़ भारतीय अपने athlete और खिलाड़ियों को cheer कर रहे है। आप भी #cheerybharat के साथ अपने खिलाड़ियों को प्रोत्साहन दीजिए। ▪

पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होल्कर

शिवप्रकाश

राज्य संचालन में अनेक गुण होने के बाद भी उनका शासन मूलत: धर्म अधिष्ठित शासन था। जहां उनके व्यक्तिगत जीवन में सेवा, त्याग -तपस्या एवं दान का महत्व था वहीं उन्होंने मंदिरों के जीर्णोद्धार, उनकी स्थायी आर्थिक व्यवस्था, यात्रियों के लिए विश्राम स्थल एवं अन्न क्षेत्र स्थापित कराए।

अपना राज्य भगवान शिव को समर्पित कर वह उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलातीं थी। हिमालय में स्थित भगवान बद्रीनाथ, केदारनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पश्चिम में द्वारिका से लेकर पूर्व में जगन्नाथ पुरी तक उनके द्वारा चलाएं सेवा कार्य आज भी प्रसिद्ध है।

पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होल्कर की संपूर्ण देश 300वीं जन्म-जयंती मना रहा है। अनेक सामाजिक संस्थाएं एवं महिला संगठन उनके जयंती वर्ष में उनके अलग-अलग गुणों को प्रकट करने वाले कार्यक्रम एवं गोष्ठियों का आयोजन कर रहे हैं। अनेक सरकारें भी महारानी अहिल्याबाई के सुशासन, नगरीय विकास, रोजगारपरक उद्योग नीति जैसे विषयों पर संवाद आयोजित कर रही हैं। महारानी का जीवन एवं शासन शैली संवेदनशील, सादगी, सहजता, धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय एवं लोक कल्याणकारी थीं। इन्हीं गुणों के कारण उनकी प्रजा उन्हें सदैव लोकमाता के रूप में देखती थी। उनके अप्रतिम गुणों को देखकर ब्रिटिश इतिहासकार जॉन केयस ने उन्हें ''दार्शनिक रानी'' (The Philosopher Queen) की उपाधि दी ।

अहिल्याबाई पिता मंकोजीराव शिंदे एवं माता सुशीलाबाई के परिवार में 31 मई 1725 को जन्मी थीं। उनका जन्मस्थान चौंडी (अहमदनगर, महाराष्ट्र) था, जो अब अहिल्यानगर के नाम से ही परिवर्तित हो गया है। धनगर जाति में जन्म लेने के बाद भी उनकी प्रतिभा को पहचानकर पेशवा बाजीराव एवं मल्हारराव होल्कर दोनों के परस्पर परामर्श के उपरान्त अहिल्याबाई का विवाह मल्हारराव ने अपने पुत्र खंडेराव के साथ संपन्न कराया। युद्ध में वीरगति प्राप्त होने के कारण उनको पति वियोग सहना पड़ा। अपने जीवन काल में उन्होंने श्वसुर मल्हार राव होल्कर, नवासे (पुत्री के पुत्र) एवं पुत्री सभी की असमय मृत्यु को देखा। इसी असहय वेदना को सहते-सहते वे स्वयं भी 70 वर्ष की उम्र में 1795 में संसार छोड़कर चली गई।

पति की मृत्यु के पश्चात अपने श्वसुर के आग्रह पर उन्होंने राजकाज सम्हालना प्रारंभ किया। उनका शासन प्रजावत्सल, न्यायप्रिय, सुशासन का प्रतीक था। अपनी धर्म के प्रति भक्ति के कारण उन्होंने अपनी राजधानी इंदौर से परिवर्तित कर पवित्र नदी नर्मदा के किनारे महेश्वर में स्थानांतरित की। उनका महेश्वर में राजधानी स्थानान्तरित करने का उद्देश्य था कि राज्य संचालन के साथ-साथ वह माँ नर्मदा की सेवा एवं आराधना कर सकें । माँ नर्मदा के किनारे उनका महल एक सर्वस्व त्यागी सन्यासिनी का महल था। जिसमें उन्होंने अपनी आयु के 28 वर्ष व्यतीत किए थे।

देश की सरकारें वर्तमान समय में अपनी आर्थिक नीतियों के केंद्र में समाज के जिस पिछड़े वर्ग के उत्थान एवं लघु उद्योग केंद्रित नीतियों का विचार करती हैं, आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने इस दूरदृष्टि का परिचय देते हुए 1745 में एक राजज्ञा द्वारा बुनकर, सुतार, कारीगरों से

महेश्वर में निवास करने का आग्रह किया। आर्थिक विकास की दिशा में उनके द्वारा की गई अनेक पहल में से एक महेश्वर में निर्मित साड़ी आज भी संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है, जिसे महेश्वरी साड़ी के नाम से जाना जाता है। इस उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए वह स्वयं भी वहाँ निर्मित वस्त्र पहनती थी एवं देश- विदेश से आने वाले महानुभावों को भेंट स्वरूप इन्हीं वस्त्रों को प्रदान भी करती थीं। प्राकृतिक आपदा में किसानों का सहयोग, सेना के आवागमन से होने वाली फसलों की क्षतिपूर्ति की व्यवस्था भी उन्होंने की थी। आत्मनिर्भरता के साथ-साथ शिक्षा का केंद्र महेश्वर बने इसके लिए विद्वानों, धर्माचार्यों को बुलाकर संस्कृत पाठशाला प्रारंभ करने का कार्य भी उनके द्वारा हुआ।

मल्हारराव के युद्ध अभियानों पर जाने के उपरांत महारानी अहिल्याबाई राज्य का संचालन भी कुशलता के साथ करती थीं। पत्राचार के माध्यम से मल्हारराव को अपने राज्य के समाचार भेजना एवं प्रत्युत्तर में राज्य संचालन के लिए सुझाव लेना यह उनकी नियमित प्रक्रिया थी। सेवा एवं रसद सामग्री का प्रबंध, कर वसूली आदि की व्यवस्था बड़ी निपुणता के साथ उन्होंने की थी।

महारानी स्त्री होने के बाद भी न केवल राज्य संचालन में निपुण बल्कि एक कुशल योद्धा भी थीं। बचपन में ही सैन्य शिक्षा, घुड़सवारी, शस्त्र संचालन उन्होंने सीखा था। राघोवा के आक्रमण के समय अपने राज्य की रक्षा के लिए कूटनीति का परिचय देते हुए उन्होंने पुराने संबंधों के आधार पर सिंधिया, भोंसले, गायकवाड आदि का सहयोग माँगा। राघोवा को उचित दंड देने के लिए 500 महिलाओं की सैन्य टुकड़ी को प्रशिक्षित भी किया। राघोवा को उनके द्वारा लिखा पत्र आज भी उनकी कूटनीतिक दूरदर्शिता को प्रकट करता है, जिसमें उन्होंने लिखा कि ''आप मुझे अबला समझकर राज्य हड़पने के लिए यहां आए हैं लेकिन मेरी शक्ति आपको युद्ध क्षेत्र में ज्ञात होगी। मैं महिला सेना के साथ आपका मुकाबला करूंगी। यदि मैं युद्ध में पराजित हो गई तब मेरी हंसी और आपकी प्रशंसा कोई नहीं करेगा और यदि आप युद्ध में हार गए तो आप कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।'' केवल राघोवा ही नहीं अपने राज्य की सीमाओं पर राजस्थान की ओर से मिलने वाली चुनौती का भी उन्होंने साहस के साथ सामना कर शत्रु को कुचलने का कार्य किया। सेना का संचालन, सैनिकों की चिकित्सा आदि भी उन्होंने कुशलता के साथ की। नाना फड़नवीस ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि ''अब तक देवी अहिल्याबाई की धार्मिकता की प्रशंसा तो हम सुनते आए हैं मगर हम नहीं जानते थे कि वह बहादुर भी हैं अपने शत्रुओं के दांत खट्टे कर सकती हैं।''

महारानी अहिल्याबाई का शासन कठोर एवं न्यायप्रिय शासन था । उन्होंने जाति-पाति, ऊँच - नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर चोरों के भय से जनता को मुक्ति प्रदान करने वाले नौजवान से अपनी पुत्री का विवाह किया। गरीब एवं कमजोर लोगों की सेवा में वह हमेशा तत्पर रहती थी। पति की मृत्यु के पश्चात् पति की संपत्ति पर पूर्ण अधिकार की व्यवस्था एवं स्त्री को दत्तक लेने का अधिकार देना यह उनके महिला सशक्तिकरण के उदाहरण हैं। उनके राज्य में रहने वाले भीलों (जनजाति) को अपराध मुक्त करने के लिए कृषि के औजार उपलब्ध कराकर सशक्त करने का कार्य उन्होंने किया। अपराध करने पर कठोर दंड एवं समस्याओं का त्वरित समाधान यह उनके शासन की विशेषता थी। पक्षपात रहित सभी को समान न्याय उनके शासन में था। इसके लिए अपने सेनापति के पुत्र को भी अपराध करने पर उन्होंने जेल में डलवा दिया था। प्रजा को न्याय दिलाने के लिए न्यायालय एवं न्यायाधीशों की नियुक्ति उन्होंने की थी। अपने राज्य कर्मचारियों के प्रति संवेदनशील एवं आत्मीयतापूर्ण व्यवहार, युद्ध में वीरगति पाने वाले सैनिक परिवारों के कल्याण की व्यवस्था को राज्य कोष से करने का प्रबंध उन्होंने किया था। अपने प्रति कठोर जीवन जीते हुए, प्रजा का पुत्र की तरह पालन, लोक कल्याण की योजनाएं एवं न्यायप्रियता के कारण उनको लोकमाता की उपाधि मिली ।

राज्य संचालन में अनेक गुण होने के बाद भी उनका शासन मूलतः धर्म अधिष्ठित शासन था। जहां उनके व्यक्तिगत जीवन में सेवा, त्याग -तपस्या एवं दान का महत्व था वहीं उन्होंने मंदिरों के जीर्णोद्धार, उनकी स्थायी आर्थिक व्यवस्था, यात्रियों के लिए विश्राम स्थल एवं अन्न क्षेत्र स्थापित कराए। अपना राज्य भगवान शिव को समर्पित कर वह उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलातीं थी। हिमालय में स्थित भगवान बद्रीनाथ, केदारनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पश्चिम में द्वारिका से लेकर पूर्व में जगन्नाथ पुरी तक उनके द्वारा चलाएं सेवा कार्य आज भी प्रसिद्ध है। तीर्थ स्थानों पर गंगाजल भिजवाने की व्यवस्था देश को एक सूत्र में बांधती दिखाई देती है। काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार सहित देश के लगभग समस्त तीर्थक्षेत्रों के विकास, हरिद्वार के गंगा घाटों सहित देश भर की नदियों के किनारे सैकड़ों स्थानों पर उन्होंने

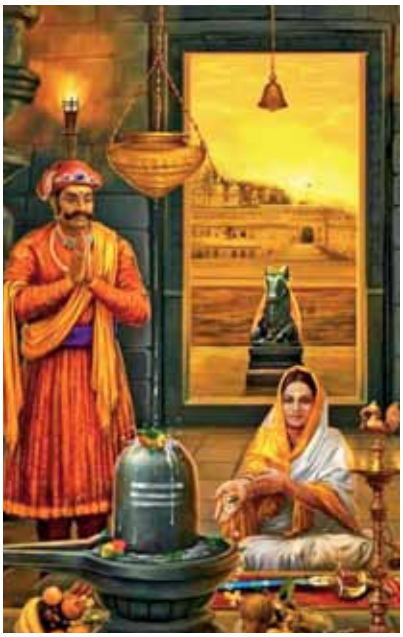

पक्के घाटों का निर्माण कराकर तीर्थ यात्रियों के लिए उचित स्नान की व्यवस्था करायी। समस्त अगणित धार्मिक कार्य वह अपने भाग में प्राप्त संपत्ति के द्वारा कराती थी। वह दीन- दुखी, गरीबों के लिए समर्पित निष्ठावान कर्मयोगी थी।

दक्षिण के प्रसिद्ध इतिहासकार रायबहादुर चिंतामणि विनायक वैद्य ने महारानी के संदर्भ में लिखा है कि वह लोकोत्तर स्त्री अपने अनेक गुणों के कारण महाराष्ट्र के लिए ही नहीं वरन् समूची मानव जाति के लिए भूषण रूप हुई है। इंदौर में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने उद्बोधन में कहा था कि ''मैं देवी अहिल्याबाई को भी नमन करता हूं उनका पुण्य स्मरण करता हूं। देवी अहिल्याबाई ने शासन संचालन में छोटी-छोटी आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी, उनके जीवन का एक-एक अध्याय इतना प्रेरक होता है कि आने वाली पीढ़ियों को उनसे सीख मिलती रहेगी।''

लोकमाता महारानी अहिल्याबाई के जीवन से प्रेरणा लेकर उनकी 300 वीं जयंती के अवसर पर हम उनके दिखाये मार्ग का अनुसरण करते हुए एकात्म, समृद्ध, समरस एवं शक्तिशाली भारत का निर्माण करें तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करते हुए विश्व कल्याण करने का संकल्प लें। महारानी अहिल्याबाई होल्कर को उनकी 300वीं जन्म-जयंती पर यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ▪

(लेखक- भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री हैं)

संपूर्ण शिक्षक बिरादरी के सम्मान का दिन है शिक्षक दिवस

स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने राजनीति में आने से पूर्व अपने जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत किये। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे।

उन्होंने अपना जन्म दिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किये जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी जिसके परिणामस्वरूप आज भी सारे देश में उनका जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के नाम से ही मनाया जाता है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति रहे। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, उत्कृष्ट वक्ता, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे। उन्हें 1931 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा सर की उपाधि प्रदान की गयी थी लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उसका औचित्य डॉ. राधाकृष्णन के लिये समाप्त हो चुका था। जब वे उपराष्ट्रपति बन गये तो स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1954 में उन्हें उनकी महान दार्शनिक व शैक्षिक उपलब्धियों के लिये देश का सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न प्रदान किया।

डॉ. राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरूतनी ग्राम में, जो तत्कालीन मद्रास से लगभग 64 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, 5 सितम्बर 1888 को हुआ था। जिस परिवार में उन्होंने जन्म लिया वह एक गरीब किन्तु विद्वान ब्राह्मण परिवार था। उनका जन्म स्थान भी एक पवित्र तीर्थस्थल के रूप में विख्यात रहा है। राधाकृष्णन के पुरखे पहले कभी सर्वपल्ली नामक ग्राम में रहते थे और 18वीं शताब्दी के मध्य में उनका परिवार तिरूतनी ग्राम आ गया था, लेकिन उनके पुरखे चाहते थे कि उनके नाम के साथ उनके जन्मस्थल के ग्राम का बोध भी सदैव रहना चाहिये। इसी कारण उनके परिजन अपने नाम के पूर्व सर्वपल्ली धारण करने लगे थे। उनके पिता का नाम सर्वपल्ली वीरास्वामी और माता का नाम सीतामा था।

स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने राजनीति में आने से पूर्व अपने

जन्म 5 सितम्बर 1888

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत किये। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे। उन्होंने अपना जन्म दिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किये जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी, जिसके परिणामस्वरूप आज भी सारे देश में उनका जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के नाम से ही मनाया जाता है। इन दिनों जब शिक्षा की गुणात्मकता का ह्रास होता जा रहा है और गुरुशिष्य सबन्धों की पवित्रता को ग्रहण लगता जा रहा है,उनका पुण्य स्मरण फिर एक नयी चेतना पैदा कर सकता है। 1962 में जब वे भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने, तो उनके कुछ शिष्य और प्रशंसक उनके पास गए। उन्होंने उनसे निवेदन किया की वे उनके जन्मदिन को एक समारोह के रूप में मनाना चाहते हैं। यह सुनकर उन्होंने कहा सिर्फ मेरा जन्मदिन मनाने से अच्छा अगर तुम इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाओगे तो मुझे ज्यादा खुशी होगी। तब से 5 सितम्बर सारे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। उनकी यह इच्छा अध्यापन के प्रति उनके प्रेम को दर्शाती है। वे जीवनभर अपने आप को शिक्षक मानते रहे।

शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. राधाकृष्णन ने जो अमूल्य योगदान दिया वह निश्चय ही अविस्मरणीय रहेगा। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। यद्यपि वे एक जाने-माने विद्वान, शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, राजनयिक, देशभक्त और शिक्षा शास्त्री थे, तथापि अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में अनेक उच्च पदों पर काम करते हुए भी वे शिक्षा के क्षेत्र में सतत योगदान करते रहे। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाये तो समाज की अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। डॉ. राधाकृष्णन कहा करते थे कि मात्र जानकारियाँ देना शिक्षा नहीं है। यद्यपि जानकारी का अपना महत्व है और आधुनिक युग में तकनीक की जानकारी महत्वपूर्ण भी है तथापि व्यक्ति के बौद्धिक झुकाव और उसकी लोकतान्त्रिक भावना का

भी बड़ा महत्व है। ये बातें व्यक्ति को एक उत्तरदायी नागरिक बनाती हैं। शिक्षा का लक्ष्य है ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरन्तर सीखते रहने की प्रवृत्ति। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को ज्ञान और कौशल दोनों प्रदान करती है तथा इनका जीवन में उपयोग करने का मार्ग प्रशस्त करती है। करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं।

वे कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती। एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण उनमें विद्यमान थे। उनका कहना था कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनाया जाना चाहिये जो सबसे अधिक बुद्धिमान हों। शिक्षक को मात्र अच्छी तरह अध्यापन करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिये अपितु उसे अपने छात्रों का स्नेह और आदर भी अर्जित करना चाहिये। सम्मान शिक्षक होने भर से नहीं मिलता, उसे अर्जित करना पड़ता है।

हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन

शिक्षा का प्रभाव जहाँ प्रत्येक व्यक्ति पर निश्चित रूप से पड़ता है, वहीं शैक्षिक संस्थान की गुणवत्ता भी अपना प्रभाव छोड़ती है। क्रिश्चियन संस्थाओं द्वारा उस समय पश्चिमी जीवन मूल्यों को विद्यार्थियों के भीतर काफी गहराई तक स्थापित किया जाता था। यही कारण है कि क्रिश्चियन संस्थाओं में अध्ययन करते हुए राधाकृष्णन के जीवन में उच्च गुण समाहित हो गये। लेकिन उनमें एक अन्य परिवर्तन भी आया जो कि क्रिश्चियन संस्थाओं के कारण ही था। कुछ लोग हिन्दुत्ववादी विचारों को हेय दृष्टि से देखते थे और उनकी आलोचना करते थे। उनकी आलोचना को डॉ. राधाकृष्णन ने चुनौती की तरह लिया और हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन करना आरंभ कर दिया। डॉ. राधाकृष्णन यह जानना चाहते थे कि वस्तुतः किस संस्कृति के विचारों में चेतनता है और किस संस्कृति के विचारों में जड़ता है, तब स्वाभाविक अंर्तप्रज्ञा द्वारा इस बात पर दृढ़ता से विश्वास करना आरंभ कर दिया कि भारत के दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले गरीब तथा अनपढ़ व्यक्ति भी प्राचीन सत्य को जानते थे। इस कारण राधाकृष्णन ने तुलनात्मक रूप से यह जान लिया कि भारतीय आध्यात्म काफी समृद्ध है और क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा हिन्दुत्व की आलोचनाएँ निराधार हैं। इससे इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति धर्म, ज्ञान और सत्य पर आधारित है जो प्राणी को जीवन का सच्चा सन्देश देती है।

गुरु का महत्व

गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।

कबीरदास द्वारा लिखी गई उक्त पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्व को वर्णित करने के लिए काफी हैं। भारत में प्राचीन समय से ही गुरु व शिक्षक परंपरा चली आ रही है। गुरुओं की महिमा का वृत्तांत ग्रंथों में भी मिलता है। जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता, क्योंकि वे ही हमें इस रंगीन खूबसूरत दुनिया में लाते हैं। उनका ऋण हम किसी भी रूप में उतार नहीं सकते, लेकिन जिस समाज में रहना है, उसके योग्य हमें केवल शिक्षक ही बनाते हैं। यद्यपि परिवार को बच्चे के प्रारंभिक विद्यालय का दर्जा दिया जाता है, लेकिन जीने का असली सलीका उसे शिक्षक ही सिखाता है। समाज के शिल्पकार कहे जाने वाले शिक्षकों का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता, क्योंकि वह ना सिर्फ विद्यार्थी को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं, बल्कि उसके सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है।

भारतीय संस्कृति

डॉ. राधाकृष्णन ने यह भली भाँति जान लिया था कि जीवन बहुत ही छोटा है परन्तु इसमें व्याप्त खुशियाँ अनिश्चित हैं। इस कारण व्यक्ति को सुख-दुख में समभाव से रहना चाहिये। वस्तुतः मृत्यु एक अटल सच्चाई है, जो अमीर गरीब सभी को अपना ग्रास बनाती है तथा किसी प्रकार का वर्ग भेद नहीं करती। सच्चा ज्ञान वही है जो आपके अन्दर के अज्ञान को समाप्त कर सकता है। सादगीपूर्ण सन्तोषवृत्ति का जीवन अमीरों के अहंकारी जीवन से बेहतर है, जिनमें असन्तोष का निवास है।

एक शान्त मस्तिष्क बेहतर है, तालियों की उन गड़गड़ाहटों से, जो संसदों एवं दरबारों में सुनायी देती हैं। वस्तुतः इसी कारण डॉ. राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को समझ पाने में सफल रहे, क्योंकि वे विभिन्न समुदायों द्वारा की गई आलोचनाओं के सत्य को स्वयं परखना चाहते थे। इसीलिए कहा गया है कि आलोचनाएँ परिशुद्धि का कार्य करती हैं। सभी माताएँ अपने बच्चों में उच्च संस्कार देखना चाहती हैं। इसी कारण वे बच्चों को ईश्वर पर विश्वास रखने, पाप से दूर रहने एवं मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करने का पाठ पढ़ाती हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने यह भी जाना कि भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों का आदर करना सिखाया गया है और सभी धर्मों के लिये समता का भाव भी हिन्दू संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान को समझा और उसके काफी नजदीक हो गये।

जीवन दर्शन एक आदर्श शिक्षक

डॉ. राधाकृष्णन समस्त विश्व को एक शिक्षालय मानते थे। उनकी मान्यता थी कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जाना संभव है। इसीलिए समस्त विश्व को एक इकाई समझकर ही शिक्षा का प्रबन्धन किया जाना चाहिये। एक बार ब्रिटेन के एडिनबरा विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था कि मानव की जाति एक होनी चाहिये।

मानव इतिहास का सम्पूर्ण लक्ष्य मानव जाति की मुक्ति है। यह तभी संभव है जब समस्त देशों की नीतियों का आधार विश्व शान्ति की स्थापना का प्रयत्न करना हो। वे अपनी बुद्धिमतापूर्ण व्याख्याओं, आनन्ददायी अभिव्यक्तियों और हँसाने व गुदगुदाने वाली कहानियों से अपने छात्रों को मन्त्रमुग्ध कर दिया करते थे। वे छात्रों को प्रेरित करते थे कि वे उच्च नैतिक मूल्यों को अपने आचरण में उतारें। वे जिस विषय को पढ़ाते थे, पढ़ाने के पहले स्वयं उसका अच्छा अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गभीर विषय को भी वे अपनी शैली की नवीनता से सरल और रोचक बना देते थे।

मात्र ढाई हजार वेतन!!

1952 से 1962 तक देश के उपराष्ट्रपति रहने के बाद सन् 1962 में वे भारत के राष्ट्रपति चुने गए। उन दिनों राष्ट्रपति का वेतन 10 हजार रुपए मासिक था लेकिन डॉ. राधाकृष्णन मात्र ढाई हजार रुपए ही लेते थे और शेष राशि प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय राहत कोष में जमा करा देते थे। देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचकर भी वे सादगी भरा जीवन बिताते रहे। ▪

देश सेवा में डॉ. विश्वेश्वरैया

अभियंता दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 15 सितम्बर को मनाया जाता है। इसी दिन भारत के महान अभियंता और भारतरत्न प्राप्त मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म दिवस होता है। आज भी मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को आधुनिक भारत के विश्वकर्मा के रूप में बड़े सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। अपने समय के बहुत बड़े इंजीनियर, वैज्ञानिक और निर्माता के रूप में देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को भारत ही नहीं, वरन विश्व की महान प्रतिभाओं में गिना जाता है।

एक सौ एक वर्ष का यशस्वी जीवन जीने वाले मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया सदैव भारतीय आकाश में अपना प्रकाश बिखेरते रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 1968 ई. में डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जन्म तिथि को अभियंता दिवस घोषित किया गया था। तब से हर वर्ष इस पुनीत अवसर पर सभी भारतीय अभियंता एकत्रित होकर उनकी प्रेरणादायिनी कृतित्व एवं आदर्शों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित कर अपने कार्यकलापों का आत्म विमोचन करते हैं और इसे संकल्प दिवस के रूप में मनाने का प्रण लेते हैं। संकल्प अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों का समर्पित भाव से निर्वहन करते हैं।

भारत की आजादी के बाद नये भारत के निर्माण और विकास में प्रतिभावान इंजीनियरों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गांव एवं शहरों के समग्र विकास के लिए सड़कों, पुल-पुलियों और सिंचाई जलाशयों सहित अधोसंरचना निर्माण के अनेक कार्य हो रहे हैं। हमारे इंजीनियरों ने अपनी कुशलता से इन सभी निर्माण कार्यों को गति प्रदान की है। राज्य और देश के विकास में इंजीनियरों के इस योगदान के साथ-साथ अभियंता दिवस के इस मौके पर भारतरत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की प्रेरणादायक जीवन गाथा को भी याद किया जाता है। विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर, जो कि अब कर्नाटक में है, के मुद्देनाहल्ली नामक स्थान पर 15 सितम्बर, 1861 को हुआ था। बहुत ही गरीब परिवार में जन्मे विश्वेश्वरैया का बाल्यकाल बहुत ही आर्थिक संकट में व्यतीत हुआ था। उनके पिता वैद्य थे। वर्षों पहले उनके पूर्वज आंध्र प्रदेश के मोक्षगुंडम नामक स्थान से मैसूर में आकर बस गये थे। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने प्रारंभिक शिक्षा जन्म स्थान से ही

पूरी की। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने बंगलूर के सेंट्रल कॉलेज में दाखिला लिया। लेकिन यहाँ उनके पास धन का अभाव था। अतः उन्हें ट्यूशन करना पड़ा। विश्वेश्वरैया ने 1881 में बी.ए. की परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त किया। इसके बाद मैसूर सरकार की मदद से इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए पूना के साइंस कॉलेज में दाखिला लिया। 1883 की एल.सी.ई. व एफ.सी.ई. (वर्तमान समय की बीई उपाधि) की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके अपनी योग्यता का परिचय दिया। इसी उपलब्धि के चलते महाराष्ट्र की सरकार ने इन्हें नासिक में सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया था।

दक्षिण भारत के मैसूर, कर्नाटक को एक विकसित एवं समृद्धशाली क्षेत्र बनाने में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का अभूतपूर्व योगदान रहा है। जब देश स्वंतत्र नहीं था, तब कृष्ण राज सागर बांध, भद्रावती आयरन एंड स्टील वर्क्स, मैसूर संदल ऑयल एंड सोप फैक्टरी, मैसूर विश्वविद्यालय, बैंक ऑफ मैसूर समेत अन्य कई महान् उपलब्धियां मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के कड़े प्रयास से ही संभव हो पाई। इसीलिए इन्हें कर्नाटक का भगीरथ भी कहते हैं। जब वह केवल 32 वर्ष के थे, उन्होंने सिंधु नदी से सुक्कुर कस्बे को पानी की पूर्ति भेजने का प्लान तैयार किया, जो सभी इंजीनियरों को पसंद आया। सरकार ने सिंचाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के उपायों को ढूंढने के लिए समिति बनाई। इसके लिए विश्वेश्वरैया ने एक नए लॉक सिस्टम को ईजाद किया। उन्होंने स्टील के दरवाजे बनाए, जो कि बांध से पानी के बहाव को रोकने में मदद करता था। उनके इस सिस्टम की प्रशंसा ब्रिटिश अधिकारियों ने मुक्त कंठ से की थी। आज यह प्रणाली पूरे विश्व में प्रयोग में लाई जा रही है। विश्वेश्वरैया ने मूसा व इसा नामक दो नदियों के पानी को बांधने के लिए भी प्लान तैयार किए। इसके बाद उन्हें मैसूर का चीफ इंजीनियर नियुक्त किया गया। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य भी हैं, जो आज किसी भी अभियन्ता को प्रेरणा प्रदान करने की अभूतपूर्व सामर्थ्य रखते हैं।

जब भारत में अंग्रेजों का शासन था, खचाखच भरी एक रेलगाड़ी चली जा रही थी। यात्रियों में अधिकतर अंग्रेज थे। एक डिबे में एक भारतीय मुसाफिर गंभीर मुद्रा में बैठा था। सांवले रंग और मंझले कद का वह यात्री साधारण वेशभूषा में था, इसलिए वहाँ बैठे अंग्रेज उसे मूर्ख और अनपढ़ समझ रहे थे और उसका मजाक उड़ा रहे थे। पर वह व्यक्ति किसी की बात पर ध्यान नहीं दे रहा था। अचानक उस व्यक्ति ने उठकर गाड़ी की जंजीर खींच दी।

तेज रफ्तार में दौड़ती वह गाड़ी तत्काल रुक गई। सभी यात्री उसे भलाबुरा कहने लगे। थोड़ी देर में गार्ड भी आ गया और उसने पूछा 'जंजीर किसने खींची है?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया 'मैंने खींची है।' कारण पूछने पर उसने बताया 'मेरा अनुमान है कि यहाँ से लगभग एक फर्लांग की दूरी पर रेल की पटरी उखड़ी हुई है।' गार्ड ने पूछा 'आपको कैसे पता चला?' वह बोला 'श्रीमान! मैंने अनुभव किया कि गाड़ी की स्वाभाविक गति में अंतर आ गया है। पटरी से गूंजने वाली आवाज की गति से मुझे खतरे का आभास हो रहा है।'

गार्ड उस व्यक्ति को साथ लेकर जब कुछ दूरी पर पहुँचा तो यह देखकर दंग रहा गया कि वास्तव में एक जगह से रेल की पटरी के जोड़ खुले हुए थे और सब नटबोल्ट अलग बिखरे पड़े थे। दूसरे यात्री भी वहाँ आ पहुँचे। जब लोगों को पता चला कि उस व्यक्ति की सूझबूझ के कारण उनकी जान बच गई है तो वे उसकी प्रशंसा करने लगे। गार्ड ने पूछा 'आप कौन हैं?' उस व्यक्ति ने कहा 'मैं एक इंजीनियर हूँ और मेरा नाम है डॉ. एम. विश्वेश्वरैया।' नाम सुन कर सब स्तब्ध रह गए। दरअसल उस समय तक देश में डॉ. विश्वेश्वरैया की ख्याति फैल चुकी थी। लोग उनसे क्षमा मांगने लगे। डॉ. विश्वेश्वरैया का उत्तर था 'आप सब ने मुझे जो कुछ भी कहा होगा, मुझे तो बिल्कुल याद नहीं है।' ▪

राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

पं. दीनदयाल उपाध्याय

प्राचीन साहित्य में कहीं-कहीं जहाँ राजा का वर्णन किया गया है और राज्यधर्म का उसको उपदेश दिया गया है, वहाँ उसे अत्यन्त महत्वशाली अवश्य बताया गया है। यह शायद इसलिए कि उसे अपने कर्तव्य का भान रहे, अपने दायित्व की जानकारी रहे। वह संपूर्ण समाज जीवन के ऊपर प्रभाव डालने वाला व्यक्ति है। उसे अपने ऊपर पूरा ध्यान देना चाहिए। महाभारत में भीष्म ने यही बात कहीं। राजा काल का कारण है अथवा काल राजा का कारण? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने बिल्कुल निश्चयात्मक रूप से बतलाया। **राजा कालस्य कारणम् कि** राजा ही काल का कारण है। अब इसमें से कुछ लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि उन्होंने राजा को ही सर्वोपरि माना है, परन्तु यह बात सत्य नहीं है। भीष्म ने राजा को इतना महत्व देते हुए भी विधि से ऊपर नहीं बताया। राजा का प्रभाव होता है सत्य है और राजा, समाज में धर्म रहे, इस बात को देखने की जिम्मेदारी लेकर चलता है, यह भी सत्य है। किन्तु राजा धर्म का निर्माण करने वाला नहीं होता। धर्म का लोग पालन करें यही बात वह देखने वाला है। यानि एक प्रकार से कहा जाय तो राजा का स्थान उतना ही है, जितना आज के समय में कार्यपालिका का होता है।

जिम्मेदार कार्यपालिका

कार्यपालिका आज भी कानून नहीं बनाती, परन्तु राज्य ठीक प्रकार से चले यह जिम्मेदारी कार्यपालिका पर होती है। अगर कार्यपालिका ठीक न चले तो कानून की कैसी धज्जियां उड़ती हैं, वह आज हम अच्छी तरह से देख रहे है। आज भी हम कह सकते हैं कार्यपालिका **कालस्य कारणम् कि** आज जो बुराइयाँ चल रही हैं उसमें कार्यपालिका की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आखिर नशाबन्दी क्यों असफल हो गई है? यहाँ उसके लिए कौन जिम्मेदार है? जिन लोगों पर इस बात का दायित्व डाला गया कि नशाबन्दी चलेगी कहाँ से? उसके लिए जिम्मेदारी कार्यपालिका पर आती है। इसी जिम्मेदारी के रूप में भीष्म की उपर्युक्त सर्वप्रभुता संपन्न माना है। अगर ऐसा होता तो फिर अत्याचारी राजा वेण को राज्यसिंहासन से हटाकर पृथु को गद्दी पर बिठाने का काम ऋषियों ने न किया होता। ऋषियों के इस कार्य को किसी भी शास्त्र ने, किसी भी इतिहास ने बुरा नहीं कहा, बल्कि अच्छा ही कहा। धर्म की प्रभुता स्वीकार करने पर ही ऋषियों को अधर्मी राजा को हटाने का अधिकार प्राप्त होता है, अन्यथा राजा को हटाना अवैध माना जाता। यदि राजा अपने कर्तव्य का पालन न करे तो राजा को हटाना धर्म है। किन्तु पश्चिम में एक राजा को दूसरे राजा ने संघर्ष करके हटाया या जनता ने उस समय हटाया जब उन्होंने तत्वतः राजपद्धति को अमान्य कर दिया। वहाँ राजा ईश्वर का प्रतिनिधि है और किसी भी परिस्थिति में नहीं हटाया जा सकता।

समाज व्यवस्था में अनेक संस्थायें

राजा या राज्य सर्वोपरि तो है ही नहीं, वह एकमेव संस्था भी नहीं है। समाज की व्यवस्था तथा उसके जीवन का नियमन करने वाली, समाज की व्यवस्था देखने वाली, अनेक संस्थायें हैं। उनका प्रादेशिक और व्यवसायिक दोनों आधारों पर गठन हुआ है। पंचायतें और जनपद सभायें हमारे यहाँ रही है। बड़े-से-बड़े चक्रवर्ती सार्वभौम राजा ने कभी पंचायतों को समाप्त नहीं किया। इसी प्रकार व्यवसायिक संगठन भी रहे हैं। उन्हें भी किसी ने समाप्त नहीं किया, अपितु उनकी स्वायात्तता को स्वीकार किया गया। अपने-अपने क्षेत्र में उन्होंने नियम बनाये। जाति की पंचायतें, श्रेणियाँ, निगम, ग्राम पंचायतें, जनपद सभायें आदि संस्थायें नियम बनाती थीं। राज्य का काम यही था कि इन नियमों का पालन होता है कि नहीं, यह देखें। राज्य ने कभी उनके मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया। इस प्रकार हमारे यहाँ राज्य तो जीवन के थोड़े से हिस्से को ही छूता था। इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में भी अनेक संस्थाएं जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से हमें आज कुछ अर्थव्यवस्था का भी विचार करना पड़ेगा। अर्थव्यवस्था कैसी हो? हमें ऐसी व्यवस्था चाहिए जो हमारे मानवत्व को विकसित कर सके, हमारे मानव्य को समाप्त न करें, उसके ऊपर प्रतिकूल प्रभाव न डाले और जिसके द्वारा हम मानव से ऊँचे उठकर देवत्व को प्राप्त कर सकें। क्योंकि हमारे यहाँ पर मानव जीवन का पूर्ण विकास उसका देवत्व के रूप में आविर्भाव ही माना गया। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अर्थव्यवस्था की क्या मर्यादायें होनी चाहिए, इसका विचार करें।

अर्थव्यवस्था की मर्यादायें

लोगों के भरणपोषण के लिए, जीवन के विकास के लिए और राष्ट्र की धारणा और विकास के लिए जिन मौलिक साधनों की आवश्यकता होती है उनका उत्पादन अर्थव्यवस्था का लक्ष्य होना चाहिए। न्यूनतम मर्यादा के बाद और अधिक समृद्धि एवं सुख के लिए अर्थोत्पादन करना चाहिए या नहीं, यह स्वाभाविक प्रश्न पैदा होता है। पश्चिम का अर्थशास्त्र तो इच्छाओं को बराबर समझता है। इस विषय में उसकी कोई अधिकतम मर्यादा नहीं है। सामान्यतयाः तो पहले इच्छा होती है और फिर उसकी पूर्ति के साधन जुटाये जाते है, उसके उपयोग हो इसके लिए लोगों में इच्छा पैदा की जाती है। बाजार के लिए माल पैदा करने के स्थान पर पैदा किये हुए के लिए बाजार ढूँढना, न मिले तो बाजार पैदा करना आज की अर्थनीति का प्रमुख अंग बन गया है। आरंभ में उत्पादन उपभोग का अनुसरण

करता था, अब उपभोग उत्पादन का अनुचर है।

हम चाय का ही उदाहरण लें। चाय की माँग थी, इसलिए चाय नहीं पैदा की गई। किन्तु चाय पैदा की गई और इसलिए हमें पीना सिखाई गई। हम जब चाय पीते हैं। वह हमारे जीवन का एक अंग बन गई है। इसी प्रकार हम आजकल वनस्पति तेल का उपभोग कर रहे हैं। क्या हमने कभी इसकी माँग की थी? वास्तव में वनस्पति पैदा किया गया और फिर हमें उसका उपभोग सिखाया गया। जो कुछ पैदा होता है यदि उसका उपभोग न करें तो वहाँ पर मन्दी आ जावेगी। 1930-32 की मन्दी का जमाना हमें याद होगा। उस समय माल तो था पर उसकी खपत नहीं थी, इसलिए धड़ाधड़ कारखाने बन्द होते जाते थे। दिवाले निकल रहे थे तथा बेकारी बढ़ती जाती थी। इसलिए आज महत्व की वस्तु यह हो गई है कि पैदा माल की खपत हो जाय।

अंग्रेजी के साप्ताहिक ऑर्गनाइजर के संपादक कुछ वर्ष पूर्व अमरीका गये थे। वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने एक मजेदार घटना बताई। वहाँ आलू छीलने का चाकू बनाने का एक कारखाना है। उस कारखाने का उत्पादन इतना बढ़ गया कि लोगों की आवश्यकता से ज्यादा पैदा करने लगा। अतः प्रश्न पैदा हुआ कि लोग चाकू अधिक संख्या में खरीदें इसका कोई तरीका ढूंढा जाए। कारखाने के सेल्समेनों की बैठक हुई। एक सुझाव रखा गया कि यदि चाकू के बेंटे का रंग आलू के छिलके जैसा ही बनाया जाय तो आलू छीलने क बाद छिलके के साथ चाकू को भी कूड़े की टोकरी में फेंकने की संभावना बढ़ जाएगी। इस प्रकार माल की अधिक खपत होगी। चाकू को आकर्षक बनाने के लिए सुन्दर पैकिंग की भी व्यवस्था की गई। अब यह अर्थव्यवस्था उपभोग प्रधान न होकर विनाशोन्मुख है। पुराना फेंको और नया खरीदों। नया खरीदने की चाह उपभोक्ता में पैदा करना, मांग पूरी करना नहीं, मांग पैदा करना यही आज अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हो गया है।

प्रकृति की मर्यादा न भूलें

किन्तु उत्पादन का संबंध प्राकृतिक साधनों से भी है। यदि अन्धाधुन्ध उत्पादन बढ़ाते गए तो ये प्राकृतिक साधन कब तक साथ देंगे? कुछ लोग यह कहकर समाधान कर देते हैं कि यदि एक प्रकार के साधन समाप्त हो गए तो दूसरी प्रकार की वस्तुओं की खोज हो जाएगी। नये इंस्टीट्यूट ढूँढे जा सकते हैं। उनके इस तर्क में निहित बल को स्वीकार करने के बाद भी यह कहना पड़ेगा कि प्रकृति की सम्पदा अपार होने पर भी उसकी मर्यादा है। यदि बड़ी तेजी के साथ आवश्यक रूप से हम उसका खर्च करते गए तो एक दिन हमें पछताना पड़ेगा।

प्रकृति से उच्छृंखलता

प्रकृति की संपदा की मर्यादा की चिन्ता न भी करें तो कम से कम इतना तो हमें मानना ही पड़ेगा कि प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं के बीच एक परस्परावलंबी सबन्ध हैं। एक-दूसरे के सहारे खड़ी तीन लकड़ियों में से यदि हम एक की स्थिति में परिवर्तन कर दें तो शेष दो अपने आप गिर जाएंगी। आज की अर्थव्यवस्था और उत्पादन की पद्धति इस सामंजस्य को बड़ी तेजी से बिगाड़ती जा रही है। परिणामतः जहाँ एक ओर हम नये-नये प्रश्न हमारी संपूर्ण सभ्यता और मानवता को समाप्त करने के लिए पैदा होते जा रहे है। हम प्रकृति से उतना तथा इस प्रकार लें कि वह उस कमी को स्वयं पुनः पूरित कर ले। पेड़ से फल लेने में उसकी हानि नहीं होती, लाभ होता है। पर भूमि से अधिक फसल लेने के लोभ में हम ऐसे उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं जिनसे कुछ दिनों के बाद उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो जाती है। आज अमरीका मे लाखों एकड़ भूमि इस प्रकार की खेती के कारण ऊसर हो चुकी है। यह विनाशलीला कब तक चलती रहेगी?

कारखानेदार मशीन आदि के लिए घिसाई-निधि की व्यवस्था करता है। परन्तु प्रकृति के इस कारखाने के लिए हम किसी भी घिसाई निधि की चिन्ता न करें, यह कैसे हो सकता है, इस दृष्टि से विचार किया जाए तो कहना होगा कि हमारी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य अमर्यादा उपभोग नहीं अपितु संयमित उपभोग होना चाहिए। सोद्देश्य, सुखी, विकासमान जीवन के लिए जिन भौतिक साधनों की आवश्यकता है वे अवश्य ही प्राप्त होने चाहिए। भगवान की सृष्टि का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उतनी व्यवस्था उसने की है। किन्तु जब हम यह समझ कर कि भगवान ने मनुष्य को केवल उपभोग प्रवण प्राणी बनाया है और उसके लिए अन्धाधुन्ध उपभोग के लिए ही अपनी संपूर्ण शक्ति खर्च करें, तो यह ठीक नहीं। इंजिन को चलाने के लिए कोयला चाहिए। किन्तु कोयला खाने के लिए इंजिन नहीं बनाया गया।

प्रत्युत हमारा प्रयत्न तो यही रहता है कि कम से कम ईंधन से ज्यादा से ज्यादा शक्ति कैसे पैदा हो। यह बचत का दृष्टिकोण है। मानव जीवन के उद्देश्य का विचार करके हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वह न्यूनतम ईंधन से अधिकतम गति के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकें। यह अर्थव्यवस्था माननी होगी। यह मानव के एक पहलू का विचार न कर उसके पूर्ण जीवन का तथा अन्तिम उद्देश्य का विचार करेगी। यह संहारात्मक न होकर सृजनात्मक होगी। यह प्रकृति के शोषण पर निर्भर न रहकर उसके पोषण पर निर्भर रहेगी। शोषण नहीं, दोहन हमारा आधार होना चाहिए था। प्रकृति का स्तन्य हमारे लिए जीवनदायी हो, यही व्यवस्था करनी चाहिए।

पश्चिम के घातक आर्थिक नारे

अर्थव्यवस्था का यह मानवी उद्देश्य रहा तो आर्थिक प्रश्नों की ओर देखने की हमारी दृष्टि बदल जायेगी। पश्चिम की अर्थव्यवस्था में, वह पूंजीवादी हो या समाजवादी, मूल्य को अत्यन्त महत्व का एवं केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। उसके चारों ओर ही संपूर्ण आर्थिक विचार चक्कर लगाता रहता है। एक नैयायिक की दृष्टि से मूल्य सबन्धी विश्लेषण का चाहे जो महत्व हो किन्तु उसके आधार पर जो जीवनदर्शन बने हैं वे बहुत ही अधूरे, अमानवीय एवं कुछ अंशों में नीति-विहीन भी हैं। एक उदाहरण लें। आजकल का नारा लगाया जाता है कमाने वाला खाएगा। सामान्यतया यह नारा कम्यूनिस्ट लगाते हैं, किन्तु पूंजीवादी भी इस नारे के मूल में निहित सिद्धान्त से असहमत नहीं। यदि दोनों में झगड़ा है तो इसी बात का कि कौन कितना कमाता है। पूंजीवादी साहस और पूँजी को महत्व देते हैं और इसलिए खाने में उनका प्रमुख भाग रहा तो उसे वे उचित ही मानते हैं। दूसरी ओर कम्यूनिस्ट श्रम को ही निर्माण मानते हैं, इसलिए वे श्रमिक को ही खाने का अधिकार देते हैं। ये दोनों ही विचार ठीक नहीं हैं। वास्तव में तो हमारा नारा होना चाहिए 'कमाने वाला खिलायेगा' तथा जन्मा सो खायेगा। खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है। कमाने की पात्रता शिक्षा से आती है। समाज में जो कमाते नहीं वे भी खाते हैं। बच्चे, बूढ़े, रोगी, अपाहिज सबकी चिन्ता समाज को करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज इस कर्तव्य का निर्वाह करता है। मानव की सामाजिकता और संस्कृति का मापदण्ड इस कर्तव्य के निर्वाह की तत्परता ही है। इस कर्तव्य के निर्वाह की क्षमता पैदा करना ही अर्थव्यवस्था का काम है। अर्थशास्त्र इस कर्तव्य की प्रेरणा का विचार नहीं कर पाता। काम तो मनुष्य अपने इस कर्तव्य के निर्वाह के लिए करता है, अन्यथा जिनकी भूख मिट गई है वे काम ही नहीं करेंगे।

न्यूनतम स्तर

मानव के नाते भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी अर्थव्यवस्था का न्यूनतम स्तर है। रोटी, कपड़ा और मकान मोटे रूप में इन आवश्यकताओं की अभिव्यंजना करते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति को समाज के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए सक्षम बनाना भी समाज का आधारभूत दायित्व है। और किसी भी प्रकार के अस्वास्थ्य की दशा में व्यक्ति को स्वस्थ्य बनाने की व्यवस्था करना तथा उसके निर्वाह की व्यवस्था करना भी समाज का काम है। इतना कम से कम जिस राज्य में हो वही धर्मराज्य है, नहीं तो अधर्म राज्य है। ▪

- प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने प्रदेशव्यापी हर घर तिरंगा अभियान का शुभारम्भ किया।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 78 वें स्वतंत्रता दिवस पर भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में ध्वजारोहण किया।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तिरंगा यात्रा में शामिल हुए।

- प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी हर घर तिरंगा अभियान के तहत युवाओं से संवाद कर तिरंगा यात्रा में शामिल हुए।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को आध्यात्मिक गुरू श्री श्री रविशंकर जी ने स्मृति-चिन्ह भेंट किया।

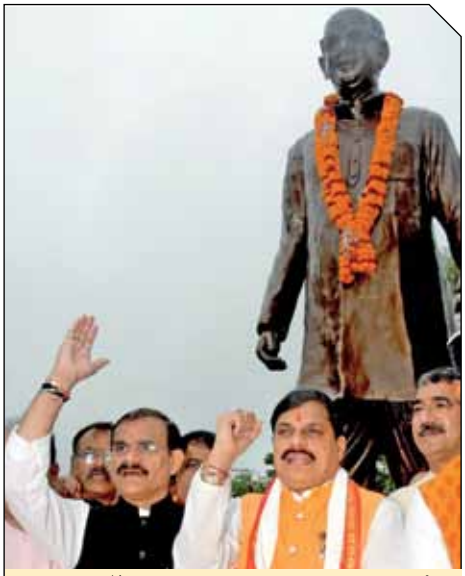

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने श्रद्धेय श्री कुशाभाऊ ठाकरे जी की जन्म जयंती पर माल्यार्पण किया।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा उज्जैन में भगवान श्री महाकालेश्वर जी की सवारी में शामिल हुए।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को रक्षाबंधन उत्सव कार्यक्रम में लाड़ली बहनों ने राखी भेंट की।

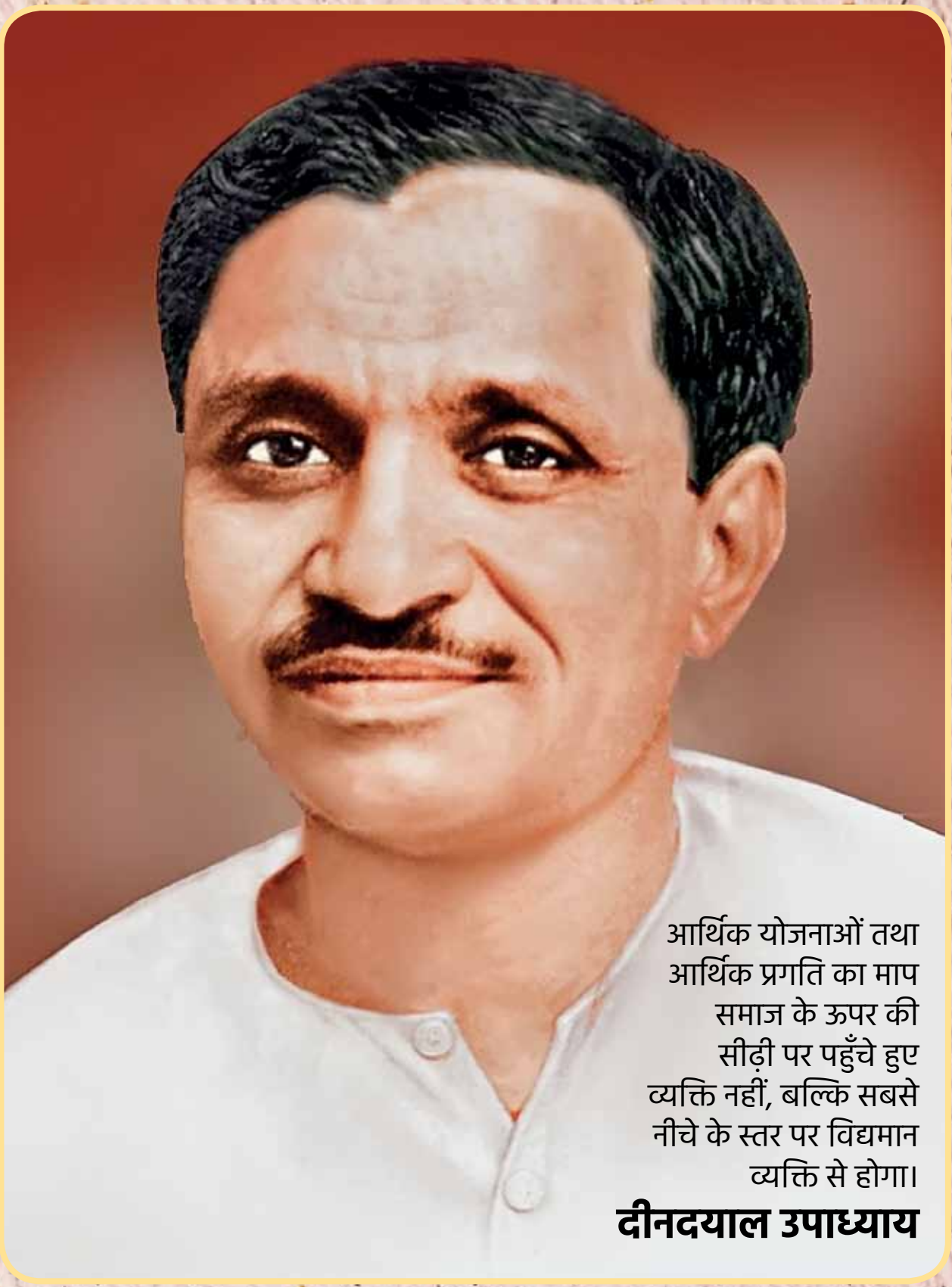

आर्थिक योजनाओं तथा
आर्थिक प्रगति का माप
समाज के ऊपर की
सीढ़ी पर पहुँचे हुए
व्यक्ति नहीं, बल्कि सबसे
नीचे के स्तर पर विद्यमान
व्यक्ति से होगा।

दीनदयाल उपाध्याय